⊛ वन्देमातरम् ⊛

देहरादून और गढ़वाल

के

राजनैतिक आंन्दोलन

का

इतिहास

१९१८--१९३१

सम्पादकः—

श्री नरदेव शास्त्री

१००० प्रति] संवत् १९८८ वि० [मूल्य ।=)

बहुत वर्षों से विचार था कि इस प्रकार का एक छोटा सा देहरादून--गढ़वाल का वृत्तान्त छपाया जाय। पब्लिक जीवन की व्यग्रता, समयाभाव आदि के कारण इधर ध्यान न दे सके। दूसरी बात यह थी कि हम यही सोचते रह गये कि खास देहरे के ही कोई कार्यकर्त्ता इस काम को करें तो अच्छा होगा। हम नहीं कह सकते कि देहरे के कार्यकर्त्ताओं में कभी किसी को इस विषय का ध्यान आया था नहीं--आया होगा तो वह ध्यान कृति रूप में प्रत्यक्ष दिखायी नहीं पड़ा यह निःसंशय बात है। कभी मित्रगोष्ठी में बैठ कर इस बात की चर्चा चलायी तो श्री पं० अमरनाथ वैद्य तथा श्री हुल्लासवर्मा आदि ने कहा कि मैं ही इस कार्य को करूं। 'जो कुण्डा खोले वही तेल को जाय' वाली कहावत चरितार्थ होगयी। लेखक का यह जीवन भर का अनुभव है कि जब तक किसी कार्य का समय नहीं आता तब तक उसमें सिद्धि नहीं होती या नहीं मिलती। फैजाबाद जेल में इस विषय में हमको स्वयं ही स्फूर्त्ति उत्पन्न होगयी और वहीं हमने अपनी स्मृति के बल पर बहुत कुछ लिख डाला वहाँ विशेष सामग्री हमारे पास तो थी ही नहीं, तथापि जो कुछ स्मृति देवी ने कहा नोट करते गये जब बाहर आये और महाविद्यालय ज्वालापुर में थोड़ा सा विश्राम मिला तब इस को ठीक ठाक करके उसको यह वर्त्तमान

स्वरूप मिला। कतिपय देहरा निवासियों ने जब इसकी कच्ची प्रति देखी तब बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होंने इस कार्य में प्रोत्साहन ही दिया सब बातें देहरादून तथा गढ़वाल की पूर्वापर स्थिति पर विचार करके लिखी गयी हैं--सब घटनाओं पर विशेष दृष्टि डाली गयी है—यदि किसी घटना का उल्लेख रहगया हो, व्यक्ति विशेष का नाम रहगया हो, किसी व्यक्ति विशेष के विषय में अच्छी तरह जितना चाहिये, जैसा चाहिये न लिखा गया हो तो उसके लिये मैं ही दोषी हूं किन्तु यह अच्छी तरह जान लेना चाहिये कि मैंने अपनी समझ में कोई भी प्रयत्न शेष नहीं रक्खा है। बहुत टटोल की है,--मैंने इसमें एक भी ऐसी बात नहीं आने दी है जिससे किसी का हृदय दूखे--सब बातों को केवल गुणों पर दृष्टि देकर लिखा गया है। जब पाठक पढ़ेंगे इस बात को स्वयं ही अनुभव करेंगे-- भविष्य में, समीप भविष्य में, यदि कोई महानुभाव देहरादून ज़िले के राजनैतिक आन्दोलन के विषय में लिखने बैठे तो उसको इस छोटे से संक्षिप्त विवरण से सहायता ही मिलेगी। इस संक्षिप्त इतिहास के अन्तमें १९२१ के असहयोग आन्दोलन में अथवा १९३० के आन्दोलनमें जिनजिन व्यक्तियों ने भाग लिया, कष्ट सहे, सहयोग दिया, सहायता दी सब का उल्लेख किया है। देहरा ज़िले की जनता हमारे इस अल्प--स्वल्प प्रयत्न से सन्तुष्ट होगी तो हम अपने पुरुषार्थ को सफल समझेंगे-- कहाँ हमारी जन्मभूमि हैदराबाद दक्षिण अर्थात् भाग्य नगर और कहाँ तपस्वियों की भूमि द्रोणगिरि जहाँ कि हमारे भाग्य की परीक्षा हुई और जनता की सेवा करने का अपूर्व सौभाग्य मिला इसी को कहते हैं कर्मगति, यही है ईश्वरीय लीला, यही है अदृष्ट

चक ! एक बात याद रखने योग्य है, जिस प्रकार भी बातें याद आती गयीं, उसी प्रकार लिखी गयी हैं और यह भी इस पुस्तक की मनोरञ्जकता को बढ़ाने वाली हैं। जहाँ जिस का जिक्र आया है वहीं उसके विषय की सब बातें लिखदी गयी हैं इससे वाचकों को भी सुभीता रहेगा। पुलिस हमारे पीछे कई बार कांग्रेस के दफ्तर पर छापा मार कर कागज़ात लेगयी इसलिये बहुतसे हालात ठीक रीति से नहीं लिखे जासके, तथापि पीछे के डिक्टेटरों से जो अब छूट कर आये हैं, पूछ पूछ कर समस्त घटनाओं का संग्रह किया गया है। यदि जनताने इस भाग का आदर किया तो द्वितीय भाग में रही-सही घटनाओं का भी समावेश किया गया है।

नरदेव शास्त्री।



देहरादून ।

प्रथम ज़िला कानफरन्स

(१९२०)

स्वागताध्यक्ष—श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

प्रधान मंत्री—श्री स्वा० विचारानन्द जी सरस्वती

कानफरन्स के सभापति—श्री पं० जवाहरलाल नेहरु

	श्री ला० लाजपतराय जी
किन विशिष्ट	श्री बैरिस्टर आसफअली
व्यक्तियों ने	श्री डा० सैफउद्दीन किचलू
भाग लिया	श्री १०८ जगद्गुरु शंकराचार्य भारती कृष्णतीर्थ
	श्री १०८ भास्कर तीर्थ
	श्री स्टोक्स-कोटगढ़-शिमला
	श्री पं० भक्तीराम जी शर्मा भिवानी
	श्रीमती सत्यवती देवी लखनौ
	श्री ला० गोवर्द्धनदास लाहोर
	श्री बा० मेलाराम जी वकील सहारनपुर

द्वितीय ज़िला कानफरन्स

(१९२१)

देहरादून में १४४ लग गयी थी इसलिये यह कानफरन्स डोईवाला में हुई ।

सभापति—श्री पं० हरकरणनाथ मिश्र
विशिष्ट पुरुष—श्री प्रोफेसर राममूर्ति

सब पुरुषार्थ किया देहरे वालों ने, और यह पुरुषार्थ जा फला डोईवाला में । उस समय के जि० कांग्रेस कमेटी के मंत्री श्री लाला कुन्दनलाल जी भोगपुरी का पुरुषार्थ शतमुख से प्रशंसनीय है । देहरेवाले सब चाहते थे कि कानफरन्स देहरे की तिलक भूमि में ही हो । बड़ी भारी तैयारी की गयी थी । तिलकभूमि में एक ही रौनक आरही थी किन्तु भाग्य की बात देखिये डोईवाला में कानफरन्स हुई । सभापति पण्डित हरकरणनाथ जी की ऐसी ही इच्छा और आज्ञा हुई । क्यों कि देहरे में १४४ धारा का प्रयोग हो चुका था । देहरे वाले धारा को तोड़ने के पक्ष में थे, पर सभापति की आज्ञा नहीं हुई ।

तृतीय जिला कानफरन्स
(सन् १९२९)

ता० १६-१७-१८ अक्टूबर को हुई—बड़ी परेड में ही पण्डाल बनाया गया था महात्मागांधी इसी अवसर पर पधारे थे ।

स्वागताध्यक्ष—श्री पं० द्वारकानाथ रैना ।
स्वागत मन्त्री—श्री महावीर त्यागी ।
कानफरन्स के सभापति—श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ।
विशिष्ट पुरुष—श्री महात्मा गांधी ।
श्रीमती कस्तूर बा०

श्री पं० जवाहरलाल नेहरु।
श्री प्रो० कृपलानी।
श्री बा० श्रीप्रकाश जी (प्रधान मन्त्री प्रां० कां० कं०)
श्री पं० गौरीशंकर मिश्र।
श्री मौलाना ज़फ़रअली।
श्री बा० मेलाराम वकील सहारनपुर।
श्री देवीदास गान्धी जी।

हम कानफरन्स के बीस दिन पूर्व कश्मीर से आ गये थे क्योंकि महात्माजी आने वाले थे और देहरादून, सहारनपुर आदि के उनके प्रोग्राम को ठीक उतरवा देने का भार हम पर और ठा० मनजीतसिंह पर था। मैं देवबन्द तक महात्मा जी के साथ साथ रहा और वहां से उनकी अनुज्ञा से देहरे लौटा।

महात्मा कहां कहां गये।

डाण्डीपुर—श्रद्धानन्द अनाथ वनिताश्रम की आधारशिला रक्खी (ता० १६ प्रातः ८ बजे) नरदेव शास्त्री ने अनाथालय का वृतान्त सुनाया और प्रिंसिपल लक्ष्मणप्रसाद जी ने महात्मा जी से आधार शिला रखने की प्रार्थना की।

कानफरन्स पण्डाल—देहरा वालियों, गढ़वाल सभा, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, म्युनिसिपल बोर्ड, साधु सभा, सिंघ सभा आदि की ओर से मानपत्र दिये गये थैलियां भेंट की गयीं। (ता० १६ प्रातः ८॥—१०॥)

सायं इसी पण्डाल में स्त्रियों की बृहती सभा हुई। मानपत्र व थैली दी गयी। पाँच सहस्र देवियां उपस्थित थीं।

सायं ५॥ बजे डी० ए० वी० कालेज के प्रिंसिपल लक्ष्मणप्रसाद जी ने संक्षेप से डी० ए० वी० स्कूल का हाल सुनाया। कालेज और मिशन स्कूल की ओर से मानपत्र तथा थैली प्रदान समारोह हुआ। यहाँ आनेके पूर्व रिस्पना में चौ० बिहारीलाल जी ने रैदास सभा का ठाट करा रक्खा था वहां भी महात्मा जी गये थे। डी० ए० वी० से सीधे पण्डाल में पहुँचे थे। महात्माजी के ठहराने आदि का प्रबन्ध चौ० बिहारीलाल के सुपुर्द था। बड़ी परेड के पास ही लाला लक्ष्मीचन्द की कोठी में ठहराये गये थे।

ता० १७ प्रात: ७॥ बजे—कन्यागुरुकुल में चर्खा दंगल रहा।

८॥ बजे—राजपुर बाजार मोटरड्राइवर असोसियेशन की ओर से मानपत्र दियागया थैली अर्पण कीगयी।

९ बजे—शक्तिआश्रम में गुरुकुल के छोटे छोटे ब्रह्मचारियों की ओर से हजारों गज सूत भेंट किया गया।

११॥ बजे—मसूरी पहुँचे, वहां से जलूस निकाला गया। स्वागताध्यक्ष थे श्री पं० राधावल्लभजी खण्डूड़ी। स्वयं सेवकों का प्रबन्ध घनानन्द हाई स्कूल के हेड मास्टर पं० गंगादत्त पाण्डे के सुपुर्द था

और अन्य प्रबन्ध था श्री रामचन्द्र गुप्त हिमालय क्लब वालों के हाथों में। पहले पहले महात्मा जी यहीं ठहराये गये फिर चण्डाल गढ वाली कोठी में रहे। एक सप्ताह यहीं विश्राम हुआ।

ता० २० को हिमालय क्लब में विराट सभा हुई। बोर्ड की ओर से मानपत्र व थैली अर्पण की गयी।

ता० २१ को म्युनिसिपल हौल में देवियों की सभा हुई।

ता० २५ को महात्मा जी सहारनपुर पधारे।

देहरादून से आपको ६०००) और मसूरी से ७०००) मिला। देहरे में आर्यसमाज ५०) डी० ए० वी० ५००) रैदास सभा १००) गढ़वाली सभा १००), देहरे के ठेकेदारान १५००), जनता की ओर से १०००) स्त्री समाज से ७००), मोटर ड्राइवर असोसियेशन राजपुर १०१) कन्यागुरुकुल ३००), शक्ति आश्रम में गु० कु० कांगड़ी की ओर से ३००) इत्यादि मोटी रकमें हैं। शेष भिक्षा द्वारा

देहरा प्रान्तीय कानफरन्स
(१६२२)

बड़े परेड में हुई थी। नरदेवशास्त्री और ठा० मनजीतसिंह आगरे की प्रान्तीय कानफरन्स में जाकर निमन्त्रण दे आये थे।

स्वागताध्यक्ष—श्री ठा० चन्दनसिंह जी।

प्रधान मन्त्री—श्री ठा० मनजीतसिंह जी।

कानफरन्स के सभापति—पण्डित श्री मोतीलाल नेहरु।

विशिष्ट पुरुष—श्री विट्ठलभाई पटेल।

श्री देशबन्धु चित्तरञ्जनदास।

श्री रंगाअय्यर।

श्री पं० गौरीशंकर मिश्र।

श्री शिवप्रसाद गुप्त।

श्री पं० हरकरननाथ मिश्र।

कानफरन्स ऐसी शान की हुई कि लोग गया की बड़ी कानफरन्स को भी भूल गये। शिवाजीदल ने बहुत हाथ बटाया-यहीं फिर काउन्सिल प्रवेश और भीतर जाकर अड़ंगा नीति धारण करने का सूत्रपात हुआ। बड़ी परेड का स्थान दिलाने में श्री पण्डित आनन्दनारायण जी और बा० उग्रसेन जी का बड़ा हाथ था। प्रचार करने में श्री अमरनाथ वैद्यशास्त्री, श्री चौ० बिहारी-लाल, श्री हुलासवर्मा, श्री डा० कीर्तिदेव आदि ने बहुत परिश्रम किया। श्री बा० ज्योतिप्रसाद जी रईस कोषाध्यक्ष थे। १९२५ ई० में जब श्री पं० जवाहरलाल जी यहां पधारे थे तब कानफरन्स करके शेष बचा हुआ रुपया लगभग एक सहस्र श्री पं० जी को दे दिया गया जो प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के पास जमा हुआ।

विशिष्ट पुरुष जो समय समय पर देहरे पधारे

महात्मा गांधी—जब अफ्रीका से ताजे आये थे तब देहरे पहुँचे थे आर्य समाज में व्याख्यान हुआ था।

हकीम अजमलखाँ—प्रायः आते ही रहे।

डा० अनसारी—फेरे लगाते रहे।

श्री आजाद सुभानी—१९२० में एक बार आये, तिलक भूमि में व्याख्यान हुआ था।

श्री टण्डन जी—१९२४ ई० साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के नाते और दूसरी बार १९२९ ई० में तृतीय जिला कानफरन्स के मौके पर सभापति होकर आये थे।

श्री पं० जवाहरलाल—१९२० ई० में सभापति प्रथम कानफरन्स १९२१ ई० में द्वितीय कानफरन्स में

१९२५ " एक बार देहरे के झगड़े मिटाने आये थे १९२९ ई० में महात्मा जी के साथ।

१९३० ई० में नैनी जेल से छूटकर राष्ट्रपति की हैसियत से

प्रोफसर राममूर्त्ति—१९२१ डोईवाला कानफरन्स में।

स्वा० सत्यदेव जी—जब भी भारत में रहते हैं, स्वास्थ्य सुधार के लिये देहरे अवश्य आते हैं और जागृति में साथ देते रहते हैं। जब पहले पहले अमरीका से लौटे थे तो कुछ मास तक डी० ए० वी० स्कूल के हेडमास्टर रहे।

श्री देवीदास गान्धी—महात्मा जी के साथ १९२१ और १९२२ प्रान्तीय राजनैतिक कानफरन्स में।

मौलाना मुहम्मदअली } खिलाफत की धूम धाम में।
मौलाना शौकतअली } धामावाला मसजिद के पीछे व्याख्यान हुये सभापति स्वामी सत्यदेव जी थे।

श्री पण्डित मोतीलाल नेहरु—कई बार १९२२, १९३० आदि

श्री मार्डीजोन्स (मेम्बर मजदूर दल) कानपुर कांग्रेस के पूर्व पधारे थे। आप को देहरा वासियों की ओर से मानपत्र दिया गया था जिसपर १९ पुरुषों के हस्ताक्षर थे। श्री बा० चण्डीप्रसाद-

सिंह जी वकील अध्यक्ष थे। आप की वक्तृता बहुत मार्मिक थी, श्री नरदेव शास्त्री, डा० मनजीतसिंह, स्वा० विचारानन्द जी, श्री महावीर त्यागी आदि के भाषण हुये। श्री पं० द्वारकानाथ रैना की कविता ने श्रोतृवृन्द के दिल हिलादिये।

मौलाना जफरअली—१९२९ तृतीय राजनैतिक कानफरन्स में

श्री डा० किचलू—एक बार १९२० की प्रथम कानफरन्स में

श्री बैरिस्टर आसफअली--एक बार १९२० की „ „

श्री स्टोक्स— एक बार १९२० „ „ „

श्री नेकीराम शर्मा—१९२०, १९२१, आदि में कईबार

श्री ला० लाजपतराय—१९२०, १९२७, आदि में कई बार

श्री स्वा० श्रद्धानन्द जी—१९२६ में मृत्यु से कुछ मास पूर्व देहरे में पधारे थे। आर्यसमाज के अनाथालय की स्थापना आपने ही की जो कि अब उन्हीं के नाम पर है।

श्री पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल श्री शिवप्रसाद गुप्त स्व० श्री पण्डित माधवराव सप्रे स्व० श्री पं० रामजीलाल शर्मा श्री पं० लक्ष्मीधर बाजपेयी श्री पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी श्री पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी श्री पं० पद्मसिंह शर्मा	हिन्दी साहित्य सम्मेलन १९२४ में श्री पं० माधवराव सप्रे की अध्यक्षता में हुआ, स्वागताध्यक्ष थे श्री नरदेवशास्त्री

श्री पं० कृष्णकान्त मालवीय हिन्दूसभा के महोत्सव पर

श्री विट्ठलभाई पटेल—केवल एक बार १९२२ में

श्री देशबन्धुदास—केवल बार १९२२ में
श्री सत्यमूर्त्ति—केवल एक १९२७ में
श्री शकलातवाला—जब भारत आये थे, तब पधारे थे श्री ठा० चन्दनसिंह जी की कोठी पर व्याख्यान भी हुआ था।
श्री बद्रीमहाराज एम० एल० सी० फीजी—जब भारत में आये थे तब पधारे थे इनकी जन्मभूमि बद्रीनारायण के पास है। ४२ वर्ष में भारत आये टिहरीवालों की कोठी में आप को गढ़वालियों ने मानपत्र दिया था। आर्यसमाज के उत्सव में भी आप का व्याख्यान हुआ था।
प्रोफेसर कृपलानी—महात्मा जी के साथ १९२९
प्रिन्सिपल वसवानी—शक्ति आश्रम के कारण प्रायः देहरे पधारते रहते हैं।
श्री महामना मालवीय जी—बा० ज्योतिःस्वरूप जी और लाला बलदेवसिंह जी के ज़माने में बहुत बार आये और ठहरे मोहिनाभवन में एकबार आर्यसमाज में व्याख्यान भी दिया।
डा० मूञ्जे—१९२९ में आये थे, कार्य विशेष से एक ही दिन ठहरे पं० अमरनाथ जी के उद्योग से आर्य समाज में आपका प्राभावशाली व्याख्यान हुआ।
श्री गौरीशंकर मिश्र—कई बार आये।
श्री रंगा अय्यर—१९२२ राजनैलिक कानफरन्स।
श्री पं० हरकरणनाथ मिश्र—१९२१,२२ राजनैतिक कानफरन्स।
श्री डा० केशवदेव—शक्ति आश्रम के कारण राजपुर में अपने आश्रम में रहते थे और देहरे के कार्य में भाग लेते थे।
श्री गोविन्दमालवीय—अक्टूबर १९३० के प्रथमसप्ताह में श्री पं०

मोतीलाल जी से मसूरी में मिलने आये थे।

श्री जे० एम० सेनगुप्ता—अक्टूबर १९३० के प्रथम सप्ताह में श्री पं० मोतीलाल जी से मसूरी में मिलने आये थे।

श्री नारीमैन (बम्बई) " " "

श्री मंजूरअली सोख्ता—अक्टूबर १९३०

श्री बद्रीदत्त पाण्डे अल्मोड़ा—कई बार।

श्री बा० मोहनलाल सकसेना—(लखनौ) कई बार।

देहरादून ।

(संक्षिप्तपरिचय)

देहरादून का ज़िला दो पर्वत मालाओं के मध्य में स्थित है इसी लिये इसको दून कहते हैं। दक्षिण में शिवालक रेंज और उत्तर और पूर्व में हिमालय की उपत्यका है—पश्चिम में यमुना और पूर्व में गंगाभागीरथी बह रही है। इतनी बड़ी दून शायद ही पृथ्वीतल में और कहीं होगी—प्राचीन समय में उत्तर पूर्व स्थित पर्वत माला का नाम द्रोणगिरि था—कहते हैं कि यह इसलिये पड़ा था कि द्रोणाचार्य ने यहां तपस्या की थी। मेघ दूत में कालिदास ने 'द्रोणगिरि' के आश्रमों का उल्लेख किया है। दून कहते हैं दो पर्वतमालाओं के मध्यवर्ती समतल प्रदेश को। यदि इस के चारों ओर पर्वतमाला ही होती तो फिर देहरादून भी छोटा-सा कश्मीर ही बन जाता। जिसने कश्मीर को देखा है वह यदि मसूरी के उच्च शिखर पर खड़ा होकर नीचे दृष्टिपात करे तो उसको दून के देखने में भी वैसा ही आनन्द आयगा जैसा कि कश्मीर में।

आज देहरे की बड़ी शान है, क्यों कि नौकर शाही का प्रधान गढ़ है। तोपखाना, फौज, फौरेस्ट कौलेज, फौरेस्ट म्युजियम, मिलिटरी कौलेज, रेलवे स्कूल, सर्वे डिपार्टमेन्ट आदि आदि प्रधान कार्यालय यहीं है। समीप भविष्य में नौकरशाही की दृष्टि से इसको और भी महत्व मिलने वाला है। हवाई जहाज

का अड्डा भी यहीं बनने को है । दून की प्राकृतिक बनावट ही ऐसी है कि सुरक्षितता की दृष्टि से यह बहुत मार्के का स्थान है। देहली में भारत सरकार का केन्द्र है इसीलिये भी देहरादून का गौरव प्रति-दिन बढ़ता जाता है। संसार भर के लोग यहां आते जाते हैं क्यों कि सरकार के प्रधान अड्डे यहीं हैं। भारत के कोनेकोने से यहां लोग हवाखाने आते रहते हैं—क्यों कि मसूरी पर्वत की रानी यहीं दून में रहती है—इस जिले की आबादी केवल ढाई लक्ष की, पर्वतमय देश, नदी—नाले और घने वनों से आपूरित, बस्तियां बिखरी हुईं, बसने वाले विभिन्न जाति के। देहरे में शीत ऋतु और वर्षा ऋतु इन दो ऋतुओं में कोई कार्य नहीं होसकता—हां वसन्त और ग्रीष्म ऋतु में कार्य होसकता है। इस दृष्टि से देहरे में तथा जिले में जो राजनैतिक जागृति, आन्दोलन और काम हुआ, वह किसी प्रकार कम नहीं है।

किसी समय यह दून की वैली टिहरी राज्यान्तर्गत थी किन्तु जब गुरखाओं ने इस राज्यपर आक्रमण किया तब ब्रिटिशों की सहायता के बदले में यह दून टिहरी के हाथों से निकल गयी—मसूरी अब भी राजा की कहलायी जाती है पर बस नाम ही नाम है। नरेन्द्रशाह ने अपने समय में नरेन्द्रनगर (ऋषीकेश से ६ मील ऊपर) बसाया है और यदि आज यहां टिहरी का राज होता तो नरेन्द्र नगर ही दून का प्रधान नगर समझा जाता।

साठ वर्ष पूर्व इस देहरादून नगर की आबादी केवल तेरह सौ थी और कुल तीन पक्के मकान थे। एक पक्का मकान राजपुर में भी था। अब तो देहरे की आबादी है कोई पचास सहस्र। और जाति की तरह अंगरेज भी यहां बस गये हैं। इन्होंने

काश्मीर की तरह दून को भी उद्यान भूमि बनाना चाहा था पर सफल न होसका। यदि ये सफल होते तो आज फल फूल की दृष्टि से दून भी छोटी काश्मीर होती। अंगरेजों ने इस दून को रेशिम का केन्द्र बनाना चाहा इस में भी वे असफल रहे। शराब का अड्डा बनाना चाहा, उसमें भी फेल हुये। दूनमें पर्वत और देश का विचित्र संश्लेशण और सम्मेलन है। जौनसार भाग तो एक दम निराला और पाण्डवों की बात याद दिलाने वाला है। मसूरी की स्थिति ने दून की स्थिति पर गहरा प्रभाव डाल रक्खा है। सीजन के दिनों में यहां दस दस सहस्र अंगरेज रहते और हो जाता है। सब देश के लोग, राव, राजा, महाराजा, नव्वाब सभी लोग आमोद प्रमोद के हेतु, भोगविलास के हेतु यहां छः छः मास पड़े रहते हैं—यह तो यह खास देहरादून की सिविल लाइन भी भोगविलासियों का प्रधान केन्द्र बना जारहा है--बाग--बगीचे बंगले आदि की वृद्धि होती जाती है—एक ओर यह दशा दूसरी ओर नौकरशाही का ज़ोर इस प्रकार दून दुहरी कैंची में कटा जारहा है,—

धार्मिक दृष्टि से देहरादून उत्तराखण्ड का द्वार है--सिक्खों की दृष्टि से गुरुरामराय की गद्दी यहीं है—आर्यसमाज ने भी बहुत उन्नति की है। समस्त ज़िले में तेरह सौ आर्य हैं। डी॰ ए॰ वी॰ कौलेज के कारण उत्तराखण्ड भरके विद्यार्थी इस जगह शिक्षा पाकर चले जाते हैं।

उन्नीस सौ इक्कीस में यहाँ मुट्ठी भर कांग्रेस कार्यकर्त्ता थे। १९३० में बहुत परिवर्त्तन हुआ। अबतो नवयुवकों में काफी

जागृति होगयी है। १९२१ में केवल ९—१० जेल में गयेथे १९३० में दो—सौ ढ़ाई सौ भेंट हो चुके। अब तो नवयुवक ही अपने ज़िले का काम चला सकते हैं। यहां देवियों में भी शिक्षा का खूब प्रचार है, अब तो ७—८ ग्रेजुयट देवियां भी देखने को मिलरही हैं—देवियों ने भी आन्दोलन में खूब भाग लिया। महादेवी कन्या पाठशाला और राजपुर का कन्यागुरुकुल स्त्री शिक्षा के केन्द्र हैं। यहां का वकील मण्डल धीमा है किन्तु १९३० के इस आन्दोलन में पर्याप्त सहायता करता रहा है। वैसे बुद्धिमत्ता में यह वकील मण्डल किसी ज़िले के वकील मण्डल से कम नहीं है। १९२१ में मुसलमान खिलाफत के कारण कुछ सहायता भी देते रहते थे, कांग्रेस में आते—जाते और काम करते थे किन्तु १९३०में इन्होंने हमारे जिले के आन्दोलन में बहुतकम योग दिया। बेचारे बब्बनवेग, निसारअहमद और अबदुलरहमान को धन्यवाद कि वह साथ तो रहे।

देहरे का महत्व इस दृष्टि से भी है कि यहां के आन्दोलन का प्रभाव टिहरी राज्य, गढ़वाल, जुब्बल, जौनसार, नाहन, तक चलाजाता है। अर्थात् यहां के काम का प्रभाव इधर के उत्तराखण्ड के समस्त भागों में पड़ता है। जिन्हों ने यहां राजनैतिक आन्दोलन के लिये झाड़-झखण्ड को काटकर भूमि साफ की, जिन्हों ने इस भूमि में बीज-वपन किया, जिन्होंने सींचा, जिन्होंने अंकुरों की रक्षा की, जिन्होंने अङ्कुरों को वृक्ष रूप में पाया, वे सब धन्यवाद के पात्र हैं—वे सचमुच सौभाग्यशाली होंगे अथवा कहलाये जायेंगे जो इस वृक्ष के सुमधुर फल के रसास्वादन कर सकेंगे और फल अड़ोसी-पड़ोसियों को भी दे सकेंगे।

जौनसार-बावर।

जौनसार बावर देहरादून जिले का उत्तरीय प्रधान भाग है—पर्वतीय प्रदेश है—नदी, नाले, ओगल, जंगल, खड्, ढांगों से परिपूर्ण है। यहां की रीति-नीति सर्वथा विचित्र है। लोग धार्मिक श्रद्धालु तथा भगवान् रामचन्द्र के भक्त हैं जिन को कि वे रघुनाथ जी के नाम से स्मरण करते हैं। इस प्रदेश की आबादी है कोई साठ सहस्र की यहां घर घर तकली और चर्खा चलता रहता है। प्रायः इस काम को बूढ़ी बूढ़े करते हैं जो कि बाहर की खेती बाड़ी या जंगल का काम करने में असमर्थ हो जाते हैं। ये लोग अपने हाथ का काता बुना कपड़ा पहनते हैं। विलायती कपड़ा शुरू चला था किन्तु अब बन्द होगया और उसका स्थान स्वदेशी कपड़ा तथा खादी ने लेलिया है। दूसरी विशेष यह बात है कि समस्त जौनसार बावर में एक भी शराब का अड्डा नहीं है। हां एक चकरौते में है क्यों कि वह फौजी गोरों का अड्डा है। जौनसार के लोग मद्यव्यसनी नहीं हैं। हां त्यौहारों के मौकों पर ये लोग घर में ही तैयार करके मौज लूटते हैं। ऐसा करने में उधर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है यहां की पंचायत प्रथा दुनियां से निराली है। जब किसी को कुछ शिकायत होती है तो वह चौकीदार को बुलाकर (चौकीदार लोगों का, न कि सरकार का) उसके द्वारा ग्रामों में खबर करदेता है। खास स्थान पर जब लोग एकत्रित होते हैं तब उपस्थित पञ्च—क्यों कि सभी पञ्च समझे जाते हैं दोनों पक्षों से प्रति पक्ष १=)

वसूल करते हैं और जब फैसला होजाता है तब वह १।।।) की रक़म समान रूप से सब में बांट दी जाती है। कभी कभी एक एक पैसा दो-दो पैसे तक बांट में आते हैं तो भी लोग उस को खुशी से ग्रहण करलेते हैं। जो नहीं लेता वह बुरी दृष्टि से देखा जाता है क्यों कि उस पैसे को लेना आदर और सम्मान की बात समझी जाती है। अब तो एक और नई प्रथा चल पड़ी है वह है 'स्यानों' की। ७—७, १०—१० ग्रामों पर 'स्याना, रहता है वह चार और ग्रामों के व्यक्तियों को बुलाकर फैसला करता है। अब तो यही स्याने नये प्रकार से फैसला करते हैं पर पद्धति वही पुरानी है। जौनसार बावर वाले अपनी पञ्चायतों में फौजदारी मामलों तक का फैसला करते हैं। जहां तक हाथ का कता, बुना कपड़ा पहनने का सम्बन्ध है, जहां तक मद्य निषेध का सम्बन्ध है, अथवा पञ्चायत प्रथा की बात है, देहरे का यह भाग सर्वथा प्रशंसनीय है। नीचे का समतल प्रदेश—अर्थात् पहाड़ों के नीचे का—जमुना और गंगा का मध्यवर्ती समतल भाग जिस को दून कहते हैं वह तो नौकरशाही का अड्डा है तोभी उसमें जो जो काम हुआ वह बहुत अधिक है। जौनसार बावर में लोगों को कुछ कष्ट है तो वह जंगलात के महकमे का। और इसका कष्ट होता ही, क्यों कि फौरेस्ट डिपार्टमेण्ट को अपनी ही चिन्ता रहती है। लोगों के सुख दुःख की उसको क्या परवाह। परन्तु यह कैसे अनर्थ और अन्याय की बात है कि लोग अपनी ज़िमीदारी के जंगल को भी बेचने नहीं पाते—केवल अपने काम के लिये लकड़ी वगैरे तोड़ सकते हैं। जौनसार के लोग हमसे कहते थे कि हमारा ही जंगल, हमारी ही जिमीदारी और अपनी ज़िमीदारी के जंगल को हम नहीं काट सकते, है

कि नहीं घोर अन्याय। बीच में थोड़े काल के लिये बेचने की इजा़-ज़त मिली भी थी किन्तु अभी इस दिसम्बर मास में जब कलेक्टर मेसन साहब का दौरा हुआ तब आप ने फिर हुक्म निकाला कि कि कोई ज़िमीदार जंगल न बेचने पाये। लोगों में बहुत असन्तोष है—कहीं अन्याय बढ़ता गया तो सत्याग्रह न चल पड़े। अभी हाल की घटना है कि जब उनको खाद् के लिये पत्तियों की जरूरत पड़ी तो आठ मील तक सरकारी जंगल डुंठल कर डाला। यह अच्छा हुआ सरकार चुप रही।

देहरे ज़िले के लोगों को जंगलात की तकलीफें न हों, बढ़ी हुई आबपाशी के कष्ट न हों तो फिर उनका आधा स्वराज्य समझिये। यदि यहां का चाण्डालगढ़ मसूरी और ज़ुलमगढ़ चकरौता ये दो गढ़ न रहें तो फिर इस उत्तराखण्ड के प्रदेश को पूर्ववत् शुद्ध स्वदेशी ही समझिये।

मालकोट—गड्डूड रेंज

जिस प्रकार देहरादून का उत्तरीय भाग जौनसार बावर है। इसी प्रकार पूर्व का पर्वतीय भाग मालकोट गड्डूड कहलाता है। बड़ा सुन्दर प्रदेश है। यहां भी पञ्चायत प्रथा चल पड़ी है—प्रथा नष्ट होते होते रहगयी। स्वदेशी और खद्दर भी चल पड़ा है। भोगपुर—थानों इसी मालकोट गड्डूड़ रेंज की तलाई समझिये। मालकोट में कोई लगभग चालीस ग्राम हैं और गड्डूड़ में भी इतने ही होंगे फिर टिहरीराज्य की हद आजाती है।

टीहरी के रवायां राजपूत

वीर क्षत्रिय जाति के हैं। पिछले दिनों में इन्होंने जंगलात के कष्टों से तंग आकर सत्याग्रह किया था और उसमें वे विजयी हुये। किन्तु पीछे से स्टेट में इन लोगों पर बहुत अत्याचार होने लगे—यतः यह स्टेट का मामला है अतः हम इस विषय में अधिक नहीं लिखेंगे—केवल इतना लिखेंगे कि महाराज साहब को प्रजा के कष्टों का ध्यान रखना चाहिये। सब परिस्थिति को अपनी आंखों देखना चाहिये। केवल राज्य के कर्मचारियों पर भरोसा रखने से काम नहीं चलेगा। सुना है कि इन रवायां राजपूतों के केस की तहकीकात के लिये एक ट्रिब्यूनल बैठने वाला है उसमें वहां की स्थिति पर प्रकाश पड़ेगा ही—पंडित विश्वम्भर दत्त चन्दोला सम्पादक गढ़वाली पर पंडित चक्रधर जी दीवान ने जो मानहानि का अभियोग चलाया है उसमें बहुत सी बातें खुलेंगी इस लिये हम रवायाँ राजपूतों के विषय में कुछ नहीं लिखेंगे।

नरदेव शास्त्री।



देहरादून के साथ गढ़वाल के विषय में भी दो शब्द लिखना आवश्यक है। देहरादून और गढ़वाल का अटूट सबन्ध है। गढ़वाल दो भागों में बिभक्त है, एक टिहरी गढ़वाल, दूसरा ब्रिटिश गढ़वाल। टिहरी गढ़वाल तो देशी राज्य है इसलिये उस के विषय में इतना ही लिखना चाहते हैं कि वहां के रवा राजपूतों ने जंगलात के विरुद्ध सत्याग्रह अन्दोलन करके सुन्दर विजय पायी। पहले १९२१ में इस राज्य में भयंकर बेगार प्रथा थी, लोग त्रस्त थे किन्तु धीरे धीरे उसकी भयङ्करता नष्ट होगयी और उस प्रथा में बहुत सुधार होगया है। श्री महाराज नरेन्द्रशाह विलायत हो आये हैं, शिक्षित हैं और बड़े ही न्यायपरायण। किन्तु समय की गति को देखते अपेक्षित सुधार नहीं हो रहा है। आशा है महाराजा साहब समय की गति को देखकर चलेंगे। हिन्दू संसार केस में टिहरी के बहुत से मामले प्रकट रूप में जनता के सामने आगये हैं और सुधार में बहुत गुंजायिश है। टिहरी के चीफ-जज श्री गंगाप्रसाद एम० ए० न्यायपरायणता के लिये प्रसिद्ध हैं। टिहरी के भूतपूर्व दीवान पं० भवानीदत्त जी के समय में प्रजा जितनी सुखी थी उतनी सुखी थी पं० चक्रधर जी दीवान के समय में प्रतीत नहीं हो रही। टिहरी की राजधानी नरेन्द्रनगर में आ जाने से हम समझते हैं राज्य की परिस्थिति प्रभावान्वित हुये बिना न रह सकेगी। गढ़वाल के प्रसिद्ध मालदार स्वर्गीय श्री पं० घनानन्द जी ने अपने स्व० कनिष्ठ भ्राता श्री चन्द्रवल्लभ

के स्मारक रूप में सव्वालक्ष रुपये देकर चन्द्रवल्लभ ट्रस्ट बना दिया था। उस ट्रस्ट से गढ़वाली छात्र जनों का बहुत उपकार हो रहा है। आपके छोटे भ्राता पं० राधावल्लभ खण्डूड़ी जी ने तीस सहस्र रुपये दान करके मसूरी में म्युनिसिपल स्कूल को घनानन्द म्युनिसिपल-एडेड-हाई स्कूल बनाने में सफलता प्राप्त की है और श्री पं० गंगादत्त पाण्डे एम० ए० जैसे साधु स्वभाव और राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता उसके हेडमास्टर हैं।

ब्रिटिश गढ़वाल की भौगोलिक परिस्थिति देहरे की परिस्थिति से भी विचित्र है। उसमें रेलवे का प्रवेश नहीं, मार्ग दुर्गम छोटी छोटी बस्तियां और वह भी बिखरी हुई, लोग धनहीन किन्तु अत्यन्त बुद्धिमान, परिश्रमी, विद्याव्यसनी हैं। पुराने कार्यकर्ताओं में नाम लेने योग्य कोई है तो श्री पं० तारादत्त गैरोला एम० ए०। आप गढ़वाल की ओर से लेजिस्लेटिव काउन्सिल के मेंबर रहे हैं। इनके पश्चात् श्री मुकुन्दीलाल बैरिस्टर कौन्सिल के मेंबर हुये और डिप्टी प्रेसिडेण्ट भी रहे। आप में राष्ट्रिय स्फूर्त्ति है किन्तु जितना आगे आना चाहिये नहीं आरहे। गढ़वाल की स्थिति सुधारने के लिये आपने कौन्सिल में प्रबल प्रयत्न किया। अब कौन्सिल के मेंबर हैं श्री ठा० नारायणसिंह जी।

इस १९३० के आन्दोलन में गढ़वाल खूब जागा। ऐसा जगा कि गढ़वाल अमर होगया। भारत के राजनैतिक आन्दोलन में 'गढ़वाल डे' भी स्थान पा गया। गढ़वाल के लगभग डेढ सौ भाई जेल कष्ट सह रहे हैं। गढ़वाल से बाहर रहने वाले गढ़वाली भाई भी २५० की संख्या में जेल गये—गढ़वाल शूर-वीर पुरुषों की खान है। गढ़वाल शिक्षित है, बुद्धिमान है, इसमें अच्छे

अच्छे कवि हैं, विद्वान हैं। धार्मिक दृष्टि से तो पूछिये ही नहीं—समस्त भारत का पूज्य है। गढ़वाल के स्व० पं० गिरजादत्त नैथानी सम्पादक गढ़वाली तथा पुरुषार्थ की सेवाओं को कोई कैसे भुला सकता है। श्री पं० विश्वम्भरदत्त चन्दोला सम्पादक गढ़वाली की नीति नरम है। श्री कृपाराम मिश्र मनहर के 'गढ़देश' ने गढ़वाल में अच्छी जागृति उत्पन्न की। श्री पं० महेशानन्द थपल्याल, श्री प्रतापसिंह नेगी आदि का पुरुषार्थ, श्री पण्डित अनसुयाप्रासाद बहुगुणा आदि का काम प्रशंसनीय रहा। गढ़वाल में केवल संगठन की कमी रही है। पेशावर में निःशस्त्र जनता पर गोली झाड़ने से इनकार करने के कारण बारह गढ़वाली कारावास की कठोर यातनाओं को सह रहे हैं। भारतीय प्रथा तो यही रही है, अनन्तकाल से यही प्रथा चली आरही है कि, निःशस्त्रों पर शस्त्र प्रहार नहीं करना, स्त्रियों और बच्चों पर हाथ नहीं उठाना, भागते हुओं पर प्रहार नहीं करना। यह कोई धर्म युद्ध नहीं चल रहा है। हम अधिक नहीं लिखना चाहते, केवल राजतरङ्गिणी के शब्दों में यह कहना चाहते हैं कि:—

प्रजा पीडन संतापाद्।
समुद्भूतो हुताशनः॥
राज्ञः कुलं, श्रियः, प्राणा—
नादग्ध्वा, विनिवर्त्तते॥

प्रजा पीडन से उत्पन्न हुआ-हुआ अग्नि राजा के कुल, उस की श्री और उसके प्राणों को बिना जला डाले नहीं लौटती या नहीं बुझती।

अहिंसात्मक असहयोग ।

(१९२१)

कौन कौन जेल में गये ।

१—श्री नरदेव शास्त्री वेद तीर्थ १५ मास कठोर कारावास
२—श्री कृष्णदत्त वैद्य (डोईवाला) २॥ वर्ष कारावास ।
३—श्री हुलासवर्मा ६ मास कारावास ।
४—श्री पं० व्रजलाल फरासी (डांडाखौंड) ६ मास
५—श्री ठा० मानसिंह जी (जाखन) ६ मास
६—श्री पं० ईश्वरानन्द (भोगपुर) ९ मास
७—श्री सेठ बलभद्रदास (भोगपुर) ९ मास
८— श्री ठा० चन्दनसिंह (भोगपुर) ९ मास
९—श्री पं० हरिशंकर (पुस्तक विक्रेता झण्डा मुहल्ला) ३ मास
१०—श्री स्वा० विचारानन्द जी फीरोजपुर पंजाब से पहिले ही १ वर्ष के लिये भेजे जाचुके थे ।
११—श्री मुहम्मद सद्दीक म्युनिसिपल कमिश्नर मसूरी

नं०—६-७-८ श्री ईश्वरानन्द जी, श्री सेठ बलभद्रदास व चन्दनसिंह बहकाये में आकर माफी माँग बैठे और छूट गये ।

नं०—२ कृष्णदत्त वैद्य क्षमा मांगकर छूटे किन्तु इस १९३० के संग्राम में उन्होंने फिर जेल में जाकर अपना प्रायश्चित कर डाला ।

तिलक इन्स्टीटयूट—(मसूरी)

मसूरी में बहुत वर्ष पूर्व तिलक स्मारक में तिलक इन्स्टीट्यूट नामक संस्था खुली थी। स्वर्गीय डालीवाल बैरिस्टर उसके प्रधान थे। श्री रायसाहब डा० रामनारायण, श्री लाला श्रीचन्द जी, श्री ठा० मनजीतसिंह जी, श्री बा० बुलाकीराम जी बैरिस्टर आदि कमेटी के सदस्य थे। इस इन्स्टीट्यूट के अधीन तिलक लायब्रेरी थी। इस संस्था पर कई सहस्र रुपये का कर्जा होगया था। इसलिये मकान बेचकर कर्जा चुकाया गया। अब रिंकथियेटर के पास तिलक लायब्रेरी उसी प्रकार चल रही है। जनता को इस लायब्रेरी से बहुत लाभ पहुँचता रहता है और संचालकगण दक्षता से अपना कार्य कर रहे हैं—सीजन के दिनों में यहाँ बड़ी रौनक रहती है और यह एक सब के मिलने का केन्द्र होजाता है।

तिलक भवन (चूहड़पुर)

चूहड़पुर वाले भाइयों के परम पुरुषार्थ से यहां सोलह सहस्र की लागत का एक तिलक भवन बना था। जिस में प्रधान पुरुषार्थ था श्री पं० मुकुन्दलाल शर्मा का—इस भवन की एक कमेटी है।

———o———

कांग्रेस कार्य कर्त्ताओं की नामावली।

१९२० से १९३०

चूहड़पुर—श्री पं० मुकुन्दराम शर्मा श्री पं० देवदत्त शर्मा श्री हरद्वारीलाल

सहिया—पं० गोविन्दराम जी, श्री मास्टर रत्नसिंह जी
विधौली—श्री पं० सुन्दरलाल जी ।
कांडली—श्री पं० रंगीलाल जी आदि
कौलागढ़—श्री पं० नारायणदत्त डंगवाल
श्री पं० ब्रजलाल जी
फुकसनी—श्री पं० रामनारायण जी
मकी—श्री पं० रामशरण जी
श्री पं० हरनारायण शर्मा (स्वर्गीय)
मसूरी—श्री बा० किशोरीलाल जी, श्री मुहम्मद सद्दीक
सीताराम
रामपुर—श्री ला० रामनारायण, श्री दर्शनलाल
डांडांलखौंड—श्री पं० भीमदत्त जी, श्री पं० ब्रजलाल श्री
चिरंजीलाल
जाखन—श्री ठा० मानसिंह, श्री पं० महानन्द जी ओझा
पौंधा—ला० ब्रजलाल, पं० गोविन्दराम वैद्य
मालदेवता—श्री ठा० हरनामसिंह जी, ठा० लालसिंह
द्वारा—श्री ठा० उत्तमसिंह
रायपुर—श्री पं० प्यारेलाल वैद्य, पं० कुसुम्भरी जी
भूजरोंवाली—श्री पं० सोहनलाल, श्री पं० महानन्द
आठ नं० प्लैण्ट—श्री हरस्वरूप, श्री खड्गबहादुरसिंह आदि
धर्मपुर—श्री चौ० कलीराम जी
डोईवाला—श्री ज्वालाप्रसाद जी, श्री ईश्वरानन्दजी, श्री
कृष्णदत्त जी
राणीपोखरी—पं० ब्रह्मदत्त शर्मा
थानों—ठा० मोहरसिंह, पं० परेवाराम जी

भोगपुर—श्री ठा० कुन्दनलाल, श्री पं० ज्योतिःस्वरूप, श्री पं० जमुनादत्त, श्री ठा० हरिसिंह नेगी पं० ईश्वरानन्द आदि

बागी—श्री राजेन्द्र (बारह वर्ष का बालक श्री पं० लक्ष्मीदत्त जोशी का पुत्र)

ऋषीकेश—स्वा० गोविन्दानन्द, स्वा० केवलानन्द स्वामी सदानन्द

बरकोट—श्री गुणानन्द जी, श्री सूरतसिंह जी

अजबपुर—ठा० घनश्यामसिंह, जयरामसिंह, श्री मानकसिंह जी श्री महावीर त्यागी, श्रीमती शर्मदा त्यागिनी आदि

बद्रीपुर—ठा० प्रतापसिंह आदि ।

हर्रावाला—पं० बद्रीप्रसाद शर्मा

हाथीबड़कला—पं० अनन्तराम शर्मा

रिसपना—श्री फखरुद्दीन फारुखी तथा उनका भ्रातृ मण्डल

कांवली—पं० सोमेश्वरानन्द वैद्य

जौनसार लखवाड़—श्री सेवकसिंह जी आदि १९२१ बाद फिर भाग नहीं लिया ।

देहरादून ।

ठा० मनजीतसिंह, पं० अमरनाथ वैद्य, श्री हुलासवर्मा लाला चण्डीप्रसाद जी, श्री स्वा० विचारानन्द सरस्वती जी, श्री महावीर त्यागी, श्रीमती शर्मदादेवी, श्री रामस्वरूप नवकोटी, श्री सोमेन्द्रमोहन मुकर्जी, श्री सरदार लक्ष्मणसिंह, श्री फखरुद्दीन

फारुखी, श्री मुश्ताक अहमद, श्री सरदार हीरासिंह, बा० बुला-कीराम जी बैरिस्टर, श्री चौ० बिहारीलाल, श्री नारायणदास जी, लाला ऊधोराम जी, श्री डा० मित्रसेन जी, श्री दक्खनबेग श्री हंसराज कक्कड़,—पं० द्वारकानाथ रैना, बा० खुर्शेदीलाल पं० नरदेवशास्त्री, पं० नित्यानन्द पाण्डेय, डा० प्रतापसिंह, लाला गुरुप्रसाद रईस, चौ० कुन्दनलाल जी आदि ।

* ॐ तत्सत *

॥ वन्देमातरम् ॥

भूतं भव्यं भविष्यञ्च,
सर्वं भूतेषु भारत ।
तेषां तत्त्वानि जानामि,
ततो न विमना ह्यहम् ॥
उप क्रमानहं वेद,
पुनरेव फलोदयान् ।
लोके फलानि चित्राणि,
ततो न विमना ह्यहम् ॥

[शान्तिपर्व २९२ समङ्ग नारद संवाद]

नारद ने समङ्ग नामक राजा से पूछा कि तुम सदा आनन्दोल्लास में रहते, तुम्हारे चेहरे पर कभी भी मुरझाहट अथवा उदासीनता नहीं दिखायी देती, यह क्या बात है, इसका कारण क्या है, तुम इतने प्रसन्न कैसे रहते हो ?

समङ्ग ने उत्तर दिया कि मैं सब प्राणियों की भूत, वर्त्तमान और भविष्य गति को जानता हूं, उनके तत्व को समझता हूं इसीलिये उदास नहीं रहता । मैं कर्मों के उपक्रमों अर्थात् प्रारम्भों को उनके फलोदयों को और लोक में विचित्र फलों को जानता हूं इसीलिये उदास नहीं रहता—

न मे निन्दा प्रशंसाभ्यां,

ह्रासवृद्धी भविष्यतः।

[जैगीषव्य]

जैगीषव्य नामक प्रसिद्ध योगी कह गये हैं कि कोई मेरी निन्दा करे तो मेरा कुछ घटता नहीं और प्रशंसा करे तो मेरा कुछ बढ़ता नहीं—निन्दा करो चाहे प्रशंसा मैं तो दोनों दशा में प्रसन्न रहता हूं—



* ॐ तत्सत् *

वन्देमातरम्

देहरादून-गढ़वाल।

देहरादून जिले में राजनैतिक आन्दोलन के श्री गणेश करने वाले व्यक्ति का नाम है श्री बाबू ज्योतिःस्वरूप । आप वैसे तो जलालाबाद ज़िले मेरठ के निवासी थे किन्तु देहरादून में बड़ी ही गरीबी की दशा में आये थे। वे हम से मुस्करा कर कहा करते थे कि मैं देहरादून में एक लोटा और डोरी लेकर घुसा था, जब तक पास लोटा और डोरी रहेगी तब तक तो घाटे में रहेंगे नहीं, बाकी चाहे सब चला जाय। इन्होंने अपनी विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता, परिश्रम, विद्याव्यासङ्ग, मधुरता आदि गुणों से अपनी स्थिति को इतना ऊँचा किया था कि आप की वजह से देहरादून पहले पहले प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ—वैसे तो रईस कहलाने वाले देहरे में कम नहीं थे—इनकी प्रसिद्धि केवल रईसी ठाठ के कारण थी—पीछे से तो बाबू जी भी रईसों में गिने जाने लगे थे क्यों कि डोईवाला आप का ही होगया था, हरद्वार में खड़खड़ी ग्राम में आपका बहुत बड़ा बाग और कोठी थी—आप वकील भी प्रथम श्रेणी के थे—जनता तो आपसे प्यार करती ही थी, किन्तु सरकार भी आप को आदर देने लगी थी, आप बहुत वर्षों तक औनरेरी मैजिस्ट्रेट रहे। देहरादून में बाहर से जो राजनैतिक वा अन्य प्रसिद्ध पुरुष आते थे वे या तो

बाबू जी के अतिथि रहते थे या स्व० श्री ला० बलदेवसिंह जी के अतिथि होते थे। ला० बलदेवसिंह वैसे तो राजनैतिक कार्यों में कोई भाग प्रकट रूप से नहीं लेते थे तथापि आन्दोलन से डरते भी नहीं थे लोकोपयोगी समस्त कार्यों में आप धन द्वारा सहायता पहुँचाते रहते थे। आप के कारण ही आपका मोहिनी भवन—जो आज दुरवस्था में पड़ा हुआ है —भारतवर्ष में इतना प्रसिद्ध था। उनके पीछे ला० अनिरुद्ध कुमार जी के हाथों में भी इस मोहिनीभवन में कोई अतिथि ठहर सकता था किन्तु सेठ लक्ष्मीचन्द जी के हाथों में जाकर मोहिनी भवन की शोचनीय दशा होगयी—उनके स्वर्गवास के पश्चात भी उन के पुत्र ने इधर सुधार की ओर ध्यान नहीं दिया। मकानों की दुरुस्ती और स्वच्छता होजाय और पूर्व की भान्ति बाहर के अतिथियों के ठहरने का प्रबन्ध होजाय तो मोहिनी भवन का नाम चिरस्थायी होसकता है नहीं तो इस भवन का नाम मिटा-सा जाता है। सेठ लक्ष्मीचन्द जी अपने ज़माने में रुपया तो कमागये, चुपके चुपके सभा सोसाइटियों में दान भी देगये किन्तु किसी भी संस्था को सुदृढ़ नहीं बनागये उनका अनाथालय अनाथ दशा में है, उनका लक्ष्मी थियेटर ऐसे बेढंगे तरीक़े का बनाहुआ है कि शायद ही कोई पब्लिक का काम निकल सके। उनका विचार था कि महादेवी कन्या पाठशाला को लगभग छब्बीस सहस्र रुपया देकर उसकी स्थिति को सुदृढ़ बनादी जाय किन्तु वह अपनी इच्छा को कार्यरूप में परिणत न करसके। विचित्र विचार और विचित्र पद्धति के रईस थे। स्वर्गीय रईसों में ला० हरप्रसाद रईस देहरे के राजनैतिक आन्दोलन में बराबर भाग

लेते रहे। हां तो हम बाबू ज्योतिःस्वरूप जी की बात कह रहे थे—ठा० पूर्णसिंह नेगी द्वारा बहुत बड़ा—तीन लाख की ज़ायदाद का—दान कराकर डी०ए०वी० स्कूल को मेरठ से उठा कर यहां देहरे में लाना आपका ही काम था, आपके प्रधानत्व और प्रबन्धकत्व में ही डी० ए० वी० स्कूल पनपा—अब तो उनके पीछे प्रिन्सिपल लक्ष्मणप्रसाद के दृढ अध्यवसाय से डी० ए० वी० स्कूल कौलेज में परिणत होगया है—और देहरे की एक प्रसिद्ध संस्था है जिस में भारतवर्ष भर के—दूर दूर के—छात्र आकर रहते और अ-आ-इ-ई से ले कर एफ० ए० तक की शिक्षा प्राप्त कर के चले जाते हैं—इस स्कूल और कौलेज के छात्रों ने देहरे के प्रत्येक आन्दोलन में—चाहे वह समाजिक हो, चाहे साहित्यिक, चाहे राजनैतिक पूर्ण योग दिया है—प्रिन्सिपल लक्ष्मणप्रसाद की नीति प्रशंसनीय और जनता व सरकार दोनों को प्रसन्न रखने वाली रहीहै—डी०ए० वी कौलेज को सरकारी सहायता मिलती है इसी लिये ऐसी नीति रखनी पड़ रही है। श्री बाबू जी की स्मारक दूसरी संस्था है जो उनकी धर्मपत्नी श्रीमती महादेवी के नाम पर है—उसका नाम है महादेवी कन्या पाठशाला—यह संस्था भी सरकार की सहायता लेती है—इस संस्था में उन्नति की बहुत कुछ गुंजायिश है पर संचालक गण उदार नीति वर्त्तें तब वह होसकता है। बाबू जी ने अपने मृत्यु पत्र में इस संस्था के लिये इतनी ज़ायदाद छोड़ी है जिससे १००-१२५) रु० की मासिक आय होजाय। समझ में नहीं आता कि बाबू जी ने इस संस्था के नाम इतनी थोड़ी ज़ायदाद क्यों छोड़ी। वैसे तो बाबू जी पचासों सोसाइटियों के प्रधान उपप्रधान थे। देहरा आर्य समाज के

वर्षों प्रधान थे—आर्यसमाज का भव्य भवन इनके गुरु स्वा० महानन्द के उद्योग से बना था। डी०ए०वी० स्कूल तथा मैनेजिंग कमेटी के आप सर्वस्व थे ही। महादेवी कन्या पाठशाला आपके तथा आपकी धर्मपरायणा धर्मपत्नी के परिश्रम का फल है। ज्वालापुर (हरद्वार) की प्रसिद्ध संस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के आप प्रतिष्ठित सदस्य, मुख्याधिष्ठाता तथा वर्षों प्रधान रहचुके थे। हिन्दू महासभा के भी संचालक रहे,—कटार-पुर केस में आपने वह उद्योग किया जिसको लोग अब तक याद कररहे हैं—गढ़वाल दुर्भिक्ष निवारणि सभा का संचालन भी आपके हाथों में रहा था। बाबू जी में एक दोष था, वह यह कि वे अपने पास वाले आदमी पर अधिक विश्वास कर लेते थे जिससे वे बार बार धोका खाते थे, पीछे पछताते थे। इसीलिये लोग उनको 'खुशामद पसंद' कहा करते थे।

जब कांगड़ी का गुरुकुल पहले पहले पंजाब से हरद्वार आने को हुआ था तब यही तज़वीज़ थी कि बाबू जी की खड़खड़ी वाली कोठी में श्रीगणेश किया जाय—किन्तु पीछे से कांगड़ी ग्राम मिलगया था इसलिये वह बात रह गयी। हमारा इनका पहला परिचय कनखल में १९२० ओळाय का है जब कि यह कनखल में भारामल के दरवाज़े में श्री १०८ स्वा० शुद्धबोध तीर्थ जी महाराज (उस समय के श्री पं० गंगादत्त शास्त्री) से यह शिकायत करने के लिये पधारे थे कि 'मुझ से पहले कहा गया था कि खड़खड़ी में मेरी कोठी मे गुरुकुल रहेगा, अब जगह बदल रहे हैं और मुझ से पूछा तक नहीं'—इत्यादि। बाबू जी १९१६ की लखनौ कांग्रेस के साथ होने वाली औल-इण्डिया

सोशल-कानफरन्स के सभापति थे आपका भाषण बहुत लम्बा, किन्तु धार्मिक था।

आपके ही ज़माने में पंजाब से श्री बा० बुलाकीराम जी शास्त्री बैरिस्टर देहरे में आकर वकालत करने लगे थे--आप भी राजनैतिक अन्दोलन के अग्रणी थे इनके विषय में आगे च ल कर कहेंगे। सब आन्दोलनों में बाबू जी का हाथ बटाने वाले व्यक्ति का नाम पं० देवरत्न शर्मा है जो कि आज कल अखिलभारतीय हिन्दू महा सभा के मन्त्री हैं—श्री बाबू जी ने एक प्रेस भी खुल वाया था। किन्तु वह बहुत काल तक चल न सका—उस समय चौ० बुलास वर्मा उस प्रेस के मैनेजर थे। कोई इन्हें जानता भी न था—महाविद्यालय ज्वालापुर को छोड़कर आप देहरे में आकर बस गये थे। अब तो आप देहरे के प्रसिद्ध कांग्रेस मैन हैं, दो बार बड़े घर गये हैं।

बाबू ज्योतिःस्वरूप जी का राजनैतिक क्षेत्र में सबसे प्रथम तब नाम आया जब कि देहरे में रोलटएक्ट और रोलट बिल के विरुद्ध सभा करने के लिये कोई स्थान नहीं मिलता था। तब आपने आगे आकर सभा करने के लिये अपना ज्योतिसदन दिया और वहां बड़े जोर की मीटिंग हुई। जिसमें श्री बाबू जी, बाबू बुलाकीराम जी, पं० देवरत्न जी, श्री बालकृष्ण कौल लिबर-ल दल के, इनके व्याख्यान हुये।

श्री राजा महेन्द्रप्रताप वृन्दावन को छोड़कर देहरे में ही विराजने लगे थे और युरुप जाने के दिन तक आपका सम्बन्ध बराबर देहरे से रहा—आप वैसे सभासोसाइटियों के अधिवेशनों

और उत्सवों में भाग नहीं लेते थे किन्तु आपके तेजस्वी साप्ताहिक पत्र (निर्बल सेवक) ने निर्बलों में वह स्फूर्ति उत्पन्न की जो भुलायी नहीं जासकती।

श्री बुलाकीराम बैरिस्टर तथा पण्डित देवरत्न का नाम ऊपर आही चुका है, जहां बाबू ज्योतिःस्वरूप जी सरकार और प्रजा दोनों को साधने में लगे रहते थे वहां हमारे बा० बुलाकीराम जी, पं० देवरत्न जी दोनों राजनैतिक आँदोलन में खुलमखुला भाग लेते रहे बाबू जी के 'कौस्मौपोलिटियन' नामक अंग्रेजी साप्ताहिक ने तो देहरे को चमका दिया था और इसकी कटीली, निर्भीक टिप्पणियों से सरकारी अधिकारी वर्ग घबरा उठते थे। यह साप्ताहिक कोई ३॥ वर्ष चला फिर बन्द होगया, उस समय इस पत्र के मैनेजर थे स्व० श्री पं० केशोराम जी–बड़े ही निर्भीक पुरुष थे।

बाबू बुलाकीराम जी हाफजाबाद जि० गुजराँवाला पंजाब के निवासी हैं और आजकल आप यहीं अपनी वृद्धावस्था को व्यतीत कर रहे हैं किन्तु वहां भी प्रत्येक राजनैतिक आन्दोलन में बराबर भाग लेते रहते हैं। बाबू जी के भास्कर प्रेस को अच्छी तरह चला रहे हैं उनके सुपुत्र श्री जङ्गबहादुरसिंह। बाबू जी की अपनी कचहरी की पास वाली कोठी में यह प्रेस है। अब तो देहरे के प्रसिद्ध कविराज पं० अमरनाथ जी वैद्य शास्त्री का वनस्पति भवन और बनस्पति औषधालय इसके पास क्या बाबू जी की कोठी से ही सटा हुआ है। बाबू जी ने राजपुर में एक सत्याग्रह आश्रम खोला था किन्तु वह चल न सका। बाबू जी के साथ राजनैतिक आन्दोलन में साथ देने वालों में पुराने कांग्रेस मैन का नाम है श्री बा० नारायणदास (काश्मीर मर्चेन्ट राजपुर

रोड़ देहरादून) आप तब भी चुपचाप काम करते थे और अब भी चुपचाप काम करते रहते हैं और सब कार्यों में सहायक रहते हैं बाबू जी ने १९२०--२१ के आन्दोलन में वकालात छोड़ी थी किन्तु गरीबों के मामले में सदैव से बिना कौड़ी लिये पैरवी करते रहते थे, चाहे रात के बारह बजे कोई इनका दरवाज़ा खटखटाये ये उसी समय उठ खड़े होते और जहां कहो चलदेते थे—ग़रीब किसान मज़दूर अब तक इनको याद करते हैं।

महात्मा गान्धी का असहयोग आन्दोलन जब प्रारम्भ हुआ तब श्री बाबू जी, डा० चन्द्रसिंह जी, पण्डित देवरत्न जी, आदि के उद्योग से एक राष्ट्रीय स्कूल खोला गया था। पहले यह स्कूल डा० चन्द्रसिंह जी की कोठी में ही रहा और आपही इसके हेडमास्टर रहे—पीछे से जब हम देहरे पहुँचे तब हमने देखा कि स्कूल के विषय में श्री डा० साहब, बाबू जी और पण्डित देवरत्न जी के मध्य में कुछ अनबन सी होरही है। श्री डा० साहब ने, हमारे समझाने पर स्कूल कांग्रेस कमेटी के सुपुर्द कर दिया और इसके नये हेडमास्टर बने श्री डा० मनजीतसिंह जी बी० ए० (स्व० डा० मित्रजीतसिंह जी के सुपुत्र) जो कि असहयोग आन्दोलन में हिन्दूविश्वविद्यालय की एम० ए० क्लास छोड़ आये थे इनके अधिकार में स्कूल की बहुत उन्नत दशा थी। पीछे १९२२ में द्रव्याभाव से और असहयोग आन्दोलन के शिथिल पड़जाने से यह स्कूल टूट गया।

हमारे देहरे पहुँचने के पूर्व की स्थिति का यथार्थ दिग्दर्शन कराने के लिये हमको इतने प्रसङ्ग का संक्षिप्त वर्णन करना पड़ा।

एक आवश्यक बात रह गयी, श्री स्वा० विचारानन्द जी सरस्वती उस समय तिलक महाराज के होमरूलसंघ के प्रचारक थे और १९१६ से ही आपने यहां होमरूल के मेंबर बनाने का काम प्रारम्भ किया था, १९१९ तक आप प्रायः चुप चाप ही काम करते रहे—कभी देहरे में रहते कभी बाहर किन्तु देहरे अधिक रहते थे, देहरा वासियों के उद्योग से यह निश्चय हुआ कि देहरे में राजनैतिक कानफरन्स की जाय श्री ला० कुन्दनलाल गुप्त भोगपुर निवासी और स्वा० जी का इस में पूर्ण उद्योग था श्री स्वा० जी ही स्वागत समिति के प्रधान मन्त्री चुने गये और हम चुने गये स्वागतकारणी समिति के स्वागताध्यक्ष—आगे चलने के पूर्व यह सब कुछ कैसे हुआ, इस विषय में दो शब्द लिखना आवश्यक है।

वैसे तो देहरे जिले से हमारा सम्बन्ध १९०७ से है जब कि हम मोनीकीरेती हृषीकेश में एकान्त सेवन कर रहे थे। फिर हम १९०८ में भोगपुर गये। वहां भोगपुर के ला० शिवचरणदास जी के यहां कुछ काल रहे। उनके मध्यम भ्राता श्री ला० कुन्दनलाल जी (जो १९२० में हमारे जेल जाने के पश्चात जिला कांग्रेस के मन्त्री बने) और स्वा० विचारानन्द जी के प्रधान उद्योग से ही स्वागताध्यक्ष चुने गये। बात याद रखने योग्य है कि हम सन् १९१६ से १९१९ तक भोगपुर ही रहे और बीच बीच में जब देहरे वाले बुलाते थे व्याख्यान दे आते थे। जब हम भोगपुर रहते थे तब हमको इधर समस्त देहरे जिले की स्थिति का पूर्ण अनुभव प्राप्त हुआ था। यद्यपि हम भोगपुर में चुपचाप स्नान-ध्यान, जप-तप, ग्रन्थ लेखन में समय व्यतीत करते थे तथापि हमारे यहां रहने से मालकोट-गढ़ूक रेंज में बड़ी जागृति

हुई। पुलिस इस बात को सहन न कर सकी, हम पर कड़ी नज़र रखने लगी। भोगपुर शारकुबरवाला की एक शराब की दूकान को वहां से सर्वथा हटाने में हमने पूर्ण आन्दोलन किया, उससे तो सरकारी कोप और अधिक बढ़ा। हमारे हलके के दरोग़ा इन्द्रसिंह ने हमको बहुत दिक़ किया, अब क्या था प्रयाग के मुख्य सी० आई० डी० के कार्यालय से सूत्र हिलने लगे फिर भी हम जनता की जागृति का काम करते ही रहे। १९१९ के प्रारम्भ में 'भारतोदय' पत्र के सम्पादनार्थ हमको मुरादाबाद जाना पड़ा। वहीं हमारे पास श्री लाला कुन्दनलाल जी का पत्र मिला कि हम देहरादून राजनैतिक कानफरन्स के स्वागताध्यक्ष चुने गये। हमको आश्चर्य हुआ कि यह सब कुछ हुआ कैसे। पीछे से देहरे जाने पर पता चला कि देहरे के अधिकतर लोगों की संमति से ही यह सब कुछ हुआ। पहले तो पत्र के देखते ही हमारा विचार हुआ कि निषेधपरक उत्तर लिख भेजें किन्तु मित्र जनों के अनुरोध के कारण स्वीकार करना ही पड़ा।

परमात्मा का नाम लेकर और अपने स्व० राजनैतिक गुरु राष्ट्रसूत्रधार लो० तिलक को स्मरण करके हम देहरे के लिये रवाना हुये, वह जनवरी सन् १९२० की बात है तारीख याद नहीं। देहरादून स्टेशन पर आवभगत के लिये बहुत से सज्जन तथा स्वागतसमिति के सदस्य उपस्थित थे। यहीं पहिली बार श्री स्वामी विचारानन्द जी से परिचय हुआ। स्वर्गीय डा० शंकरसहाय जी उस समय स्वयंसेवकों के नायक थे। ठा० मनजीतसिंह जी अभी हिन्दू बिश्वविद्यालय छोड़कर आये थे। श्री बा० बुलाकीराम जी ज़िला कांग्रेस कमेटी के प्रधान थे। श्री पण्डित

देवरत्न जी शायद मन्त्री थे। वैद्य अमरनाथ जी के विषय में यही थोड़ा सा लिखना पर्याप्त होगा—देहरे का शायद ही कोई सार्वजनिक कार्य होता होगा जिसमें आप मनोयोग न देते होंगे। वैसे विशेषतया आर्यसमाज के कार्य में विशेष योग देते थे, तब से अब तक आपकी वही पद्धति चली जाती है इस १९३० के सत्याग्रह आन्दोलन में हम लोगों के जेल जाने के पश्चात् आपने बराबर पांच मास तक पीछे कांग्रेस का कार्य सम्हाले रक्खा। और अब आप कृष्णमन्दिर में विश्राम ले रहे हैं, कुलासवर्मा भी आपके साथ हैं। उस समय वैद्य जी बाबू रूप में रहते थे, आज के वैद्य जी शुद्ध खद्दर वस्त्रधारी सच्चे ब्राह्मण रूप में हैं, वैद्य जी सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे समय में जेल गये जब कि देहरा जेल राजनैतिक कारावासियों से खचाखच भरी हुई है यही नहीं पांच देवियां भी कारावास के कष्टों को झेल रही हैं—श्रीमती शारदा देवी त्यागिनी (गोद में ऊमा को लिये हुये), श्रीमती विष्णुदेवी (श्री त्यागी जी की बहिन, बच्चे के साथ) श्रीमती सरस्वती देवी (कन्यागुरुकुल की अध्यापिका और महाशय छाजूराम की पुत्री) श्रीमती रामलुभाई देवी (श्री राजेन्द्रसिंह सोढी की धर्मपत्नी दो बच्चों के साथ) श्रीमती श्यामादेवी—ये सब देवियां देहरे के नाम को अमर करने वाली हैं।

हां तो फिर स्टेशन से चलिये—स्टेशन से जलूस निकला और हम जाय उतारे पर पहुँचे, जहां कि स्वागतकारिणी का कार्यालय था। हमारे पुराने सहयोगी श्री पं० बालाप्रसाद जी शर्मा (मक्खनपुर जिला मैनपुरी के निवासी) इसी घर में रहते थे। इनसे आगे कार्य में बहुत सहायता मिली, श्री स्वा० विचारा-

नन्द जी ने हमको देहरे की इत्थंभूत परिस्थिति का परिचय करा दिया। हम पहिले ही कह चुके हैं कि उस समय नेशनल स्कूल के प्रबन्धकों में परस्पर कुछ मन मुटाव था। कांग्रेस के अधिकारी स्कूल को कांग्रेस के अधीन रखना चाहते थे और श्री डा० चन्दनसिंह जी स्वतन्त्र रखना चाहते थे। हम डा० साहब की सज्जनता की प्रशंसा करेंगे कि उन्होंने हमारे अनुरोध करने पर स्कूल को कांग्रेस के सुपुर्द कर दिया, इस प्रकार वहां का प्रथम विघ्न दूर हुआ। दूसरा विघ्न यह हुआ कि एक दल (स्वागतसमिति के मेंबरों का) जिनके साथ शहर के रईस, वकील आदि थे यह कहने लग गया था कि, स्वा० विद्यारानन्द जी स्वागत मन्त्री बाहर के, नरदेवशास्त्री बाहर के कमेटी में शहर का कोई प्रमुख अधिकारी नहीं यह अच्छी बात नहीं यह आग भीतर ही भीतर सुलगती रही, फिर घोर रूप धारण कर गयी। स्वागतसमिति के कार्य में विघ्न पड़ने लगा। क्योंकि मतभेद में द्विविधा रहने लगी। स्वा० जी को मैंने समझाया कि कोई चिंता की बात नहीं, जनरल मिटिङ्ग बुला लीजिये और एक तारीख मुकर्रर कीजिये कि अमुक तारीख तक जो मेंबर होंगे वही जनरल मिटिङ्ग में भाग ले सकेंगे। परिणाम यह हुआ कि—और बहुत अच्छा परिणाम हुआ—देहरे के समस्त रईस और वकील जो अब तक दूर बैठ आक्षेप कर रहे थे, सब के सब मेंबर होगये और आगये जनरल मिटिङ्ग में। यद्यपि हमारा बहुमत था तथापि हमने और स्वा० जी ने स्पष्ट कह दिया कि यदि देहरे के लोग स्वयं आगे आवें और कार्य सम्हालें तो अच्छा है। हम भी मदद ही करेंगे। वह जनरल मिटिङ्ग पुराने मिशन स्कूल के बड़े हाल में हुई थी इस में बाबू उग्रसेन जी, बा० चण्डीप्रसादसिंह जी

•० द्वारकानाथ रैना, लाला हरप्रसाद जी, लाला ज्योतिप्रसाद जी लाला शंकरलाल जी, श्री जयन्ती बाबू, ठा० मनजीतसिंह जी, पं० नारायणदत्त डंगवाल, पं० अमरनाथ वैद्य शास्त्री, बा० बुलाकीराम जी, ठा० चन्दनसिंह जी, श्री हुलासवर्मा जी, पं० बालाप्रसाद जी, पं० प्रकाशनारायण जी, आदि आदि सभी सम्मलित थे। ठाकुर चन्दनसिंह जी ने दूसरे दल की ओर से उठकर कहा कि हम नया चुनाव नहीं चाहते, पहले चुने हुये अधिकारी ठीक हैं, हम पूर्ण सहयोग देंगे इसके पश्चात सब त्रिविधा और द्वेष-भाव शान्त हुआ और प्रमात्मा की कृपा से यह दूसरा विघ्न शान्त हुआ। यह बात लिखनी रह गयी कि हमारे आने के पूर्व बा० चन्डीप्रसादसिंह जी वकील देहरे के प्रमुख कांग्रेस कार्य कर्त्ता थे और जनता इनको अपना नेता मानती थी और बा० जी बड़ी लगन से काम करते रहते थे और एक बात का उल्लेख करना परम आवश्यक है। राष्ट्रीय स्कूल का उद्घाट करना हमारे परम मित्र स्वा० सत्यदेव परिव्राजक के हाथों से हुआ था। सुना है उनकी उस समय की वक्तृता बड़ी सारगर्भित थी।

अब कानफरन्स के सभापति पद के लिये दो नाम आये एक पण्डित जवाहरलाल जी का, दूसरा पण्डित नेकीराम जी का। बहुसम्मति से आजकल के राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल जी सभापति चुने गये। उनके चुने जाने का एक विशेष कारण यह हुआ कि जब अफगान दूत यहां आये थे तब वे जिस होटल में—चार्लि-विली होटल—ठहराये गये थे उसी होटल में पण्डित जी पूर्व से ही ठहरे हुये थे। जिले के अफसरों ने ऊपर की सरकार के अनु-रोध से पण्डित जी को चौवीस घन्टों के भीतर मसूरी छोड़ जाने

का हुक्म दिया था और इससे केवल पण्डित जी का नहीं समस्त देहरा जिला का अपमान हुआ था। हमारी स्वागत समिति को इस अपमान के प्रक्षालन का अच्छा मौक़ा मिला, इनके सभापति बनने से हमारी कानफरन्स की सफलता में कोई सन्देह नहीं रहा और समस्त जिले में पण्डित जी के नाम को सुनकर एक विचित्र स्फूर्ति और जागृति उत्पन्न हुई। पण्डित जी को तार और पत्रों द्वारा सूचना दी गयी और बहुत पत्र व्यवहार के पश्चात् पण्डित जी ने दो-एक शर्तें डालकर सभापति होना स्वीकार किया। वह शर्तें यह थीं:—

(१) कानफरन्स में पण्डालादि में बहुत खर्च न किया जाय सादा काम रहे।

(२) जलूस का पचड़ा न लगाया जाय।

(३) तिलकस्वराज्य फन्ड के लिये अपील हो।

हम ने उस समय यह शर्तें मान लीं किन्तु पीछे पण्डाल भी शानदार बना, लगभग ८००)-१०००) खर्च हुआ और बड़ा ही बढ़िया रहा। पण्डित जी का ठाट का जलूस भी निकला। हां तिलक स्वराज्य फण्ड के लिये जो कानफरन्स में अपील की गयी उसमें १५००) लाला शंकरलाल रईस ने दिया और ऊपर से और आठ सौ रुपया मिला, कुछ जेवर भी मिला। कुल २३००), २४००) पण्डित के अर्पण किया गया पर इसके विषय में आगे लिखना ठीक था। हमने ठाट की कानफरन्स इसलिये की कि पहला पहला मामला है धूमधाम से होना चाहिये। स्वा० जी और हम इस बात में बिलकुल मुत्तफिक रहे। स्वा० जी ने प्रचार में एक ही धूम कर दी हमने भी अपनी लेखनी को उठाया और कहा देवी जरा अपनी करामात दिखा। भारतवर्ष

का शायद ही कोई पत्र बचा हो जिसमें देहरा कानफरन्स के समाचार न छपते हों, क्या दैनिक, क्या साप्ताहिक, क्या मासिक सभी पत्रों में धूम थी। प्रेस तार तो चलते ही थे, डाक भी चलती थी, भारतवर्ष का शायद ही कोई नेता बचा हो जिनको चार-चार वार न लिखा गया हो। देहरे के आस पास के ग्रामों में शायद ही कोई पण्डाल के योग्य सामान हो, जो न लाया गया हो। इधर गंगोत्री तक उधर जौनसार तक, इधर बृटिश गढ़वाल तक, इधर यू० पी० भर में एक ही आंदोलन था। लोग हैरान थे कि यह जिला कानफरन्स होने जारही है कि इन्डियन नैशनल कांग्रेस का कोई स्पेशल अधिवेशन बुलाया गया है। खूब खर्च हुआ, खूब नोटिस दिया गया, खूब प्रचार किया गया, खूब उत्साह से काम हुआ, कानफरन्स को सफल बनाने के लिये मनुष्य जितना कर सकता था कर चुका, बहुत ही चहल पहल रही। जिन्होंने निमन्त्रण को स्वीकार किया उनके शुभ नाम यह हैं:—

(१) श्री पं० जवाहरलाल (सभापति)
(२) श्री बैरिस्टर आसफअली (सभापति स्टूडण्ट्स कानफरन्स)
(३) डा० किचलू
(४) श्री स्टोक्स (काठगाँव-शिमला)
(५) श्री ला० लाजपतराय,
(६) श्री पं० नेकीराम शर्मा 'भिवानी'
(७) श्रीमती सत्यवती देवी लखनौ
(८) श्री ला० गोवर्द्धनदास पंजाब
(९) श्री १०८ जगद्गुरु शंकराचार्य श्रीभारतीकृष्णतीर्थ जी
(१०) श्री १०८ स्वा० भास्कर तीर्थ जी

बाहर भ्रमण करके कतिपय नेताओं को थका कर आने में श्री स्वा० जी ने बहुत परिश्रम किया। नजीबाबाद का नैशनल बैण्ड भी मंगाया गया। श्री बेणीप्रसाद खेर इसके संचालक थे। श्री पं० जवाहरलाल जी, श्री ला० लाजपतराय जी, श्री १०८ शंकराचार्य जी के जलूस बड़े ही ठाट के रहे—सभापति तो ब्रज विला में ठहराये गये। श्री लाला जी बा० हंसराज कक्कड़ के होटल में ठहराये गये। श्रीमती सत्यवती भी यहीं ठहरायी गयीं। श्री पं० नेकीराम जी एक दूसरी कोठी में उतारे गये। बैरिस्टर आसफअली और डा० किचलू ये दोनों देहरे के खिलाफतियों के यहां ठहराये गये। इस खिलाफत का दफ्तर म्यूनिसिपैलिटी के पास ही था, यहीं इनका इसलामिया स्कूल भी था। श्री फखरूद्दीन फारुखी उनके भाई आदि ने आतिथ्यादि में बहुत सहायता दी। खिलाफत कमेटी ने भी कानफरन्स के साथ अपना उत्सव करने की ठानी। श्री फारुखी जी इसके प्रधान थे। श्री तमन्ना जी आदि प्रमुख कार्य-कर्ता थे। सारांश समस्त जिला सजग हो उठा हां मैं भूल गया श्री १०८ जगद्गुरु शंकराचार्य, श्री बा० हरस्वरूप जी की कोठी में ठहराये गये थे। कानफरन्स से एक मास पूर्व से ही प्रातः चार बजेः—

'जगादे भारत को करतार'।

की प्रभात फेरी लगती थी, इससे भी बहुत चहल पहल रहती थी। किन्तु जब कानफरन्स में तीन एक दिन रह गये तब पुलिस ने यह हुक्म निकाला कि रात बारह बजे से प्रातः ९ बजे तक न कोई फेरी लगेगी न कोई जलूस निकलेगा। हमने तो जलूस निकालने की ठान ही रक्खी थी आखिर स्वा० पण्डित

आनन्दनारायण आदि वकीलों और रईसों की मध्यस्थी से पुलिस ने अपना हुक्म वापिस लिया। और पण्डित जवाहरलाल का जलूस निकाला और शान से निकाला—एक बात और रह गयी रात को शरह की तो बात रहने दीजिये, ग्रामों की देवियां भी झुण्ड बांध बांध कर पण्डाल देखने आती थीं। डा० मनजीतसिंह जी स्वयंसेवकों की सेना के संचालक थे और आपने बहुत ही अच्छा प्रबन्ध रक्खा। सैकड़ों स्वयंसेवकों ने बड़ी लगन से काम किया।

एक और घटना सुनिये, कानफरन्स के कुछ दिन पूर्व जब कलेक्टर मिस्टर एडम्स ने देखा कि कानफरन्स के मार्ग के सब विघ्न दूर हुये और सब काम उत्साह पूर्वक हो रहा है तब आपको एक सनक उठी, वह यह कि स्वागतकारणी समिति के अध्यक्ष से यह लिखा लिया जाय कि कानफरन्स में कोई राज-द्रोहात्मक व्याख्यान न हो। दूसरी शर्त यह कि यदि पण्डित जवाहरलाल डा० किचलू और डा० सत्यपाल जब आवें तब आते ही प्रथम उनसे मिलें। उन्हों ने नरम लोगों को बुला बुला कर पूछा, परामर्श किया, कभी कभी धमकाया भी किया तो स्वागताध्यक्ष दोनों शर्तें मान लें नहीं तो कानफरन्स बन्द कर दी जायगी। पं० आनन्दनारायण जी, बा० उग्रसेन जी, पं० विश्वम्भरदत्त चन्दोला आदि ने बहुत समझाया कि कानफरन्स का बन्द करना ठीक नहीं, लोगों में अधिक जोश फैलेगा। किन्तु कलेक्टर वैसे नेक था, पर था सनकी, उसने कहा अच्छा 'स्वागताध्यक्ष नरदेवशास्त्री को बुलवा दो हम खुद उनसे बात चीत कर लेगा'। चन्दोला जी और उग्रसेन जी मेरे पास आये और कहने

कलेक्टर—जब डा० सत्यपाल, किचलू और पं० जवाहरलाल आयें तब मुझ से मिलें।

मैं—यह बात भारतीय आतिथ्य पद्धति के विरुद्ध है कि कोई अपने अतिथि से यह कहे कि जाओ अमुक से मिलआव आप निमन्त्रण भेजिये, मैं उनको दे दूंगा। फिर यह उनकी इच्छा है कि आवें न आवें मैं तो इस तरह आने को नहीं कहूंगा।

कलेक्टर—Dr, Kitchlu is a dangerous man. डा० किचलू खौफनाक आदमी है

मैं—No sir he is amost reasenable man. महाशय नहीं, डा० किचलू तो बड़े ही समझदार आदमी हैं।

इसके बाद साहब बहादुर कुछ समझ गये और उन्होंने स्वयं निमन्त्रण देने की बात मानली। फिर हस्तान्दोलन के बाद हम चले आये। पीछेसे उन्हों ने नरमदल वालों को बुलाकर पूछा तो सब ने समझाया कि कानफरन्स होने दीजिये। कोई गड़ बड़ न होगी। शास्त्री जी सुलझे हुये आदमी हैं, ठीक ठीक सम्हाल लेंगे, उपद्रव न होने देंगे। तब साहब महाशय ठंडे होगये। जब पण्डित जवाहरलाल आदि आये तब डा० किचलू और उनके नाम साहब बहादुर का यथा रीति निमन्त्रण आया। वे दोनों उनसे मिलने गये और पीछे हमने बड़े आश्चर्य से सुना कि जो साहब बहादुर इनसे दो दिन पहले इतने डरते थे, दोनों से बात चीत कर के परम प्रसन्न हुये। पण्डित आनन्दनारायण बाबू

कलेक्टर—हम दश मिनट में खेल बिगाड़ देगा अमारे साथ अमारा फौज़ है अमारा हुक्म हाय।

मैं—यदि आप कानफरन्स बन्द करेंगे तो भी हमारा ही फायदा होगा क्यों कि लोगो में असहयोग का खूब प्रचार होगा।

कलेक्टर—राजद्रोह का गेरण्टी ?

मैं—साहब मुझे पता नहीं राजद्रोह किस को कहते हैं।

कलेक्टर—(एक दम इण्डियन पिनल कोड उठाया और उसमें से १२४ अ दिखाकर) यह हाय राजद्रोह का बात।

मैं—(मैंने उसे पढ़ा और मुस्करा कर कहा) साहब, तब तो बड़ा ही आसान मामला है। आपके सी० आई० डी० आते ही हैं रिपोर्ट लेंगे ही, आपके पास रिपोर्ट आयेगी ही आप देखेंगे ही, आप भी कानफरन्स की शोभा को बढ़ाइयेगा।

कलेक्टर—(इण्डियनपिनल कोड को ज़मीन पर पटक कर) हम वहां जायगा। जहां हमारा खिलाफ बात बोला जायगा। हम दस मिनट में खेल बिगाड़ देगा।

मैं—साहब सोच लीजिये, हमारी तो कोई हानि नहीं है।

कलेक्टर—जब डा० सत्यपाल, किचलू और पं० जवाहरलाल आवें तब मुझ से मिलें।

मैं—यह बात भारतीय आतिथ्य पद्धति के विरुद्ध है कि कोई अपने अतिथि से यह कहे कि जाओ अमुक से मिलआव आप निमन्त्रण भेजिये, मैं उनको दे दूंगा। फिर यह उनकी इच्छा है कि आवें न आवें मैं तो इस तरह आने को नहीं कहूंगा।

कलेक्टर—Dr, Kitchlu is a dangerous man. डा० किचलू खौफनाक आदमी है

मैं—No sir he is amost reasonable man. महाशय नहीं, डा० किचलू तो बड़े ही समझदार आदमी हैं।

इसके बाद साहब बहादुर कुछ नरम पड़ गये और उन्होंने स्वयं निमन्त्रण देने की बात मानली। फिर इस आन्दोलन के बाद हम चले आये। पीछे से उन्हों ने स्कूल वालों को बुलाकर पूछा तो सब ने समझाया कि कानफरन्स होने दीजिये। कोई गड़ बड़ न होगी। शास्त्री जी सुलझे हुये आदमी हैं, ठीक ठाक सम्हाल लेंगे, उपद्रव न होने देंगे। तब साहब परम ठंडे होगये। जब पण्डित जवाहरलाल आदि आये तब डा० किचलू और उनके नाम साहब बहादुर का यथा रीति निमन्त्रण आया। वे दोनों उनसे मिलने गये और पीछे हमने बड़े आश्चर्य से सुना कि जो साहब बहादुर इनसे दो दिन पहले इतने डरते थे, दोनों से बात चीत कर के परम प्रसन्न हुये। पण्डित आनन्दनारायण बाबू

कलेक्टर—हम दश मिनट में खेल बिगाड़ देगा अमारे साथ अमारा फौज़ है अमारा हुक्म हाय।

मैं—यदि आप कानफरन्स बन्द करेंगे तो भी हमारा ही फायदा होगा क्यों कि लोगों में असहयोग का खूब प्रचार होगा।

कलेक्टर—राजद्रोह का गैरण्टी ?

मैं—साहब मुझे पता नहीं राजद्रोह किस को कहते हैं।

कलेक्टर—(एक दम इण्डियन पिनल कोड उठाया और उसमें से १२४ अ दिखाकर) यह हाय राजद्रोह का बात।

मैं—(मैंने उसे पढ़ा और मुसकरा कर कहा।) साहब, तब तो बड़ा ही आसान मामला है। आपके सी० आई० डी० आते ही हैं रिपोर्ट लेंगे ही, आपके पास रिपोर्ट आयेगी ही आप देखेंगे ही, आप भी कानफरन्स की शोभा को बढ़ाइयेगा।

कलेक्टर—(इण्डियनपिनल कोड को जमीन पर पटक कर) हम वहां जायगा। जहां हमारा खिलाफ बात बोला जायगा। हम दस मिनट में खेल बिगाड़ देगा।

मैं—साहब सोच लीजिये, हमारी तो कोई हानि नहीं है।

तीसरा दिन

तीसरे दिन भी इसी प्रकार व्याख्यान हुये। किन्तु सायंकाल स्त्री सभा में जो श्रीमती सत्यवती का भाषण हुआ वह तो एक दम हिमालय के हृदय को भी चीर देने वाला हुआ। पंडाल के भीतर स्त्रियों की लचाखच भीड़ थी और पण्डाल के बाहर मनुष्यों की उससे भी दुगनी भीड़ थी—देहरे ने वैसा वह विचित्र समय आज तक नहीं देखा—

नेतृमण्डल स्व स्व स्थान को लौट गया, कानफरन्स निर्विघ्न समाप्त हुई और इधर हम भी सुदीर्घ प्रति दिन बेचैन रख ने वाली चिन्ता से मुक्त हुये—अब ज़रा किस किस ने इस कानफरन्स में सहयोग दिया, लिखने की बात है—

पण्डाल बनाने में—चौ० कुन्दनलाल आढ़त बाज़र
ऊपरी काम—ला० कुन्दनलाल भोगपुरी
भोजन प्रबन्ध—ला० हरप्रसाद घी वाले धामावाला
और बा० हंसराज कण्ड
सामान—सुमान—बा० नारायणदास फरनीचर मर्चण्ट
राजपुर रोड तथा रावत पृथ्वीसिंह
अजबपुर—
ऊपरका सुप्रबन्ध—प्रिन्सिपल लक्ष्मणप्रसाद तथा डी० ए० वी० कौलेज के छात्र
भीतर पण्डाल का—श्री ठा० मनजीतसिंह, राष्ट्रिय स्कूल
सुप्रबन्ध तथा स्वयं सेवा के अध्यापक वृन्द तथा छात्र मण्डल
देवियों का प्रबन्ध—श्रीमती सेठ फूलचंद तथा श्रीमती

के उप प्रधान रहे हैं--मुसलमानों में ऐसे नेक दिल और सुलहकुन आदमी कम देखे गये। आजकल आप प्रयाग में ठेकेदारी का काम करते हैं। गृहस्थिति के कारण वे पब्लिक कार्य में योग नहीं देरहे हैं।

दूसरा दिन

प्रातः ८—११ श्री बैरिस्टर आसफअली की अध्यक्षता में स्टूडण्टस् कानफरन्स हुई जिसमें डा० किचलू, श्रीमती सत्यवती आदि ने भाग लिया—श्री आसफअली का व्याख्यान लच्छेदार था। व्याख्यान में आप यत्र तत्र हिन्दीशब्दों का प्रयोग भी करते थे। श्रीमती सत्यवती देवी का व्याख्यान तो छटपटाने वाला हुआ—पं० द्वारकानाथ रैना ने तो इन्हीं के व्यख्यान से प्रभावित होकर वकालत छोड़दी थी,

मध्याह्नोत्तर—श्री शंकराचार्य तथा डा० किचलू के खिलाफत पर व्याख्यान हुये। दोनों प्रभावशाली व्याख्यान थे। श्री लाला जी की आवाज़ बैठ गयी थी वे बोल न सके। श्रीमती सत्यवती का व्याख्यान दिल हिलाने वाला, देहरे को हिलाने वाला, अत्यन्त करुणा रस प्रधान व्याख्यान था। श्री स्टोक्स, श्री नेकीराम जी के भी समयोचित सारगर्भित व्याख्यान हुये। रात्रि को फिर अनेक व्याख्यान हुये। लाला गोवर्द्धनदास पंजाब निवासी का व्याख्यान बहुत आवेश पूर्ण हुआ सभापति की अन्तिम वक्तृता भी मार्के की रही,

तीसरा दिन

तीसरे दिन भी इसी प्रकार व्याख्यान हुये। किन्तु सायंकाल को सभा में जो श्रीमती सत्यवती का भाषण हुआ वह तो एक दम हिमालय के हृदय को भी चीर देने वाला हुआ। पंडाल के भीतर स्त्रियों की खचाखच भीड़ थी और पण्डाल के बाहर मनुष्यों की उससे भी दुगनी भीड़ थी—देहरे ने वैसा वह विचित्र समय आज तक नहीं देखा—

नेतृमण्डल स्व स्व स्थान को लौट गया, कानफरन्स निर्विघ्न समाप्त हुई और इधर हम भी सुदीर्घ प्रति दिन बेचैन रखने वाली चिन्ता से मुक्त हुये—अब ज़रा किस किस ने इस कानफरन्स में सहयोग दिया, लिखने की बात है—

पण्डाल बनाने में—चौ० कुन्दनलाल आढ़त बाज़ार
ऊपरी काम—ला० कुन्दनलाल भोगपुरी
भोजन प्रबन्ध—ला० हरप्रसाद घी वाले धामावाला और बा० हंसराज कड़ेड
सामान—सुमान—बा० नारायणदास फरनीचर मर्चेण्ट राजपुर रोड तथा रावत पृथ्वीसिंह अजबपुर—
ऊपरका सुप्रबन्ध—प्रिन्सिपल लक्ष्मणप्रसाद तथा डी० ए० वी० कौलिज के छात्र
भीतर पण्डाल का सुप्रबन्ध तथा स्वयं सेवा—श्री ठा० मनजीतसिंह, राष्ट्रिय स्कूल के अध्यापक वृन्द तथा छात्र मण्डल
देवियों का प्रबन्ध—श्रीमती सेठ फूलचंद तथा श्रीमती

के रूप प्रधान रहे हैं--मुसलमानों में ऐसे नेक दिल और सुलहकुन आदमी कम देखे गये। आजकल आप प्रयाग में ठेकेदारी का काम करते हैं। गृहस्थिति के कारण वे पब्लिक कार्य में योग नहीं देरहे हैं।

दूसरा दिन

प्रातः ८—११ श्री बैरिस्टर आसफअली की अध्यक्षता में स्टूडण्टस् कानफरन्स हुई जिसमें डा० किचलू, श्रीमती सत्यवती आदि ने भाग लिया—श्री आसफअली का व्याख्यान लच्छेदार था। व्याख्यान में आप यत्र तत्र हिन्दीशब्दों का प्रयोग भी करते थे। श्रीमती सत्यवती देवी का व्याख्यान तो तड़पाने वाला हुआ—पं० द्वारकानाथ रैना ने तो इन्हीं के व्यख्यान से प्रभावित होकर वकालत छोड़दी थी,

मध्याह्नोत्तर—श्री शंकराचार्य तथा डा० किचलू के खिलाफत पर व्याख्यान हुये। दोनों प्रभावशाली व्याख्यान थे। श्री लाला जी की आवाज़ बैठ गयी थी वे बोल न सके। श्रीमती सत्यवती का व्याख्यान दिल हिलाने वाला, देहरे को हिलाने वाला, अत्यन्त करुणा रस प्रधान व्याख्यान था। श्री स्टोक्स, श्री नेकीराम जी के भी समयोचित सारगर्भित व्याख्यान हुये। रात्रि को फिर अनेक व्याख्यान हुये। लाला गोवर्द्धनदास पंजाब निवासी का व्याख्यान बहुत आवेश पूर्ण हुआ। सभापति की अन्तिम वक्तृता भी मार्के की रही,

रहा था तभी हम दिसम्बर ता० १०, १९२० को पकड़े गये। पीछे महन्त गुलाबदास जीत गया। वह नैशनल स्कूल भी टूट गया और ज़मीन भी हाथ से जाती रही, सब मामला तितर बितर होगया। महन्त गुलाबदास राज़ी हो जाता तो ला० बलवीरसिंह तो ज़मीन दे ही चुके थे। पर जब महन्त राज़ी ही नहीं हुआ तब वे क्या करते बेचारे, आज यदि वह ज़मीन हमारे पास होती तो उस पर भव्य तिलक भवन दिखलायी पड़ता, पर देहरे के दुर्भाग्य कोई काम अन्त तक पहुँचने ही नहीं पाता। देहरे वालों से अच्छे रहे चूहड़पुर वाले जिन्होंने असहयोग के दिनों में चन्दा करके सोलह सहस्र रुपये की लागत का भव्य तिलक भवन बनाया। बा० बुलाकीराम जी ज़िद्द न करते तो महन्त करीब करीब ज़िमीन्दारी के हक़ छोड़ने या देने पर राज़ी होगया था। बाबू जी ने यह समझा कि बिना कुछ लिये दिये ही सैंत-मैंत में काम हो जायगा। यही उनकी भूल थी, या ज़िद्द कहिये। महन्त की ओर से पैरवी करने के लिये बिजनौर के श्री विश्वनाथसिंह परमार बैरिस्टर आये थे इधर से बाबू जी, रैना जी, पं० त्रिजुगीनारायण आदि थे। हमको भी कोर्ट में जाना पड़ा था क्यों कि हमने ही इस ज़मीन पर दख़ल किया था। जिस डिप्टी के इजलास में यह केस चल रहा था उसका नाम हम भूलते हैं, था बहुत सभ्य डिपटी यह बात है कोई जौलाय-अगस्त या सितम्बर की होगी। हमने ज़मीन पर कब्जा किया था मई के प्रारम्भ में तभी से यह भूमि तिलक भूमि नाम से प्रसिद्ध हुई। यहां बड़ी चहल पहल थी यहीं पब्लिक व्याख्यान होते थे। फिर तो एक बड़ा तिलक हाल बनाया गया था फिर महन्त के कब्जा होने पर उखाड़ना पड़ा। वह समय असहयोग आन्दोलन का सूर्योदय था जनता में अपूर्व उत्साह

भेट भी सम्मलित कर लिये थे। सच पूछो तो बृटिश राज्य में सम्मिलित होने के पूर्व देहरादून टिहरी-गढ़वाल का प्रधान अंग ही था। नेपाल के गोरखाओं ने जब टिहरी गढ़वाल पर कब्ज़ा किया तब टिहरी के राजा ने ब्रिटिश की सहायता मांगी, जिस सहायता के बदले में हरद्वार तक का भाग ब्रिटिशों ने लिया उधर ब्रिटिश गढ़वाल बन गया, उधर मसुरी भी गयी। नाममात्र टिहरी की कहलायी जाने लगी इस प्रकार टिहरी रियासत की मजबूत टांगें कट गयीं। अब धड़ ही धड़ बाकी है।

कानफरन्स का कार्य समाप्त करके हम और स्वा० जी हरद्वार कुम्भ में पहुँचे और भीमगोडे के पास भगवानदास गो रक्षा प्रचारक के बाग में कैम्प लगाया, वहीं बीस दिन तक कांग्रेस का प्रचार करते रहे, मेले में इसका अच्छा प्रभाव रहा। यहां का कार्य समाप्त करके फिर हम देहरे लौटे क्यों कि हमारी अनुपस्थिति में ही देहरे में ज़िला कांग्रेस का नया चुनाव होगया था, जिसमें श्री बा० बुलाकीराम जी प्रधान और हम इस कमेटी के मन्त्री चुने गये थे। पहुँचते ही हम अपना कार्यालय तिलक भूमि में लाये देहरे के प्रसिद्ध रईस लाला बलवीरसिंह जी ने तिलक महाराज की स्मृति में भवन बनाने के लिये यह भूमि दी थी। नैशनल स्कूल भी यहीं लाया गया। नये टिनशेड खड़े किये गये। हम स्वयं भी तिलक भूमि में रहने लगे, क्योंकि आशा थी कि स्व० महन्तगुलाबदास ज़िमींदार कुछ रु० लेकर ज़मींदारी का हक़ छोड़ देगा और फिर तिलक भवन बनेगा। किन्तु बा० बुलाकीराम जी प्रधान की नीति महन्त को पसन्द नहीं थी इसलिये उसने नालिश ठोक दी और यह मामला चल

रहा था तभी हम दिसम्बर ता० १०, १९२० को पकड़े गये। पीछे महन्त गुलाबदास जीत गया। वह नैशनल स्कूल भी टूट गया और ज़मीन भी हाथ से जाती रही, सब मामला तितर बितर होगया। महन्त गुलाबदास राज़ी हो जाता तो ला० बलवीरसिंह तो ज़मीन दे ही चुके थे। पर जब महन्त राज़ी ही नहीं हुआ तब वे क्या करते बेचारे, आज यदि वह ज़मीन हमारे पास होती तो उस पर भव्य तिलक भवन दिखलायी पड़ता, पर देहरे के दुर्भाग्य कोई काम अन्त तक पहुँचने ही नहीं पाता। देहरे वालों से अच्छे रहे चूहड़पुर वाले जिन्होंने असहयोग के दिनों में चन्दा करके सोलह सहस्र रुपये की लागत का भव्य तिलक भवन बनाया। बा० बुलाकीराम जी ज़िद न करते तो महन्त करीब करीब ज़िमीन्दारी के हक़ छोड़ने या देने पर राज़ी होगया था। बाबू जी ने यह समझा कि बिला कुछ लिये दिये ही सैंत-मैंत में काम हो जायगा। यही उनकी भूल थी, या ज़िद कहिये। महन्त की ओर से पैरवी करने के लिये बिजनौर के श्री विश्वनाथसिंह परमार बैरिस्टर आये थे इधर से बाबू जी, रैना जी, पं० त्रिजुगीनारायण आदि थे। हमको भी कोर्ट में जाना पड़ा था क्यों कि हमने ही इस ज़मीन पर दख़ल किया था। जिस डिप्टी के इजलास में यह केस चल रहा था उसका नाम हम भूलते हैं, था बहुत सभ्य डिपटी यह बात है कोई जौलाय-अगस्त या सितम्बर की होगी। हमने ज़मीन पर कब्जा किया था मई के प्रारम्भ में तभी से यह भूमि तिलक भूमि नाम से प्रसिद्ध हुई। यहां बड़ी चहल पहल थी यहीं पब्लिक व्याख्यान होते थे। फिर तो एक बड़ा तिलक हाल बनाया गया था फिर महन्त के कब्जा होने पर उखाड़ना पड़ा। यह समय असहयोग आन्दोलन का सूर्योदय था जनता में अपूर्व उत्साह

भेट भी सम्मलित कर लिये थे। सच पूछो तो बृटिश राज्य में सम्मिलित होने के पूर्व देहरादून टिहरी-गढ़वाल का प्रधान अंग ही था। नेपाल के गोरखाओं ने जब टिहरी गढ़वाल पर कब्ज़ा किया तब टिहरी के राजा ने ब्रिटिश की सहायता मांगी, जिस सहायता के बदले में हरद्वार तक का भाग ब्रिटिशों ने लिया उधर ब्रिटिश गढ़वाल बन गया, उधर मसूरी भी गयी। नाममात्र टिहरी की कहलायी जाने लगी इस प्रकार टिहरी रियासत की मजबूत टांगें कट गयीं। अब धड़ ही धड़ बाकी है।

कानफरन्स का कार्य समाप्त करके हम और स्वा० जी हरद्वार कुम्भ में पहुँचे और भीमगोडे के पास भगवानदास गो रक्षा प्रचारक के बाग में कैम्प लगाया, यहीं बीस दिन तक कांग्रेस का प्रचार करते रहे, मेले में इसका अच्छा प्रभाव रहा। यहां का कार्य समाप्त करके फिर हम देहरे लौटे क्यों कि हमारी अनुपस्थिति में ही देहरे में ज़िला कांग्रेस का नया चुनाव होगया था, जिसमें श्री बा० बुलाकीराम जी प्रधान और हम इस कमेटी के मन्त्री चुने गये थे। पहुँचते ही हम अपना कार्यालय तिलक भूमि में लाये देहरे के प्रसिद्ध रईस लाला बलबीरसिंह जी ने तिलक महाराज की स्मृति में भवन बनाने के लिये यह भूमि दी थी। नैशनल स्कूल भी यहीं लाया गया। नये टिनशेड खड़े किये गये। हम स्वयं भी तिलक भूमि में रहने लगे, क्योंकि आशा थी कि स्व० महन्तगुलाबदास ज़िमींदार कुछ रु० लेकर ज़मींदारी का हक़ छोड़ देगा और फिर तिलक भवन बनेगा। किन्तु बा० बुलाकीराम जी प्रधान की नीति महन्त को पसन्द नहीं थी इसलिये उसने नालिश ठोक दी और यह मामला चल

श्री ठा० मनजीतसिंह जी भी धीरे धीरे बढ़ते बढ़ते औल-इण्डिया मैन होगये हैं, म्युनिसिपल कमिश्नर हैं, और लगातार छः वर्ष तक यू० पी० लेजिस्लेटिव काऊन्सिल के मेम्बर रह चुके हैं—आपके स्वर्गीय पिता ठा० मित्रजोतसिंह जी आर्यसमाज के प्रधान कार्य कर्ता थे। ठा० साहब भी उपप्रधान हैं। देहरे के प्रत्येक आन्दोलन में आप पूर्ण योग देते रहे हैं—आपने एकबार तिलक भवन बनाने का और उसके लिये स्थान प्राप्ति का पूर्ण उद्योग किया था। शिवाजीदल के सदस्यों के साथ मिलकर आपने कोई २२००) चन्दा एकत्रित किया था किन्तु जब कहीं स्थान नहीं मिला—क्यों कि मुसलमान अदूरदर्शी मेंबरों के अड़ंगे लग गये—तब रुपया दानदाताओं को लौटाना पड़ा क्यों कि रु० लेते समय उनसे यही वायदा किया गया था कि यदि भवन न बन सका तो रु० लौटा देंगे।

एक बात का और उल्लेख करना आवश्यक है—देहरे के प्रसिद्ध रईस तथा बैरिस्टर श्री बाबू उग्रसेन जी जो वर्षों से म्युनिसिपैलिटी के चेअरमैन हैं, बड़े ही शान्त प्रकृति के पुरुष हैं—आप चुप चाप काम करना पसन्द करते रहे हैं आप प्रारम्भ से ही, बा० ज्योतिःस्वरूप जी के ज़माने से ही कांग्रेस में योग देते रहे हैं, देहरे की प्रत्येक जागृति के कार्य में आप की उचित साहायता रहती ही है—चाहे पोलिटिकल हो, सामाजिक हो, साहित्यिक हो, कोई कार्य हो, आपकी चैयरमैनी में देहरे शहर की स्थिति में बहुत से सुधार हुये हैं जो प्रत्यक्ष है—इस प्रसङ्ग पर इनता ही लिखना पर्याप्त है। १९२१ में आप यू० पी० लेजिस्लेटिव कौंन्सिल के मेंबर थे किन्तु जब हम जेल में गये तब

प्रचार में किस किसने योग दिया

पं० दिनकर शर्मा बेढ़ब, डा० कीर्त्तिदेव जी, पं० बालाप्रसाद जी, पं० अमरनाथ जी वैद्य शास्त्री, ठा० मनजीतसिंह जी, मास्टर किशोरीलाल जी, पं० नित्यानन्द जी, ब्र० आनन्दप्रकाश (ज्वालापुर), चौ० हुलास वर्मा, पं० देवरत्न, पं० गोविन्दराम वैद्य, नरदेव शास्त्री, प्रायः यही लोग तिलक स्वराज्य फण्ड के एकत्रित करने में सहायक हुये पं० रैना जी की सहायता और कश्मीरी बालकों की तत्परता को हम कभी नहीं भूलेंगे।

एक बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि कानफरन्स के पश्चात् एक उत्साही नवयुवक कार्य क्षेत्र में उतर पड़े—उनका नाम है चौ० बिहारीलल जी, आपने अपनी सर्वे डिपार्टमेण्ट की नौकरी भी छोड़ी और बड़े उत्साह से योग देना प्रारम्भ किया। आप के पिता श्री चन्दूलाल जी देहरे के पुराने प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता हैं—आपने नाइट स्कूलों आदि द्वारा वर्षों चुप चाप संघटनात्मक कार्य किया सच पूछिये तो संघटनात्मक जितने भी कार्य हैं वे चुपचाप ही अच्छी तरह बनते हैं—लेखक को इसका पूर्ण अनुभव है—अपने पिता का प्रभाव पुत्र पर भी पड़ा और चौ० बिहारीलाल धीरे धीरे बढ़ते बढ़ते आज आप अपनी जातीय सभा के केवल अपने ज़िले में अग्रणी नहीं हैं अपितु औल-इण्डिया मैम्बर होगये हैं, आर्यसमाज के आप स्तम्भ हैं हाँ, कांग्रेस के भी प्राण हैं—आप औलइण्डिया कांग्रेस के सदस्य हैं, म्युनिसिपल कमिशनर हैं।

श्री ठा० मनजीतसिंह जी भी धीरे धीरे बढ़ते बढ़ते औल-इण्डिया मैन होगये हैं, म्युनिसिपल कमिशनर हैं, और लगातार छः वर्ष तक यू० पी० लेजिस्लेटिव काऊन्सिल के मेम्बर रह चुके हैं—आपके स्वर्गीय पिता डा० मित्रजीतसिंह जी आर्यसमाज के प्रधान कार्य कर्त्ता थे । ठा० साहब भी उपप्रधान हैं । देहरे के प्रत्येक आन्दोलन में आप पूर्ण योग देते रहे हैं—आपने एकबार तिलक भवन बनाने का और उसके लिये स्थान प्राप्ति का पूर्ण उद्योग किया था । शिवाजीदल के सदस्यों के साथ मिलकर आपने कोई २२००) चन्दा एकत्रित किया था किन्तु जब कहीं स्थान नहीं मिला—क्यों कि मुसलमान अदूरदर्शी मेंबरों के अडंगे लग गये—तब रुपया दानदाताओं को लौटाना पड़ा क्यों कि रु० लेते समय उनसे यही वायदा किया गया था कि यदि भवन न बन सका तो रु० लौटा देंगे ।

एक बात का और उल्लेख करना आवश्यक है—देहरे के प्रसिद्ध रईस तथा बैरिस्टर श्री बाबू उग्रसेन जी जो वर्षों से म्युनिसिपैलिटी के चेअरमैन हैं, बड़े ही शान्त प्रकृति के पुरुष हैं—आप चुप चाप काम करना पसन्द करते रहे हैं आप प्रारम्भ से ही, बा० ज्योतिःस्वरूप जी के ज़माने से ही कांग्रेस में योग देते रहे हैं, देहरे की प्रत्येक जागृति के कार्य में आप की उचित साहायता रहती ही है—चाहे पोलिटिकल हो, सामाजिक हो, सहित्यिक हो, कोई कार्य हो, आपकी चेयरमैनी में देहरे शहर की स्थिति में बहुत से सुधार हुये हैं जो प्रत्यक्ष है—इस प्रसङ्ग पर इनता ही लिखना पर्याप्त है । १९२१ में आप यू० पी० लेजिस्लेटिव कौन्सिल के मेंबर थे किन्तु जब हम जेल में गये तब

प्रचार में किस किसने योग दिया

पं० दिनकर शर्मा वैद्य, डा० कीर्तिदेव जी, पं० बालाप्रसाद जी, पं० अमरनाथ जी वैद्य शास्त्री, डा० मनजीतसिंह जी, मास्टर किशोरीलाल जी, पं० नित्यानन्द जी, ब्र० आनन्दप्रकाश (ज्वालापुर), चौ० हुलास वर्मा, पं० देवरत्न, पं० गोविन्दराम वैद्य, नरदेव शास्त्री, प्रायः यही लोग तिलक स्वराज्य फण्ड के एकत्रित करने में सहायक हुये पं० रैना जी की सहायता और कश्मीरी बालकों की तत्परता को हम कभी नहीं भूलेंगे।

एक बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि कानफरन्स के पश्चात् एक उत्साही नवयुवक कार्य क्षेत्र में उतर पड़े—उनका नाम है चौ० बिहारीलाल जी, आपने अपनी सर्वे डिपार्टमेन्ट की नौकरी भी छोड़ी और बड़े उत्साह से योग देना प्रारम्भ किया। आप के पिता श्री चन्दूलाल जी देहरे के पुराने प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता हैं—आपने नाइट स्कूलों आदि द्वारा वर्षों चुप चाप संघटनात्मक कार्य किया सच पूछिये तो संघटनात्मक जितने भी कार्य हैं वे चुपचाप ही अच्छी तरह बनते हैं—लेखक को इसका पूर्ण अनुभव है—अपने पिता का प्रभाव पुत्र पर भी पड़ा और चौ० बिहारीलाल धीरे धीरे बढ़ते बढ़ते आज आप अपनी जातीय सभा के केवल अपने ज़िले में अग्रणी नहीं हैं अपितु औल-इण्डिया मैन होगये हैं, आर्यसमाज के आप स्तम्भ हैं हां, कांग्रेस के भी प्राण हैं—आप औलइण्डिया कांग्रेस के सदस्य हैं, म्युनिसिपल कमिश्नर हैं।

छोड़ दी थी। देहरे में राष्ट्रिय स्कूल अपना काम करही रहा था। विदेशी वस्त्र बहिष्कार भी खूब रहा—देहरे की नौकरशाही बेतरह घबरा उठी—इधर महात्मा जी बारदोली सत्याग्रह की तैयारी कर रहे थे। उसके लिये देहरे में क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या युवक, क्या देवियां सैकड़ों स्वयं सेवकों ने नाम लिखाया—

एक घटना और रहगयी—पं० देवरत्न जी बिजनौर जिले में प्रचारार्थ गये थे—वहां आप के व्याख्यानों ने धूम मचादी। सिवहारा कानफ्रन्स का व्याख्यान तो मार्के का रहा—जिस पर नौकरशाही ने आपके नाम वारण्ट छोड़ा, मसूरी में आपको गिरफ्तार किया, बिजनौर में मुकद्दमा चला, १॥ वर्ष का कठोर कारावास मिला--और आप बरेली सेण्ट्रल जेल भेजे गये। बिजनौर में मैं, श्री बा० बुलाकीराम जी और डा० कीर्तिदेव जी आप से मिलने गये थे।

मार्च की कानफरन्स से लेकर जो धूम मची थी वह बराबर जारी रही और नवम्बर का महीना आपहुँचा—इसी मास में—तारीख याद नहीं—प्रिन्स औफ वेल्स भारत की भूमि पर पदार्पण करने वाले थे—और उस दिन औलइण्डिया कांग्रेस के निदेशानुसार सर्वत्र भारत में हड़ताल होगई थी। और यह भी निर्देश था कि प्रिन्स--आफ वेल्स जिस जिस नगर में आवें वहां वहां भी हड़ताल कीजाय—इसलिये देहरे ने इस कार्य में पूर्ण योग दिया—ऐसा योग दिया कि उन दोनों दिनों में सर्वत्र जिले में बाजार तो बन्द थे ही, इक्के तांगे वालों ने भी हड़ताल रक्खी, मजदूर भी काम पर नहीं गये—स्टेशन पर न कोई गाड़ी

न मोटर, तांगा—नये जौइण्ट मैजिस्ट्रेट श्री हरशनरोडर साहब ऐसी ही घड़ी में बदल कर तशरीफ लाये—स्टेशनपर जब सन्नाटा देखा तो दंग रह गये—लोग कहते हैं कि उन्होंने उस समय भिन्ना कर कहा कि 'अच्छा हम कांग्रेस को देखेगा'—उधर राजपुर—मसूरी में फाल्टुओं ने भी वह कमाल किया कि जैसी कि आशा नहीं थी। अंगरेज़ लोग एक एक बोझ के दस दस रुपये देने को राज़ी हुये पर किसी ने स्वीकार नहीं किया और कोरा जवाब देदिया कि आज तो हम नहीं जासकते चाहे अशर्फी देदो क्यों कि महात्मा गांधी का हुकम नहीं है—बहुत से युरोपियन यात्री राजपुर होटल में ही पड़े रहे। ऊपर से नीचे आने वाले भी उस दिन नहीं आसके। जिस दिन प्रिन्स-औफ-वेल्स देहरे में आये थे उस दिन बड़ी भारी विराट सभा का आयोजन भी था—हड़ताल भी खूब रही, सभा हुई, नौकरशाही भी खूब हैरान हुई और उसने मन में दमनचक्र चलाने की पक्की ठानली—

इसके पश्चात् बारदोली सत्याग्रह के लिये भरती होती रही। वह अपूर्व उत्साह कैसे वर्णन किया जाय। यदि पति ने नाम लिखाया तो पत्नी आकर झगड़ने लगती कि उसका नाम काटडालो मेरा लिखलो। यदि लड़के का नाम लिखा गया तो बूढ़ा बाप आकर शिकायत करता था कि उसका नाम क्यों लिख लिया, घर कौन संभालेगा, उसका नाम काट डालो, मेरा लिखलो। बड़ा भाई आकर छोटे भाई का, छोटा भाई आकर बड़े भाई के नाम को कटवा कर अपने नाम को लिखवाने का आग्रह करता था। कभी कभी तो सारा कुटम्ब का कुटुम्ब ही अपना नाम लिखा जाता था—दिसम्बर के प्रारम्भ में इनकी संख्या पहुँची

पांचसौ के लगभग—होने लगी इन में स्पर्द्धा कि प्रथम जत्थे में कौन कौन जाय—अन्तमें ज़िले कांग्रेस कमेटी ने यह निश्चय किया कि ता० ५ दिसम्बर को तिलक भूमि में स्वयं सेवकों की कानफरन्स की जाय और उसमें भावी कार्य—क्रम के विषय में सोचा जाय—स्वयं सेवकों को उपयुक्त शिक्षण देने का प्रबन्ध किया जाय, सैकड़ों गुरखा हमारे पास आने लगे और कहने लगे 'गांधी की फौज में हम भरती होना मांगता, क्या क्या करना मांगता'। हमने कहा कि अमुक अमुक काम करना पड़ेगा, कोई गाली देवे तो बरदाश्त करना पड़ेगा, कोई हाथ चला बैठ तो भी सहन करना होगा, उस पर हाथ चलाना न होगा। इसको सुन कर गोरखा लोग चुपचाप वापस जाते। एक गोरखे से न रहा गया बोला शास्त्री जी अच्छा, एक बार तो हम गांधी जी के नाम पर गाली भी सह लेगा, मार भी खा लेगा लेकिन दूसरी बार दुश्मन का सिर उतार देगा, मंजूर है ? " मैंने मुसकरा कर कहा 'यह होने नहीं सकता, अभी तुम्हारा दिन नहीं है, जब तुम्हारा दिन आयगा तब जैसा मर्जी करना, अब तो तुम घर जाओ' बेचारा फौजी ढंग का सलाम देकर निराश होकर चला गया, मुझे इसके जाने का बड़ा दुखः हुआ।

हां तो उधर चार दिसम्बर की तारीख आ पहुँची। कल स्वयंसेवकों का समारोह होने वाला था कि ता० ४ को रात्रि के दश बजे डा० त्रिलोकसिंह जी खुफिया, सरदार हरनामसिंह जी कोतवाल आदि तिलक भूमि में आये और उन्हों ने हम को १४४ का हुक्म नामा दिखाया। मैंने तत्काल कारखी जी को बुलवाया और दोनों जा पहुँचे बाबू बुलाकीराम जी की कोठी पर १४४

तीनों के नाम पर थी। वहां सलाह मशाविरा होकर तीनों ने उस हुक्म नामे पर भिन्न भिन्न बातें लिखीं और दस्तखत करके हुक्म नामा लौटा दिया। पुलिस वाले और ज़िले के हाकिमों ने समझा कि मैदान मार लिया, उस हुक्म नामे में लिखा था कि हम तीनों

(१) सिविल डिस ओबीडियन्स के लिये
(२) स्वयंसेवक भरती करने के लिये
(३) पिकेटिंग के लिये

न कोई सभा कर सकेंगे—देहरादून के चंहुगिर्द छः माइल के भीतर और न कोई व्याख्यान दे सकेंगे। यह खबर बिजली की तरह पहुँच गई, शहर के कोने कोने तक और उत्साही स्वयंसेवक कहने लगे 'देखो' शास्त्री जी कहीं दब न जाना, हम तैयार हैं, आखिर तय हुआ कि ता० ५ को हर्रावाला स्टेशन के पास सटे हुये मैदान में सभा होगी। देहरे की चारों ओर की सड़कों पर वालण्टियर भेजे गये कि बाहर से बाहर ही बाहर ग्राम से आने वाले स्वयसेवकों को सब बातें समझा दी जायँ। बहुत से वालण्टियर ग्रामों में भी भेजे गये, शहर में तिलक भूमि के पास लारियां खड़ी कर दी गईं कि जिससे शहर वालों को तथा बाहर से पैदल आने वालों को आसानी से हर्रावाला पहुँचा दिया जाय शहर में इस बात की मनादी कर दी गयी। रविवार का दिन था ता० ५ थी, शहर में एक ही खलबली थी, क्या बाल बच्चे, क्या देवियां, क्या बूढ़े बुज़ुर्ग, क्या दूकानदार, क्या हिन्दू, क्या मुसलमान सभी हर्रावाला पहुँचने के लिये तैयार होगये कोई रेलवे से पहुँचे, कोई पैदल, सैकड़ों को तो कांग्रेस की लारियां ले गयी। हर्रावाला स्टेशन एक उत्साह स्फूर्ति और जागृति का केन्द्र

होगया। यह आप समझ लीजिये और इसी से आप जान सकते हैं कि जौनसार से पैदल ७० आदमी आगये थे। पछवादून से आने वाले स्वयंसेवक सब कौलागढ़ एकत्रित किये गये और पं० नारायणदत्त डंगवाल के नायकत्व में कोई साढ़े चार सौ स्वयंसेवक धूमधाम से हर्रावाला के लिये चल पड़े, शहर में जब पहुँचे तो नगर वासियों ने आपका अपूर्व स्वागत किया मानों कोई विजयी सेनापति नगर प्रवेश कर रहा है। ४५० के साथ और एक सहस्र आदमी हो लिये और यह शानदार जलूस शहर में से धूमधाम से होकर लगभग दो बजे के करीब हर्रावाला पहुँचा। हर्रावाला स्टेशन पर जिधर देखो उधर नर मुण्ड ही नर मुण्ड दिखाई देते थे, देहरे के किस किस व्यक्ति का नाम लूं, किस २ ग्राम के स्वयंसेवकों का नाम लूं पूर्व-पश्चिम के स्वयंसेवकों का अपूर्व संगम देखने योग्य था यूं कहिये कि गंगा यमुना का यह चलता फिरता संगम था। सायंकाल को ४ बजे कथा प्रारम्भ हुई अध्यक्ष थे फखरुद्दीन फारुखी, मैं, बाबू बुलाकीराम जी, डाक्टर कीर्तिदेव जी और ठा० चन्दनसिंह जी बोले। मैंने प्रांतीयकांग्रेस कमेटी की आज्ञा पत्रक पढ़ा लोगों से अनुरोध किया कि स्वयंसेवक भरती हों, होने लगी धड़ाधड़ भरती, होगये होंगे कोई पहले और नये मिलाकर दो सहस्र स्वयंसेवक। स्वयंसेवकों की परेड सेनापती ठा० चन्दनसिंह जी ने करायी और ओजस्वी भाषण में कर्तव्य बोध कराया। मैंने भी सामयिक दो बातें समझायीं और सभा समारोह का विसर्जन हुआ। स्टेशन मास्टर बेचारा घबराता रहा क्योंकि भीड़ इतनी अधिक थी कि तारों के भीतर के स्थान में सैकड़ों बैठे थे। वह कहता रहा कि मैं मारा जाऊंगा, हमने आश्वासन दिलाया कि यदि कोई पूछेगा तो हम

कह देंगे कि स्टेशन मास्टर ने हमको बहुत मना किया किन्तु हम ने ही नहीं माना इस पर उसको तसल्ली होगयी। एक और घटना का उल्लेख रह गया। स्वा० विचारानन्द जी देहली में थे। उन्होंने फिरोजपुर की कानफरन्स में कोई व्याख्यान दिया था। इसलिये उनपर १०७का अभियोग लगाकर उनको देहलीमें गिरफ्तार किया गया और वे फिरोज़पुर पहुँचे। वहीं उनको एक वर्ष की सादी कैद हो गई थी। यह खबर हमको देहली से आकर पण्डित नित्यानन्द जी ने सुनायी।

एक और घटना—प्रिंस औफ वेल्स के देहरे में आने के पूर्व दो महीने से ही ठा० मनजीतसिंह पर खुफिया विभाग की कड़ी नजर रहने लगी थी। दो खुफिया बराबर इनके साथ रहते थे। जहां ठाकुर साहब घर से चले कि ये छाया की तरह पीछे हो लेते थे। ठाकुर साहब मोटर पर तो वे दूसरी मोटर पर, ये तांगे में तो वे तांगे में, वे पैदल तो वे पैदल, वे रेल में तो ये रेल में, ठा० साहब घर के भीतर पहुँचे कि दिया इन्होंने धरना ठाकुर साहब के दरवाज़े पर। हम भी हैरान थे क्योंकि हमारे दूत और प्रकार के थे, एक तो बाबा जी के वेश में हमारे साथ हो हमारी कुटिया पर ही थे, बड़ी कठिनाई से हम इनको निकाल सके। तारीख ६ को प्रातः हमने सब बाहर के स्वयंसेवकों को विदा किया। जौनसार के स्वयंसेवकों ने कभी रेल नहीं देखी थी, उनको स्टेशन पर रेल दिखाकर, वापस विदा किया। हमारे आश्चर्य की सीमा न रही जब कि इन्होंने हमसे कहा कि हमने रेल कभी नहीं देखी, किसी स्वयंसेवक को साथ कर दीजिये जो हमको स्टेशन पर ले जाकर इनको अच्छी तरह दिखला देवे, उस समय लाला बानूमल सहारनपुर वाले ज़िला कांग्रेस कमेटी के क्लर्क थे। यह बड़े ही

उत्साह से कार्य करते थे और थे निर्भीक आदमी, मैं इनसे कह कर ता० ७ प्रातः ज्वालापुर चला आया क्योंकि महाविद्यालय वालों से मिलना जरूरी था। मैं समझचुका था कि ५-६ दिन में बड़े घर का महमान बनाया जाऊंगा। तारीख ७ और ८ को महाविद्यालय रहा, सब से कह चला कि एक वर्ष के लिये जा रहाहूं महाविद्यालय वाले विश्वास ही नहीं करते थे। तारीख ९ को सायंकाल की गाड़ी से देहरे लौटा, यह गाड़ी उस समय ९॥ बजे देहरे पहुँचा करती थी। मैंने बा० हंसराज कक्कड़ को तार दिया था कि मैं आरहा हूं। मतलब यह था कि तार को यमदूत पढ़ ही लेंगे और मुझे पकड़ना चाहेंगे तो स्टेशन पर ही पकड़ लेंगे और मैं भी कक्कड़ जी से स्टेशन पर ही मिलकर जो कुछ कहना सुनना होगा कह-सुन जाऊंगा। स्टेशन पर पहुँचा सी० आई० डी० का आदमी मिला उसने आदब अर्ज की। हमने पूछा क्यों भाई है कि नहीं कोई वारण्ट, उसने साफ इन्कार कर दिया, मैंने कहा सच सच बतलाओ। उसने कहा, 'खुदा के क़सम मुझे पता नहीं' जो हो, मेरे आने की खबर बड़े दफ्तर तक पहुँच गयी अर्थात् श्री हरशान रोडर के दफ्तर में वारण्ट तो तैयार था ही और मैं भी तैयार था ही। तिलक भूमि में पहुँचा, प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की ओर से मुरादाबाद के बा० जगदम्बाप्राद भटनागर ऑडीटर आये थे। ता० १० को प्रातः उठते ही स्थूल रूप से सब बातें समझाकर और शेष कार्य बा० बुलाकीराम जी और ला० बानूमल पर छोड़ कर बिलकुल तैयार हो बैठा। प्रातः जब खुफिया के लोग कई बार मुझको देख गये तब मैं ताड़ गया कि आज ही मामला है, मैंने यह बात मन ही में रक्खी और लोगों से ऐसे

ही मिलता रहा और हंसता खेलता रहा, लोगों को मैंने इसलिये नहीं कहा कि व्यर्थ का शोर शर न हो और मैं शान्ति से बड़े घर पहुँच जाऊं। सच कह दूं, मुझे एक खुफिया द्वारा ही पता चल गया था कि 'शास्त्री जी कुछ गड़बड़ है'।

यह ता० १० की बात है। सब से पहले मैंने बानूमल द्वारा ला० हरप्रसाद् घी वाले को बुलवाया और उनको कहा कि सब रुपया तिलक स्वराज्य फण्ड का ला० उग्रसेन जी के बैंक में जमा करें। उन्होंने हिसाब करके कुल दश सहस्र रुपये नक़द वहां जमा किया और चेक बुक लादी। वह चेक बुक हमने प्रधान श्री बुलाकीराम जी के सुपुर्द की और हलके होगये। प्रांतीय कांग्रेस ने देहरे के जिम्मे ६०००) रु० ६००० कांग्रेस मेंबर और दो सहस्र खर्च किये थे इसलिये प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के पास शेष लगभग ३५००) भेज दिया गया था। २४००--२५००) तो प्रथम ज़िला कानफरन्स के अवसर पर पं० जवाहरलाल ले ही गये थे। कुछ रु० राष्ट्रीय स्कूल के कामों में, कुछ कांग्रेस कमेटी के कार्य में खर्च होगया था। इसीलिये शेष पूरे दश सहस्र रु० ला० उग्रसेन के बैंक में जमा किया गया।

जब दुपहर दो बजे तक मुझे कोई भी गिरफ्तार करने नहीं आया तब मैं धामावाला में वनस्पति औषधालय में गया। वहां बैठा ही था कि जयराम सिन्धी ने आकर कहा कि बाज़ार में अफवाह है कि आप गिरफ्तार किये जायंगे। मैं ने उनसे कोतवाली में जाकर निश्चय करने को कहा। थोड़ी देर में वे आकर बोले बात सच्ची है। मैंने सोचा अब जितने मित्रों से शीघ्र मिललूंगा अच्छा है। श्री अमरनाथ वैद्य बोले कोई सन्देश

आ देखाओ। इस समय मुझे याद नहीं क्या सन्देश दिया और वहां से बा० जयन्तीप्रसाद जी से मिलने चला गया। मुझे खबर मिली कि पुलिस तिलकभूमि में देखगयी और मेरे पीछे पीछे फिर रही है किन्तु मुझे अकेले को और ऐसी जगह जहां भीड़-भड़का नहो, पकड़ना चाहती है। मैं तत्काल तिलकभूमि में लौटा—कोई पांच बजे का समय था, सन्ध्या करने बैठाकुछ मन्त्र बोल चुकाथा कि सरदार हरनामसिंह और तिलोकीसिंह आये और सड़क पर से ही मुझे बुलाने लगे। मैं कुछ देर चुपरहा और सन्ध्या के मंत्र पूरे हुये तब बाहर सड़क पर आया और वारण्ट मांगा, वारण्ट पढ़ कर मैं तांगेपर बैठ गया—इतने में जनता न जाने कहां से टूट पड़ी, सैकड़ों आदमी इकट्ठे हुये स्टेशन की ओर के मार्ग में बड़ी भीड़ होगयी, इस लिये मैंने कोतवाल से कहा कि पोलिस लाइन रोड़ से होकर कचहरी में से निकल चलो, और पब्लिक से कुछ मत कहो मैं इन को शान्त करदूंगा। कोतवालने कहा बहुत अच्छा। जनता से मैंने कहा जेल के फाटक पर मिलो और वह 'वन्देमातरम्' "जय" आदि बोलती हुई वहां पहुँची। मैंने शान्तिपूर्वक कार्य करते रहने का उपदेश दिया और जेल के फाटक के भीतर चलागया— फिर भी भीड़ बहुत देर तक रही। थोड़ी देर में बा० बुलाकीराम आये और मिलगये। थोड़ी देर में मेरा सामान भी आगया—अन्धेरा होने को था। कि ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेट हरशनरोडर भी आये और बात चीतकर गये। ता० १३ को मेरा फैसला होगया— देहरे के सभी वकील और रईस भीतर जेल में मिलने आये थे। पन्द्रह मास का कठोर कारावास मिला। बीस दिन देहरे में, एक मास मुरादाबाद जेल में १॥ मास बरेली जेल में, १॥ मास लखनौ जेल में और शेष १०-१० मास रायबरेली जेल में रहा—छोटे बड़े सभी

जेलों में रहा, छोटी बड़ी सभी क्लासों में रहा। सुख दुःख जो होने थे वे सब हुये—उसकी रामकहानी लिखने का यह अवसर नहीं है। कर्मधर्म संयोग देखिये १९२१ में भी अमरनाथ जी के घनस्पति औषधालय से पकड़ा गया और १९३० में भी वहीं से गिरफ्तार हुआ। १९२१ में देहरे में बा० मुरलीमनोहर जेलर थे, फैजाबाद में १९३० में भी वही जेलर मिले। साथी भी प्रायः १९२१ के ही पोलिटिकल भाई थे थोड़े दिनों के पश्चात् चौ० हुलास वर्मा भी दण्डित होकर बरेली जेल में आये और मेरे साथी बनगये। लखनौ जेल से यह फैजाबाद गये और मैं रायबरेली पहुँचा। डोईवाला के कृष्णदत्त वैद्य को २॥ वर्ष का कठोर कारावास मिला। भोगपुर के पं० ईश्वरानन्द, सेठ वल्लभदास और चन्दनसिंह को ९-९ मास का कठोर कारावास मिला। जाखन के ठा० मानसिंह व झण्डा लखौण्ड के ब्रजलाल फराशी को ६-६ मास का कठोर दण्ड मिला पं० हरिशंकर शर्मा पुस्तकों वाले भी जेल में पहुँचे। यह सब मेरे पीछे हुये। ठा० मानसिंह और पं० ब्रजलाल दोनों ने वीरता से जेल के दिन बिताये। ब्रजलाल जी ने सहारनपुर जेल में बेतों की अमानुषी सज़ा भी भुगती— मुझे मालूम हुआ कि मेरे पीछे हमारे भक्त सेवक पं० रामब्रानन्द जी जो तिलक भूमि में मेरे साथ रहते थे और सेवक क्या रक्षक थे, प्रत्येक काम में हाथ बटाते थे और हमारे विश्वासपात्र थे, बड़े दुखी हैं। मैंने उनके पास उत्साह जनक सन्देश भेजा।

बस मैं देहरे के बाहर होगया, वर्मा जी देहरे के बाहर हो गये, कृष्णदत्त वैद्य बरेली सेण्ट्रल जेल में पहुँचे, ठा० मानसिंह और पं० ब्रजलाल सहारनपुर जेल में पहुँचे। मानसिंह जी को डिस्ट्रि-

क्ट जेल बरेली में भेज दिया गया-अब हमारे पीछे देहरे में क्या हुआ सुनिये,—

१९२२—१९२३

उन्नीस सौ बाईस और उन्नीस सौ तईस कीसन्धि में कांग्रेस का सब भार ला० कुन्दनलाल भोगपुरी, बा० बुलाकीराम जी, ठा० मनजीतसिंह जी, ला० चण्डीप्रसाद जी, बा० नारा-णदास जी, वैद्य अमरनाथ जी आदि पर पड़ा। हुलासवर्मा जी १९२२ जुलाई में जेल से छूट कर आये और भाग लेने लगे। देहरे ज़िले की द्वितीय राजनैतिक कानफरन्स की तैयारियां खूब हुई किन्तु डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने १४४ लगादी इसलिये सभा-पति पण्डित हरकरणनाथ की इच्छानुसार कानफरन्स डोईवाला में की गयी और एक प्रकार से अच्छा ही हुआ क्यों कि इससे परवा दूनमें खूब जागृति हुई। कानफरन्स एक ही दिन रही।

हमारे भाग्य विधाता श्री हरचनरोडर कांग्रेस के कार्य को कुचलने में सदैव सजग रहते थे। जो स्वयं सेवक बाजारों से जलूस निकाल कर जाते थे उनपर मार पड़ती थी, कभी कभी स्वयं हरचनरोडर साहब हंटर से स्वयं सेवकों की खबर लेडालते थे। ठा०मनजीतसिंह भी दो--चार हंटर खा चुके थे। भोगपुर, डोईवाला, थानों, मालदेवता के स्वयं सेवकों ने खूब बहादुरी दिखलायी थी। देवियां भी जलूस बनाकर बाज़ार में 'जय' कहती हुई निकलती—इस विषय में श्री बा० रामप्रसाद जी आर्यकर्णपुर वालों की पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी का नाम लेने योग्य है।

तिलक भूमि में बा० बुलाकीराम जी प्रधान की अध्यक्षता में एक बृहत्सभा हुई जिसमें ५—६सहस्त्र जनता एकत्रित थी। श्री हरचनरोडर साहब ने आज्ञा दी कि सभा नाजायज़ है बरखास्त की जावे पर वीर बा० बुलाकीराम ने साहब की एक न सुनी, सभा होती ही रही। लोग भी टस से मस नहीं हुये। साहब स्वयं हण्टर लेकर जनता को पीटने लग गये। पुलिस डण्डे बरसाने लगी किन्तु सब निष्फल हुआ तब साहब ने गुरखा पलटन के सिपहियों को गोली दागने का हुक्म दिया। गोरखा सिपाहियों ने कहा कि निहत्थों पर हम गोली नहीं चलायेंगे। इनके हाथों में हथियार होते तो हम अभी दाग देते। साहब बहुत निराश हुये। जनता की शानदार विजय हुई। पीछे सुना गया कि इन गुरखा सिपाहियों का नाम फौज में से काट दिया गया।

अक्टूबर में प्रांतीय राजनैतिक कानफरन्स देहरे में हुई और ऐसी शान की हुई कि गया कांग्रेस को भी इसने फीका कर डाला, जो लोग गया कांग्रेस में गये थे वे स्वयं प्रशंसा कर रहे थे। पण्डित मोतीलाल जी नेहरु सभापति थे इस कानफरन्स का विवरण हमने अन्यत्र दिया है। गया कांग्रेस में काऊन्सिल के प्रश्न पर दलबन्दी हो चुकी थी। यहां देहरे में इसी प्रांतीय कानफरन्स में प्रांतीय कमेटी ने भी इसी प्रश्न को अपनाया। बस काऊन्सिल प्रवेश के प्रश्न के साथ ही देश का वातावरण बदल गया, लोग जेलों से छूट छूट कर आने लगे, सर्वत्र हिन्दू-मुसलिम प्रश्न उठने लगे, झगड़े होने लगे इसतरह १९२३ का प्रारम्भ हुआ स्वराज्य दल ने काऊन्सिल में प्रतिरोध की नीति को अपनाया

और करने लगा तैयारी १९२३ में निर्बाचन के लिये जंग की। सरकार ने जब देखा कि वातावरण ठंडा पड़ता जारहा है तब भरी हुई जेलों को खाली करना प्रारम्भ किया। पोलिटिकल कहलाने वाले कैदी छोड़े जाने लगे किन्तु जिनजिलों के मैजिस्ट्रों ने अपने यहां के कैदियों को नहीं छुड़वाना चाहा, वे नहीं छोड़े गये। सारे यू० पी० में इस प्रकार के न छोड़े जाने वाले कैदी थे कोई ५०-६०, । हम भी इन्हीं में थे । स्वा० विचारानन्द जी दिसम्बर १९२२ में ही छूट कर आये थे । जब समस्त देश में झगड़े खड़े होगये थे तब देहरा भी इस झंझट से क्यों बचता। स्वा० जी जब छूट कर आये थे तब वे हमको रायबरेली जेल में मिले थे और उन्हों ने सब स्थिति को समझाया था, सारांश १९२३ वर्ष कोई अच्छा वर्ष नहीं था। १९२२ चौड़ा चौड़ी के कारण नष्ट हुआ, फिर सिविल डिसओबीडियन्स कमेटी ने कुछ ढीला कर दिया। १९२३ गृह कलह के लिये प्रसिद्ध रहा। हम ता० १३ को प्रातः ७ बजे रायबरेली की जेल से छूटे और जेल के दरवाजे से बाहर आये ही थे कि बा० नारायणदास जी का तार मिला कि सीधे चले आओ सायंकाल एक व्याख्यान देकर देहरे का टिकिट लेकर हम रवाना हुये। १४ को देहरेमें म्युनिसिपैलिटीकी मेंबरी का चुनावथा। जब हम लक्सर पहुँचे तो क्या देख रहे हैं कि नारायणदास जी 'शास्त्री शास्त्री' करके चिल्ला रहे हैं। हम दोनों मिले और खूब मिले। देहरे के समस्त वृतांत सुनकर कुछ दुख, कुछ आश्चर्य, कुछ हर्ष हुआ। जब एक्सप्रेस देहरे स्टेशन पर पहुँची तब धूम धाम का स्वागत हुआ। बा० बुलाकीराम जी, वर्मा जी, राठौर जी फारुखी जी, वैद्य जी, स्वा० जी, लाला चण्डीप्रसाद जी और

आदि प्रमुख कार्य कर्त्ता और देहरे के प्रायः सभी लोग प्रमुख जन उपस्थित थे। स्टेशन से बाहर आये तो पन्द्रह मास अर्थात् पूरे ४'१५ दिन के पश्चात् देहरे की जनता और ग्राम के सैकड़ों भाइयों के दर्शन हुये और हमने उनके दर्शन से अपने को कृत-कृत्य माना। नगर प्रवेश हुआ। जलूस मसजिद के पीछे की ज़मीन में पहुँचा वहां थोड़े शब्दों में जनता को धन्यवाद देकर फिर हम चले। जलूस बा० ज्योतिःस्वरूप जी के ज्योतिःसदन तक गया। वहीं हम बा० हंसराज कक्कड़ के अतिथि हुये। वहां ग्याहर बजे तक विश्राम करके चुनाव की रणस्थली पर पहुँचे। स्वामी विचारानन्द जी हिन्दु सभा के उम्मीदवारों की सहायता कर रहे थे। कई उम्मीदवार स्वतन्त्र थे और १—बाबू बुलाकी-राम जी २—ठाकुर मनजीतसिंह जी ३—चौ० विहारीलाल जी ४—पण्डित द्वारकानाथ रैना, ये कांग्रेस के उम्मीदवार कामयाब हुये। उधर बाबू उग्रसेन जी बैरिस्टर भी चुनाव में आगये। इस प्रकार सतरह उम्मीदवारों में कांग्रेस के उम्मीदवारों को ही कामयाबी मिली। मुसलमानों की ओर से श्री फखरुद्दीन फारुखी चुने गये। इसप्रकार देहरे में स्वराजिस्टों की पहिली शानदार विजय हुई जो कि सभी के सभी कांग्रेस के प्रमुख कार्य कर्ता थे। श्री बा० उग्रसैन जी चैयरमैन चुने गये। शंकर सदन में हमने निर्वाचित सदस्यों की एक सभा बुलायी थी उसमें यही परामर्श हुआ था। डिस्ट्रिक्टबोर्ड के चुनाव में कांग्रेस के उमीद-वारों को उतनी कामयाबी नहीं हुई। इस चुनाव के पश्चात हम ज्वालापुर लौटे और अक्तूबर तक वापस नहीं गये। देहरे में काऊन्सिल चुनाव की तैयारियां हो ही रहीं थीं। अक्तूबर में देहरे का वातावरण गरम होने लगा। जिधर देखो उधर चुनाव

की चर्चा के सिवाय और कुछ भी नहीं था। हम अक्तूबर में पहुंचे तब उम्मीदवारी के लिये चार नाम सुनायी दिये १—ठा० मनजीत सिंह राठौर (२) श्री श्यामलाल वकील (३) श्री शमशेर बहादुर (४) श्री दर्शन लाल जी बैरिस्टर—प्रथम प्रथम हम उदासीन रहे पर कब तक उदासीन रहते। ज़िमीदार लोग श्री शमशेरबहादुर के पक्ष में गये, वैश्य लोग और नौकरशाही के पिट्ठू श्री दर्शनलाल जी के पक्ष में हो गये, प्रजा राठौर जी के पक्ष में रही थी श्री श्याम लाल जी के लिये वकील मण्डल प्रयत्न शील रहा। मुख्य प्रतिद्वन्द्विता राठौर जी और दर्शनलाल बैरिस्टर इन दोनों में रही। स्वा० विचारानन्द जी, चौ० बिहारी लाल जी, वर्मा जी, वैद्य जी, और हमने दिन रात एक कर डाला और देहरे ज़िले का कोना कोना माप डाला— एक बला की लड़ाई थी। दिन तो थे जाड़े के किन्तु ज़िला इस कदर गरम हो रहा था कि पूछिये नहीं। स्वराजिस्टों की यह दूसरी विजय थी। ठाकुर साहब विजयी हुये। और डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने आपको बधाई दी। जनता ने अभिनन्दन किया।

१९२३—१९२६

१९२३ से १९२६ तक कौन्सिलों और असेम्बलियों में स्वराज्य पार्टी का ही बोल बाला रहा—और देहली की स्पेशल कांग्रेस में स्वराजिस्टों के हाथ और मजबूत करादिये थे इसलिये कांग्रेस कमेटियों में भी अधिकारी मण्डल प्रायः स्वराज्य दल के ही रहे १९२३ से १९२६ तक देहरे की कांग्रेस कमेटी भी बा० बुलाकीराम जी प्रधान और मनजीतसिंह जी राठौर के हाथ में रही।—

भारत भर में हिन्दू मुसलिम, संगठन और तंजीम के प्रश्न ने उथल-पुथल मचादी और इस प्रवाह में सर्वत्र बहुत से कांग्रेस मैन भी बहगये और सर्वत्र स्थानिक कार्यकर्त्ताओं में मनमुटाव बढ़ता ही गया। बाहर कांग्रेस का काम घटती पर, संगठन और तंजीम का काम बढ़ती पर रहा तथापि स्वराजिस्ट दल एक हाथ से कांग्रेस को और दूसरे हाथ से काऊन्सिल और असेम्ब-लियों को संभालता रहा अथवा यूं न कहिये कि कांग्रेस काम साक्षात् कौऊन्सिलों और असेम्बलियों की चार दिवारी के भीतर होता रहा और अच्छी तरह होता रहा—वहां सब से पहिली विजय यही थी कि सरकार महात्मा गान्धी जी को छोड़ने में मजबूर हुई। १९२३ में स्पेशल कांग्रेस देहली में हुई, श्री अबुलकलान आज़ाद सभापति थे— मौलाना मुहम्मदअली भी आगये थे—१९२४ में महात्मा जी छूटे और अहमदाबाद की औलइण्डिया कांग्रेस में महात्मा जी ने स्वराजिस्टों से हार मानली और सब बागडोर उनके सुपुर्द करके चर्खासंघ का काम अपने हाथों में लेकर शान्ति से वहीं साबरमती आश्रम में दिन विताने लगे यह चर्खा असोसियेशन कांग्रेस के अधीन थी किन्तु वैसे स्वतन्त्र थी। इससे संघटनात्मक कार्य महात्मा जी के हाथों में और विघटनात्मक कार्य स्वराजिस्ट दल के हाथों में गया—इसी ज़माने में हिन्दूलोग प्रायः हिन्दू सभा का साथ देते रहे और कट्टर कांग्रेसमैन कांग्रेस को संभालते रहे और मुसलमान कांग्रेस से दूर भागते रहे—यही दशा सर्वत्र रही तो भी देहरे में यही दशा रही। श्री स्वा० विचारानन्द जी हिन्दू सभा का कार्य संभालते रहे और ठा० मनजीतसिंह, श्री हुलासवर्मा, पं० अमरनाथ

वैद्य, रामस्वरूप नवकोटि, ला० चण्डीप्रसाद बा० नारायणदास जी, बा० तुलाकीराम जी आदि कांग्रेस का भी ध्यान रखते रहे। १९२६ में कौन्सिल चुनाव में जो प्रतिद्वन्द्विता हुई उसमें हमने भाग नहीं लिया। डा० मनजीतसिंह और बा० उग्रसेन जी का मुकाबला था—एक ओर से पं० मोतीलाल जी आगये तो दूसरी ओर से ला० लाजपतराय पधारे, अन्ततः मनजीतसिंह चुनेगये। १९२७ में बीचमें जो नया चुनाव हुआ उसमें श्री महावीर त्यागी प्रधान और स्वा० विचारानन्द मन्त्री चुने गये। इस से पूर्व पं० अमरनाथ वैद्य प्रधान और मन्त्री डा० मनजीतसिंह थे। इस नये चुनाव में तहसील का काम पूर्ववत् पं० नारायणदत्त जी छंगवाल व ला० चण्डीप्रसाद जी के हाथों में रहा—१९२९ के चुनाव में (अक्तूबर) श्री महावीर त्यागी प्रधान ज़िला, श्री चौ० बिहारी लाल जी मंत्री ज़िला। श्री छंगवाल जी प्रधान तहसील और श्री. सोमेन्द्रमोहन मुकरजी मन्त्री तहसील रहे सो अब तक हैं। श्री स्वा० विचारानन्द जी टाऊन कांग्रेस कमेटी के प्रधान रहे—महात्मा गान्धी यू० पी० के दौरे के सिलसिले में ता० १६ अक्तूबर को देहरे पहुँचे—आपका अपूर्वस्वागत हुआ—इसी अवसर पर तृतीय ज़िला कानफरन्स भी थी जिसका विवरण अन्यत्र दिया गया है हम भी काश्मीर से आपहुँचे थे। महात्मा जी की यात्रा का विवरण भी अन्यत्र दिया गया है दिसम्बर में कांग्रेस के लिये डेलीगेटों के चुनाव में शहर और ग्रामों के डेलीगेटों में बड़ी स्पर्द्धा रही किन्तु ईश्वर की कृपा से शहर और ग्राम दोनों के डेलीगेट चुनेगये और परस्पर का मनमुटाव मिटा। कोई प्रान्त से चुने गये और कोई ज़िले से और परस्पर मनोमालिन्य का कोई कारण ही नहीं रहा—मेरठ डिविजन की ओर से ओल-

इण्डिया कांग्रेस कमेटी के लिये श्री चौ० बिहारीलाल जी तथा श्री नरदेव शास्त्री मेंबर चुने गये। प्रान्तीय कमेटी ने इनको ही चुना।

लाहोर कांग्रेस (१९२९ दिसम्बर)

लाहोर कांग्रेस में प्रान्त तथा ज़िले से बीस डेलीगेट थे किन्तु वैसे दर्शक रूप में दो-सौ से ऊपर व्यक्ति गये थे। इस से पूर्व कलकत्ते की कांग्रेस में भी सौ से ऊपर देहरे के लोग गये थे। देहरे के लोग वैसे आपस में भले ही लड़ते रहें कांग्रेस के काम में पूरा शौक रखते चले आये हैं—जहाँ कांग्रेस ने आवाज़ उठायी कि झट इकट्ठे हो जाते हैं।

ता० २६ जनवरी प्रातः (१९३०)

आज स्वतन्त्रता का दिवस था। देहरे में अपूर्व झण्डा-रोपण तथा झण्डाभिवादन समारोह हुआ। फालतूलाइन के मैदान में दोसहस्र नर नारियों ने स्वतन्त्रता का झण्डा ऊँचा किया और एक स्वर से झण्डे का गीत गाया।

राष्ट्रीय झण्डा।

झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
सदा शक्ति बरसाने वाला,
प्रेम सुधा सरसाने वाला।

वीरों को हर्षाने वाला,
मातृभूमि का तन मन सारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

स्वतन्त्रता के भीषण रण में,
लखकर बढ़े जोश क्षण क्षण में ।
कांपे शत्रु देख कर मन में,
मिट जावे भय संकट सारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

इस झण्डे के नीचे निर्भय,
लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय ।
बोलो भारत माता की जय
स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

आओ प्यारे वीरो आओ,
देश धर्म पर बलि बलि जाओ ।
एक साथ सब मिल कर गाओ,
प्यारा भारत देश हमारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

इसकी शान न जाने पावे,
चाहे जान भले ही जावे ।
विश्व विजय कर के दिखलावे,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

सायंकाल को एक विराट जलूस दर्शनी दरवाजे से निकल कर फालतू लाईन के मैदान में पहुँचा। इसमें हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, जैन सब भेद भाव को भूल कर सम्मिलित हुये। डी० ए० वी० कौलेज के छात्रों का समारोह भी अपूर्व था। ओ, यह ७-८ सहस्त्र का जमघट और यह स्वतन्त्रता की घोषणा का दिवस वह ठौर देखते ही बनता था। गीत के पश्चात् चौ० बिहारी लाल मन्त्री ज़िला ने ऐलान को पढ़ कर सुनाया-जिसकी पुष्टि जनता ने की- हमने औलइण्डिया कांग्रेस कमेटी के मेंबर की हैसियत से स्वतन्त्रता के ऐलान छाप कर सर्वत्र जिले में पहिले ही भेज दिये थे। ऋषीकेश, डोईवाला, भोगपुर च्हूड़पुर तथा अन्य बीसियों ग्रामों में झण्डाभिवादन समारंभ हुआ। देहरे के बाज़ार सजाये गये थे और सर्वत्र कांग्रेस के झण्डे दिखायी पड़ते थे। कहीं कहीं दरवाजे भी बनाये गये थे। सायंकाल पचासों ने दीपमाला मनायी। पुलिस उन दुकानदारों के नाम लिख लिख कर ले जाती रही जिन्होंने झण्डे लगाये थे पर कोई दूकानदार भयभीत नहीं हुआ।

बस यहीं से कांग्रेस के शुभदिन प्रारम्भ हुये—कांग्रेस संघठन तथा प्रचार का काम प्रारम्भ हुआ। श्री स्वा० जी, त्यागी जी, वर्मा जी, रामस्वरूप नवकोटि, सोमेन्द्रमोहन मुकर्जी तहसील कमेटी ने खूब काम किया। हमने भी भोगपुर मालकोट गढ्ढ रेंज में प्रचार और प्रसार किया।

इधर अहमदाबाद में ता० २० मार्च को औल इण्डिया की बैठक थी। महात्मा गांधी जी तो १२ मार्च को ही साबरमती

आश्रम से डांडी में सत्याग्रह के लिये प्रस्थान कर चुके थे और यह स्मरण रखने की बात है कि महात्मा जी के अनुयायी अस्सी स्वयंसेवकों और सत्याग्रहियों में आठ नम्बर पर टके जमादार रूप-सिंह के राजकुमारी केस में भारत प्रसिद्ध पुत्र श्री खड्गबहादुर सिंह जी भी थे। ता० २० को गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद में आल इण्डिया की बैठक हुई जिसमें नमक सत्याग्रह की बात पास हुई। श्री जवाहरलाल जी के अन्तिम शब्द ये थे कि "मैं आशा करता हूं कि आप में से कोई भी बाहर न रहेगा, सब जेल में पहुँचेंगे" औल इण्डिया की बैठक करके, सत्याग्रह आश्रम साबरमती में महात्मा जी के निवासस्थान हृदय-कुञ्ज को प्रणाम करके हम जम्बूसर (भड़ौच) गये। वहां हम महात्मा जी से मिले, सत्याग्रहियों के दर्शन किये और वीर खड्गबहादुरसिंह का सन्देश देहरा वासियों के नाम लेकर लौटे। ता० २३ को देहली आये। तारीख २४ को ज्वालापुर और २५ को देहरे लौटे, क्यों कि वहां से हमको भोगपुर कानफरन्स में जाना था जहां कि हमारे भोगपुर के भाइयों ने समारोह कर रक्खा था—

खड्गबहादुर का सन्देश।

(संक्षेप)

"देहरा वासियो, देहरादून नौकरशाही का गढ़ है तुम भी दिखलाओ कि देहरादून राजनैतिक आन्दोलन का केन्द्र है। क्या आप एक सहस्र स्वयंसेवक सत्याग्रही इस स्वतन्त्रता के संग्राम में नहीं भेज सकते। मैं आशा करता हूं कि देहरावासी इस संग्राम में किसी से भी पीछे नहीं रहेंगे और तन, मन, धन, जन से, प्राणपण से उद्यत रहेंगे। मैं आशा करता हूं कि मेरे

गुरखा भाई भी इस अहिंसात्मक सत्याग्रह में सम्मिलित होकर अपनी जाति का नाम उज्ज्वल करेंगे" इत्यादि ।

असली बात यह थी कि दारजिलिङ्ग के गुरखा सिपाही ने अपने भाइयों पर गोली चलाकर जो पाप किया था उसके प्रायश्चित रूप में वीर खड्गबहादुर और दलबहादुर के पुत्र महावीर ने सत्याग्रहियों में अपना नाम लिखाने की महात्मा जी से प्रार्थना की और महात्मा जी ने इस बात को स्वयं स्वीकार कर लिया। खड्गबहादुर तो पहले भी सत्याग्रह आश्रम में शिक्षा प्राप्त कर चुके थे ।

भोगपुर कानफरन्स ।

(ता० २७—२८ मार्च)

हम पहले ही ता० २५ को पहुँच चुके थे। पीछे से श्री त्यागी जी, स्वा० जी, श्रीरामकृष्ण जी, डुंगवाल जी, शुभानन्द जी सोमेन्द्रमोहन मुकर्जी, रामस्वरूप नवकोटि आदि जत्था बांधकर पैदल ही देहरे से ग्रामों में प्रचार करते हुये तारीख २७ को प्रातः आश्रम में पहुँचे। आपको स्वागत के साथ भोगपुर में लाया गया पं० नारायणदत्त डुंगवाल के हाथों से ध्वजारोपण विधि हुई। श्री महावीर त्यागी के सभापतित्व में दो दिन वह धूम रही कि देखते बनता थी। मालकोट गढ़ूल रंग खिल गया। ऋषिकेश से स्वामी केवलानन्द और स्वा० गोविन्दानन्द भी आपहुँचे थे। स्वदेशी, विलायती माल बहिष्कार, मद्य पान निषेध, सिगरेट निषेध, संगठन आदि पर व्याख्यान हुये, सत्याग्रह के लिये मालकोट गढ़ूल, भोगपुर आदि से ४० स्वयंसेवक लिखे गये, यहां से जत्था रानीपोखरी पहुँचा और तारीख २९ को प्रातः दस बजे देहरे आ

गया। भोगपुर का आतिथ्य और उत्साह चिरस्मरणीय रहेगा। प्रधान पं० रामनाथ दत्त जी, मन्त्री पं० ज्योतिःस्वरूप जी, ठाकुर हरिसिंह जी आदि का पुरुषार्थ प्रशंसनीय रहा।

प्रदर्शिनी का बहिष्कार।

देहरादून में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की प्रदर्शिनी होने वाली थी, ता० १ अप्रैल से ता० ८ तक की तारीखें रक्खी गयी थीं। उधर स्थानिक कार्यकर्त्ताओं में बहिष्कार के विषय में मतभेद हो रहा था—श्री स्वा० विचारानन्द जी, पं० अमरनाथ वैद्य आदि बहिष्कार पक्ष में थे। श्री त्यागी जी, चौ० बिहारीलाल जी, रैना जी आदि चाहते थे कि काम बहुत देर में उठाया गया है, साधन पास नहीं है इसलिये कांग्रेस कमेटी केवल अपना विरोध जनता के सम्मुख प्रकट करे और बस उसका कर्त्तव्य हो चुका—अन्त में बहिष्कार की बात तय हो गयी। ता० १ को अमरनाथ वैद्य जी के वनस्पति भवन से केवल बीस व्यक्ति हरि का नाम लेकर 'वन्देमातरम्' कहते हुये चल पड़े, बाजार में लोगों को समझाते हुये यह जत्था नुमायशगाह में पहुँचा और धरना देने लगा, इस जत्थे में सब से आगे थे स्वा० विचारानन्द जी और पण्डित अमरनाथ वैद्य—वर्षों के पश्चात् आज इस जुगल जोड़ी को साथ और हाथ में हाथ मिलाकर चलते हुये देखकर लोगों के आश्चर्य की सीमा नहीं रही—उसके पीछे थे श्री त्यागी जी, पं० विद्याव्रत जी, उनके पीछे श्री रामस्वरूप नवकोटि और बिहारीलाल जी। हम थे सबसे पीछे किन्तु पोस्ट औफिस के सामने के तुन के पेड़ के नीचे हमको ही संचालक होकर बैठना पड़ा—दो दिन तो

हम वहीं सहस्रधारा के पास धूप में ही रहे, पीछे से चौधरी बिहारीलाल जी ने एक तमोटी लगवायी और बाकायदा काम प्रारम्भ हुआ। बोर्ड लग गया, नोटिस बांटे गये, मनादी कर दीगयी, एक लम्बा कद्दू (जो कि वैद्य पण्डित अमरनाथ जी के वनस्पति भवन का था) तुन के पेड़ में लटकाया गया, पेड़ पर तिरंगा झन्डा फहराने लगा। लोग चकित थे कि यह मुट्ठी भर आदमी इतनी बड़ी नुमायिश का बहिष्कार क्यों कर कर सकेंगे किन्तु भगवान की मर्जी ही ऐसी थी कि कांग्रेस को इस बहिष्कार में यश मिले। बीस के तीस, तीस के पचास, पचास के सौ करते करते स्वयंसेवकों की संख्या ३६४ होगयी, उदार दानियों ने पास ही पञ्चायती मन्दिर में भण्डार खोल दिया। फिर क्या था, सब काम सरल हो गये, पुलिस ने धमकाया, तहसीलदार ने घुड़कियां दीं, कलेक्टर ने हमारे तमोटी को उखाड़ डालने का आदेश दिया, हिन्दू-मुसलिम प्रश्न लाकर मुसलमानों को भड़काया गया किन्तु हम टस से मस नहीं हुये। श्री बा० दर्शनलाल बैरिस्टर चाहते थे कि समझौता होजाय और एक दिन एक छोटीसी समझौते की सभा भी हुई थी किन्तु हमारी सारी शर्त्तों को वे लोग नहीं मान सके थे इसलिये समझौते की बात रह गयी—नुमायिश में एक पैसे का भी विलायती कपड़ा नहीं बिकता था इसलिये दूकानदार आकर बड़ी मिन्नतें करते रहे किन्तु जब हमारी सारी शर्त्तों को बोर्ड वाले नहीं मानते थे तब हम भी क्या करते—यह बहिष्कार इतना सफल हुआ कि बहिष्कार का हौआ सर्वत्र छागया—नौकरशाही ने सरकारी नौकरों को नुमायिश में जाने का हुक्म दिया, कचहरियां बहीं

नुमायिश में लगायीं, सिनेमा के खेल मुफ्त दिखलाने का प्रबन्ध किया, किन्तु नुमायिश सर्वथा विफल रही—मि० स्मिथ ने बहिष्कार वालों को भला बुरा भी कहा नुमायिश की कामयाबी के गीत भी गाये गये, नुमायिश के दूकानदारों की ओर से 'बाईकाट' नहीं 'भाईकाट' नामक एक इश्तिहार भी बांटा गया, किन्तु हमारी कामयाबी बढती ही गयी, यहांतक कि उन्होंने नुमायिश के और ४-५ दिन बढाये—एक दफा जो उनका रंग फीका पड़ने लगा वह फीकापन आखिर दिन तक बढ़ता ही गया,—जिन बाजार वालों ने नुमायिश में दूकानें ली थीं उनकी यही शिकायत रही कि पहले से हमको मालूम हो जाता तो हम दूकानें ही न लेते—जिन दानियों ने नुमायिश बहिष्कार में भण्डार आदि में सहायता दी उनके नाम हम इसलिये नहीं लिख सकते कि उनकी स्वयं इच्छा है कि उनके नाम प्रकट न किये जायं—भोगपुर, हर्रावाला, राणीपोखरी, डोईवाला, तुनवाला, रायपुर, मालदेवता, जाखन, धोरण, डाण्डालखौंड, राजपुर, फुलसनी, पौंधा, विधौली, कौलागढ़, काण्डली, माजरा, द्वारा, अजबपुर, सुन्दरवाला, ऋषीकेश, गढ़ी—डाकरा, मसूरी आदि के और न जाने कहां कहां के हमारे पास नाम न लिखा कर भी चुपचाप काम करने वाले वालण्टियरों ने शान्ति से, सहनशीलता से दिनरात एक करके नुमायिश बहिष्कार को सफल बनाया—हमारी तमोटी के उखाड़ने का मामला श्री बा० उग्रसेन जी चेयरमैन की दूरदर्शिता से रफा-दफा हुआ नहीं तो उसी बात पर दूसरा सत्याग्रह चल पड़ता—ऋषीकेश के स्वा० केवलानन्द जी, श्री त्यागी जी, श्री स्वामी विचारानन्द जी, श्री राजपत पाण्डे, इन्होंने घोर परिश्रम किया—डी०ए०वी० कौलेज के छात्र भी

सहायता देते रहे। श्री डा० मनजीतसिंह जी परामर्श देते रहे। श्री डंगवाल जी स्वयंसेवकों के नायक थे और आपने जो परिश्रम उठाया वह देखने योग्य था। राजरत्न पाण्डे की दक्षता को देख कर हम प्रसन्न हुये— ला० श्रीचन्द जी, ला० काशीराम जी, ला० शंकरलाल जी, बा० जयन्तीप्रसाद जी, पं० निरञ्जनदेव जी आदि बहुत सहायता देते रहे—देवियों में श्रीमती रामलुभाई, श्रीमती आशादेवी, श्रीमती भुवनेश्वरीदेवी, श्रमती कस्तूरदेवी— आदिने बहुत काम किया। नुमायिश के दिन और महात्मा जी की ऐतिहासिक डाण्डी की यात्रा के दिन एक साथ आपड़े थे। यहाँ और भारत में एक विचित्र चहल पहल थी। हमने एक ऐसा प्रबन्ध किया कि जिससे जनता मुग्ध होगयी। प्रतिदिन टेलीफोन द्वारा समाचार लेकर सायंकाल चार बजे अपने कैम्प के सामने समाचार सुनाने का प्रबन्ध कर डाला था। लोग ठीक समय पर वहीं एकत्रित होजाते और समाचार सुनकर चले जाते—फिर सायंकाल को श्री त्यागी जी, श्री पं० विद्याव्रत जी, श्री वर्मा जी शहर में जाथों के साथ घूमते और समाचार सुनाते। लोगों को समाचार पत्रों से एक दिन पूर्व ही समाचार मिलने लगे तब वे क्यों न प्रसन्न होते—इस तरह नुमायिश बहिष्कार का यह फल हुआ कि—

(१) कांग्रेस की आवाज़ जिले के कोने कोने तक पहुँची।
(२) सत्याग्रह संग्राम के लिये स्वयं सेवक मिलने लगे।
(३) कांग्रेस कमेटियों की स्थापना होने लगी—
(४) लोगों में स्वयं स्फूर्ति आने लगी और सहायता देने लगे
(५) वैयक्तिक मतभेद विलीन होगये और कांग्रेस के

कार्यकर्त्ता मिलकर बैठने और कार्य करने लगे—
(१) कांग्रेस का बल बढ़ने लगा—

जिस दिन जुमाथिश खतम होने को थी उससे पहले दिन सायं समस्त स्वयंसेवकों का फोटो लिया गया, बधाई दीगयी और शहर भर में जलूस निकालागया। दर्शनीदरवाज़े सभा हुई, नुमायिश बहिष्कार की रिपोर्ट सुनायी गयी और इस प्रकार यह कांग्रेस की शानदार विजय हुई। इसी सिलसिले में एक अमेरिकन कम्पनी यहां आयी थी—पं० जवाहरलाल राष्ट्रपति पकड़े गये थे उस निमित्त हड़ताल में वह शरीक नहीं हुई इसलिये उसका भी बायकाट रहा और खूब रहा और वह बेचारी कम्पनी अपनासा मुंह लेकर सहारनपुर गयी—वहां भी उसकी यही गत हुई, आगे जहां जहां वह गई वहां वहां उसके पीछे बहिष्कार भी पहुँचा—

लवण काण्ड।

हमने श्री डंगवाल जी और श्री राजपत पाण्डे को खारेखेत में भेजकर पता चलाया कि वहां नमक बनसकता है या नहीं—जब हमने वहां के लूणनदी के झरने का जल साफ कर देखा, बने हुये नमक की परीक्षा की तब हम इस निश्चय पर पहुँचे कि यहां देहरे में भी लवण क़ानून भङ्ग होसकता है नहीं तो हम महात्मा जी से अम्बुसर में कह आये थे कि जंगलात का सत्याग्रह होसकता है, लवण का नहीं। महात्मा जी ने जंगलात के सत्याग्रह को मना करदिया था। पीछे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने भी यही आज्ञादी कि लवण सत्याग्रह ही किया जाय—देहरादून के भाग्य अच्छे थे जो उसको खाराखेत मिलगया—खाराखेत ने देहरे की

लाज रखली और देहरे के नाम को अमर करदिया—ख़ैर इस सत्याग्रह के प्रारम्भ होने से पूर्व चिधौली के श्री पं० सुन्दरलाल जी के निमन्त्रण पर हम लोग ता० १६ को चिधौली पहुँचे और वहां खूब ज़ोर का जलसा रहा—सभापति हम ही थे। श्री त्यागी जी, श्री बिहारीलाल आदि के भाषण हुये। स्वा० केवलानन्द जी भी खूब गरजे। पं० डंगवाल जी ने स्वयंसेवकों के लिये अपील की और उसी दम लगभग ५० स्वयंसेवक मिले—हमने स्वयं जाकर खारेखेत का निरीक्षण किया—इसी सत्याग्रह पर विचार करने के लिये जिला कांग्रेस कमेटी बुलायी गयी और नैशनलस्कूल में यह मीटिंग हुई। इस से पूर्व प्रातः झण्डाभिवादन समारोह दर्शनीदरवाजे हुआ।

सत्याग्रह कमेटी।

जिला कांग्रेस कमेटी ने पांच व्यक्तियों की सत्याग्रह कमेटी या युद्धसमिति बनादी—

१—श्री नरदेव शास्त्री (संचालक)
२—श्री महावीर त्यागी
३—श्री स्वा० विचारानन्द जी
४—श्री पं० नारायणदत्त डंगवाल (सेनापति)
५—श्री चौ० बिहारीलाल जी

उसदिन सायं जलूस निकाला गया—सभा हुई सत्याग्रह की समस्या समझा दी गयी और होने लगे धड़ाधड़ स्वयंसेवक भरती। अब प्रतिदिन सभाएं करना, स्वयंसेवक भरती करना विशेष समाचारों की डौंडी पिटवाना, भावी संग्राम की तैयारी करना।

आदि आवश्यक कार्य हो गये—श्री गणेशशंकर जी विद्यार्थी डिक्टेटर यू० पी० सत्याग्रह कमेटी से आज्ञा मांगी गयी और वहां से उत्तर आया कि डेढ़सौ स्वयंसेवक तैयार हों तो सत्याग्रह चलाइये।

डेढ सौ स्वयंसेवक हमारे पास होगये थे इसलिये हमने ता०२०-४-३० का शुभ मुहूर्त सत्याग्रह के प्रारम्भ के लिये निकाला। स्वयंसेवक "मैं आगे मैं आगे" मैं पहले जत्थे में, मैं पहले जत्थे में, करके मर जाते थे और दिक़ करते थे। ता० २०-४-३० कोहुलास वर्मा के नेतृत्व में ग्यारह सत्याग्रहियों का जत्था—

खारे खेत

रवाना होगया। दर्शनीदरवाजे में प्रातः ७ बजे सब एकत्रित हुये, देवियों ने तिलक दिया, डिक्टेटर ने उपदेश व आशीर्वाद दिया और बाजेगाजे के साथ यह जत्था चलपड़ा—बाजार का हाल न पूछिये, वह ठाट, वह सजावटें, वह भक्ति, वह भेटें, वह उत्साह, वह उमंगे वह भीड़, वह नवयुवकों का समारोह सब देखने की बात थी। उसदिन लवण क़ानून भंग देखने के लिये लगभग एक सहस्र नरनारी खारखेत पहुँचे थे, ईश्वर जाने इतनों के आतिथ्य को गांव वालों ने कैसे निभाया—बस उसी दिन शाम को कानून भंग होगया। नियम यह था कि जत्था दर्शनी दरवाजे से चलता था, सब लोग उसको विन्ध्याल के पुल तक कौलागढ़ के रास्ते पर विदा कर आते थे। फिर कालागढ़ में उनका स्वागत होता था, विधौली आदि ग्राम वाले उनका वहां का सब प्रबन्ध रखते थे। फिर जब जत्थे के लौटने का समय आता तब विन्ध्याल के पुलसे इसको

धूमधाम से लाते थे, बाजारों में होकर जाते थे, फाल्गू ता० के मैदान में सभा होती थी, नमक बिकता था, सत्याग्रहियों का परिचय कराया जाता था। सत्याग्रहदल के नायक तथा सत्याग्रही स्वयंसेवक अपना अपना अनुभव सुनाते थे और सभा में दूसरे जत्थे के आने की सूचना दी जाती थी। इस प्रकार पहला जत्था आया और सकुशल लौट आया। उस दिन सभापति हम ही थे। इसी जत्थे के साथ दशांकरूप में स्वामी जी और राजपति पाण्डे गये थे और इन्होंने वहां व्याख्यान भी दिये थे। दूसरा जत्था श्री रामस्वरूप नकरौहि के नेतृत्व में गया। ता० २२ को सायंकाल के ५ बजे दर्शनीपुरवाजे से चले—आज न जाने क्यों साथ पुलिस का समारोह था, जिसको देखकर उत्सुकता के कारण सैकड़ों लोग जत्थे के साथ होगये—यह जत्था ता० २४ को प्रातः लौट कर फौलागढ़ में ठहरा और लगभग ११ बजे के समय जब कि वे नमक सुला रहे थे, पुलिस ने एकदम धावा मारा, दो-दो पुलिस वाले एक एक स्वयंसेवक से भिड़ गये, और नमक छीन लिये। इस झगड़ा झगड़े में एक सिपाही ने श्री रामस्वरूप की छाती पर पैर रक्खा और दो ने उनके हाथ पकड़े—अस्तु शहर में खबर पहुंची कि पकड़े गये किन्तु पीछे से विदित हुआ कि पुलिसवाले लाठी पर [illegible] थे। सैकड़ों आदमी फौलागढ़ पहुंचे—डिस्ट्रिक्ट की हैसियत से हमने भी वहां जाकर व्यवस्था देखी और खूब दिल्लगी रही। सायंकाल रामस्वरूप जी का जत्था बड़ी शान से आया। यह बात याद रखने की है कि जब जत्था लौट आता था, उसी समय इन्द्रदेवता अभिषेक करते थे, तो भी कोई काम नहीं रुकता था—सब काम घड़ी के कांटे की तरह ठीक समयपर चलते थे—इन्होंने सभा में अपने अनुभव सुनाये। आज सभापति थे

श्री महावीर त्यागी। श्री त्यागी जी ने पुलिस बहिष्कार पर बहुत ज़ोर दिया और उस दिन की इस पुलिस की घटना और त्यागी जी के व्याख्यान ने देहरे को हिला डाला ता० २७-४-३० को प्रातः श्री चौ० बिहारीलाल जी का जत्था बहुत ही धूमधाम से सत्कार, मधुपर्क, पण्डितों के आशीर्वाद, मेवा-मिठाई फल-फूल, आदि की कोई कमी नहीं रही। जत्थे के साथ सैकड़ों विद्यार्थी गये। श्री त्यागी जी और शर्मा जी भी गये—जत्था बिन्धाल पुल से आगे रवाना होगया और हम लौटे—दूसरे दिन सायंकाल यह जत्था लौटने को था लोग आश्चर्य में थे कि पहला जत्था गया और लौट आया। दूसरा भी गया और खाली छीना झपटी होकर लौट आया—फिर भी नौकरशाही चुप है. किसी को पकड़ती नहीं, क्या बात है। लोगों में अफवाह थी और सरकारी कर्मचारी भी दबी ज़ुबान में कहते थे कि चौ० बिहारीलाल का जत्था अवश्य पकड़ा जायगा और वे इसी तैयारी से गये थे। ता० २७ को दिन भर देहरे में यही चर्चा रही। हम लोग जो देहरे में थे वे यही सलाह करते रहे कि यदि हम सब पकड़े गये पीछे काम किस तरह चलाया जायगा—लोग आते थे और बारबार हमको समझा कर जाते थे कि आप जल्दी न कीजिये, जल्दी जेल में जाने में कोई लाभ नहीं, पीछे काम ठप होजायगा इत्यादि—रामस्वरूप नवकोटि तथा साभे द्र मुकर्जी ता० २७ को रात्रि के ग्यारह बजे तक मेरे पास बैठे रहे मैंने उनको बहुतसी बातें समझा डाली क्योंकि नौकरशाही का विश्वास नहीं था। कि कब हमको गिरफ़्तार करेगी—प्रातः ३॥ बजे पकड़म १ मोटर आकर बलवन्तसिंहजी के पास ठहर गयी। मैंने साफ़ किया कि अभी फैसला है।

मैंने वैद्य जी को जगाया, उन्होंने किवाड़ खोले और मैं प्रातः-विधि को समाप्त करने में लगा। शौच होकर आया तो वैद्य जी बोले 'वारण्ट है' मैंने कह अच्छा। मैंने अकरामखां सरकल इन्सपेटर से जो मुझे गिरफ्तार करने आये थे, वारण्ट मांगा, तो उन्होंने हंसकर कहा 'मैं स्वयं वारण्ट हूं" मैंने कहा ज़रा स्नानध्यान करके चलेंगे, उन्होंने कहा वहीं कोतवाली में स्नानध्यान करलेना। मैंने कहा नहीं यहीं करूंगा। स्नान ध्यान हुआ, श्री वैद्य जी की माता ने तिलक लगाया, कुछ मिष्टान्न खानेको दिया, और सब कार्य समाप्त करके वैद्य जी से कुछ आवश्यक बातों को कहकर मैं मोटर में बैठगया। मोटर जेल की ओर चलपड़ी, मैं भी समझही गया था। जेल के दरवाजे पर पहुँचा तो क्या देखता हूं स्वा० विचारानन्द बैठे हैं और उन्होंने ही फाटक के भीतर से मेरा स्वागत किया—मैं भीतर होगया और श्री अकरामखां साहब दूसरी शिकार की बात में चले गये। थोड़ी देर में हम भीतर गये, प्रेमकृष्ण काकोरी वाले हमसे मिले—खूब आनन्द मंगल रहा—थोड़ी देर में क्या देखते हैं कि कौलागढ़ से डंगवाल जी भी लाये गये, और एक आध घण्टे में खागाखेत से गिरफ्तार त्यागी जी, वर्मा जी, बिहारीलाल जी सभी आपहुँचे। इस तरह हम छः प्रमुख कार्यकर्त्ताओं को जेल की चारदीवारी में बन्द करके नौकरशाही ने समझा कि वह अब सुख समाधान से सो सकेगी—ता० २८ लोगों से मिलने मिलाने में गयी—ता० २९ को हमारा केस सुनाया गया। निर्णायक थे श्री रायबहादुर पण्डित वेणीप्रसाद मिश्र। बेचारे बहुत सज्जन पुरुष हैं किन्तु नौकरशाही के चक्कर में पड़कर वह सज्जनता बेचारी भी कब तक निभे। हम

लोगोंने केवल समय याचना के लिये सरकारी गवाहों पर जिरह की और पीछे से बयान दिये और बस और कोई डिफेन्स नहीं दिया। ता० ३० को तीन बजे हमारा फैसला सुनाया गया—हम लोगों को लवणधारा नं० ९ सी में ६-६ मास की सादी कैद हुई। वर्मा जी और डंगवाल जी पर दो दो अपराध माने गये और दो दो सज़ाएं हुईं पर एक साथ दोनों सजाओं के चलने की बात रही। हमको बी क्लास मिली। मित्र—मण्डल हमसे मिलकर जेल के फाटक के बाहर हुआ और हम अपने बारीगों में जा पड़े। ता० २८-२९-३० तीन दिन तो जेलखाना जेलखाना ही न रहा। ऐसा प्रतीत होता था मानों कोई देवमन्दिर है और भक्तजन भक्तिप्रदर्शनार्थ देवदर्शनार्थ आरहे हैं—बाहर 'जय' भीतर 'जय' जेलके चारों ओर 'जय' बाजारों में 'जय'—सर्वत्र जय जयकार ही था। जेल जाने से पूर्व हमने प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी को लिखा था कि किसी महानुभाव कार्यकर्त्ता को देहरे भेजें, उनके आने के पूर्व ही हम भीतर जेल में चले गये थे। श्री रामस्वरूप नवकोटि डिक्टेटर रहे फिर श्री प्रोफेसर बालकृष्णविश्वनाथ केसकर (काशीविद्यापीठ) ने श्री रामस्वरूप का हाथ बटाया। आप वहां काशीविद्यापीठ में अर्थशास्त्र के अध्यापक हैं।

विदेशी वस्त्र बहिष्कार।

एक बात को हम लिखना भूल गये। जेल जाने के पूर्व हमने देहरे के व्यापारियों की एक सभा बुलायी थी और उसमें निश्चय हुआ था कि कोई व्यापारी १ वर्ष तक विलायत का माल न मंगाये। यदि कोई औडर गया हो तो कैन्सल करे। इस कार्य

के लिये श्री ला० आर्यकिशोर जी गुप्त श्री मास्टर प्यारेलाल जी को संचालक बनाया गया था । इस की कमेटी में सात मेम्बर रक्खे गये थे । हमारे पीछे तीन मास के वायदे पर सब दुकानदारों ने अपनी अपनी दुकानों में विलायती कपड़े बान्धकर उसपर कांग्रेस की सील लगवाली थी ।

घर--घर प्रचार ।

घर-घर खादी के प्रचारार्थ आर्यसमाज मन्दिर में देवियों की एक सभा हुई थी जिसमें हमने व्याख्यान दिया और देवियों की एक छोटीसी उपसमिति बना डाली थी । उसका काम घर घर जाना, लोगों से प्रतिज्ञा पत्र भरवाना और खादी का प्रचार करना था । श्रीमती रामलुभाई देवी, श्रीमती अक्षयकुमारी जी, श्रीमती लक्ष्मीदेवी जी, श्रीमती विद्यावती, श्रीमती कस्तूरदेवी श्रीमती शारदादेवी, श्रीमती शकुन्तलादेवी आदि ने बहुत काम किया ।

हम समझते थे कि हमारे पीछे सब काम ठप हो जायगा—यह हमारा अज्ञान था—जब हमने जेल में सुना कि श्री रामस्वरूप नवकोटि बड़े ही सुन्दर ढंग से काम कर रहे हैं तो हमारे आनन्द का पारावार नहीं रहा—थोड़े दिनों में अर्थात् ता० १७--५--३० को श्री केसकर, श्री रामस्वरूप नवकोटि, श्री विद्याव्रत जी श्री स्वामी केवलानन्द जी, श्री पं० ब्रह्मदत्त शर्मा (राणीपोखरी) श्री हरिकृष्ण (आनन्दप्रभा वाले) श्री हरिराम (ला० ऊधोराम के कनिष्ठ भ्राता) श्री सोमेन्द्रमोहन मुकर्जी मन्त्री तहसील और श्री

कृष्णचन्द्र जी कृष्णमन्दिर में आपहुँचे—क्योंकि इन्होंने खारेखेत का पीछा छोड़कर नगर में ही निमक बनाने का ढर्रा चलाया था। खास थाने के पास निमक बनाया गया। फिर कचहरी में निमक बनाने की ठानी गयी, और वहीं सत्याग्रह में ये लोग गिरफ्तार करके लाये गये। उस दिन कचहरी में निमक न बनसका, किन्तु दूसरे दिन छः सहस्र जनता की उपस्थिति में ऐन कचहरी में निमक बना और वह ऐसा स्वादिष्ट निमक था कि हाथों हाथ बिक गया। निमक की बिक्रीसे जो आय होती थी वह सत्याग्रह संग्राम में व्यय की जाती थी। श्री कृष्णचन्द्र जी नवजवान भारत सभा देहरे के मन्त्री थे।

जेल में हम छः थे अब होगये पन्द्रह। दूसरे दिन पुलिस ने श्री हरिकृष्ण और हरिराम को छोड़ दिया। अब रहे केसकगादि ७-ता० १९ को इनके अभियोग का निर्णय होगया। सब को ६-६ मास सख्त मिले—उस दिनमें पचासों भाइयों से भीतर मिलने का अवसर मिला—किन्तु इन को 'सी' में ही रक्खा गया इसीलिये सहानुभूति में हम लोगों ने भी 'बी' छोड़ी। इसके अतिरिक्त खान पान का झगड़ा, परेड का झगड़ा चलही रहा था। हम लोग परेड देने के लिये राज़ी नहीं थे और कर्नलकुक सुपरिन्टेन्डेण्ट ज़ोर दे रहा था—यह झगड़ा ता०२४ को हुआ। ता० २६ को श्री गोविन्दबल्लभ पन्त जी स्वराजिस्ट नेता नैनीताल से इस जेल में लाये गये और हम ता० २८ की सायंकाल को अचानक फैज़ाबाद रवाना किये गये। जेल के सामने सहस्रों नरनारी उपस्थित थ, फिर यह सब समुदाय स्टेशन पर पहुँचा। एक मास पश्चात् सैकड़ों एवं सहस्रों परिचित नरनारियों को देखकर

हमारे आनन्दाश्रुओं का प्रवाह बह गया। हावड़ा एक्सप्रेस ठीक समय पर छूटी और उस समय की जनता की गगनभेदी "वन्देमारतम्" "महात्मागान्धी कीजय" "इन्कलाब जिन्दाबाद" आदि जयध्वनियों को कोई कैसे भुला सकता है, इस तरह हम देहरे से दूर होते होते ता० २९ को दुपहर फैजाबाद जेल के फाटक पर पहुंचे—हमारे साथ के गढ़वाली जमादार और सिपाही बड़े सभ्य थे। बस हम भीतर फाटक में गये और फाटक बन्द हुआ।—पीछे सुना कि केलकर आदि को कर्नल कुक ने बहुत तंग किया और सबने हुंगर स्ट्राइक करदिया। वहां तो कर्नल कुक ने कुछ नहीं कहा किन्तु पीछे से जब केलकर जी, मुकर्जी, श्री कृष्णचन्द्र जी फैजाबाद बी० में आये तब पीछे से आई-जी० (इनस्पेक्टर जनरल) का ऑर्डर भिजवाया कि इनका रिमिशन ज़प्त किया जाय और आगे रिमिशन न दिया जाय और पांच पांच दिन की तनाई दी जाय श्री विद्याव्रत जी झांसी भेजदिये गये। श्रीस्वामी केवलानन्द जी सीतापुर जेल में गये। श्री पं० ब्रह्मदत्त शर्मा हरदोई जेल में जहां आपको बहुत कष्ट दिये गये। श्री रामस्वरूप जी और अबदुलरहमान बुलन्दशहर जेल में भेजे गये। इस तरह तीन-तेरह करके कर्नल कुक सुखी हुये—पर बेचारे को क्या पता था कि पीछे से इनके भी गुरु नवजवान सभा के प्राण राजपतपाण्डे आरहे हैं। राजपतपाण्डे ने जेल को बहुत गरम करडाला। फलस्वरूप वे भी बाराबंकी रवाना हुये—श्री बिहारीलाल जी भी जो रुग्ण होने के कारण हमारे साथ फैजाबाद न जासके थे, शहांजहांपुर जेल में सश्रृङ्गार (बेडीसहित) भेजे गये। फैजाबाद में हम कुछ काल तक बी में रहे फिर सी में

होगये—बेचारे बिहारीलाल रोगी को भी सी भुगतनी पड़ी—प्रो० केलकर आदि जब फैज़ाबाद आये तब उनके साथ लाला झण्डूमल जी के सुपुत्र श्री जगदीश भी आये थे । इनको देखकर हम बहुत प्रसन्न हुये । वहां हम पांचों अर्थात् वर्मा जी, स्वामी जी, त्यागी जी, डंगवाल जी सी० में रहे और अच्छे रहे । स्वामी जी को छोड़ कर हम चार ता० १--१०--३० को फैज़ाबाद से छूटे—स्वामी जी २७--१०--३० को छूटे—इसी प्रकार हमारे पीछे घमासान युद्ध जारी रहा और देहरा जेल बराबर भरती गयी । हमारे पीछे जो जो भाई आये उनकी नामावली पुस्तक के अन्त में दी गयी है । वीर खड्गबहादुर चौदह गुरखा भाइयों के साथ धरासना सत्याग्रह के लिये गये और साबरमति जेल में तीन मास रहे । मार्ग में ही पकड़े गये थे । धरासना तक पहुँचने भी नहीं पाये । हमारे लिखने पर वे रोहतक से देहरे भी आये थे और हमारी अनुपस्थि में कुछ दिन काम किया । अब आप फिर देहली में पकड़े गये हैं । आप श्री सरदार वल्लभभाई से मिलने अहमदाबाद जारहे थे, हमारे जेल में जाने के पश्चात श्री केलकर का दल आया, और ऐसा तांता लगा कि श्री गुरुप्रसाद दो बार आये । श्री रामकृष्ण दो बार आये । श्री गौतम देव विद्यालङ्कार तृतीय डिक्टेटर आये, श्री राजपत पाण्डे आये, विधौली के पं० सुन्दरलाल श्री जगदीश, श्री केदारनाथ, उनके पुत्र श्री बाबूलाल, श्री ला० मित्रसेन जी, श्री भूमानन्द, डोईवाले के श्री कृष्णदत्त वैद्य, श्री ईश्वरचन्द जी, रायपुर के होशियारसिंह आदि न जाने कितने आये । श्री अराधन वैजरजी, श्री राममोहनराय, श्री रामनाथ दीक्षित, श्री स्वामी गोविन्दानन्द, श्री हरद्वारी, श्री सुगनचन्द

टेलर मास्टर आये। सबके नाम पुस्तक के अन्त में पढ़ लीजिये। हमारे पीछे बालक ज्ञानचन्द्र खुशालसिंह और राजेन्द्र आदि बालसभा के बालकों ने यह वीरता का काम किया कि लिखते नहीं बनता है। पुलिस ने पीटा, तहसीलदार ने पीटा. हवालात में बन्द कर दिया गया, किन्तु बालकों ने हिम्मत न हारी। पीछे इन के मां-बापों को तंग किया गया। इनको सौ सौ रुपये दण्ड दिया गया। खुशालचन्द्र तो अब तक लगन से काम करता रहता है। हमको तहसीलदार की क्रूरता पर खेद है कि उस ने बच्चों को इस बुरी तरह से पीटा कि लोग तहसीलदार से घृणा करने लगे।

ठेलेवाले।

हमारे पीछे ठेलेवालों की खूब बन आयी—१९२५-२६ के हिन्दुमुस्लिम झगड़ों के कारण देहरे के आढ़तियों ने मुसलमान ठेलेवालों को निकाल दिया था क्यों कि ये बहुत दिक़ करते रहते थे। ठेलेवालों ने समझा कि यह मौक़ा बदला लेने का अच्छा है। पहले उन्होंने मुसलमानों को ही कांग्रेस के विरुद्ध उभाड़ना चाहा—उनमें भी दो दल होगये। फिर ठेलेवालों ने अमनसभा का रूपभर कर अपने जलूस निकालने प्रारम्भ किये। पुलिस वालों को और चाहिये ही क्या था। खूब प्रसन्न हुये। उनका जलूस निकलवाते रहे और ठेलवाले 'महात्मा गान्धी बरबाद' सरकार की जय, आदि नारे लगाते जाते थे। दो—चार बार ऐसा हुआ। एक बार इन्होंने अपने जलूस में खूब ऊधम मचाया, आढ़त बाजार में धमकाते हुये, गाली देते हुये जाने लगे। किस

किसी को धकेल, किसी को मार, कांग्रेस के दफ्तर के पास आकर गाली दे, आदि भयंकर काण्ड उपस्थित किये—जो बेचारे व्यर्थ ही इनके शिकार बनने लगे उन्होंने प्रतीकार में हाथ चलाया तो फिर यह भाग गये—पुलिस ने बलवे का अभियोग लगाकर आढ़तबाजार तथा कई अन्य बाजारों के सौ पुरुषों के मुचलके लेलिये, फिर जब ट्रिब्यून के सम्वाददाता ने स्वयं देहरे में आकर पुलिस की अन्धाधुन्धी की तहकीक़ात की तब उसने ट्रिब्यून में सविस्तार हाल लिखा। तब स्थानिक अधिकारियों की आंखें खुलीं—सुना जाता है श्री बा० उग्रसेन जी बैरिस्टर व डिस्ट्रिक्ट मेजिस्ट्रेट में ज़रा खैंचा तानी भी हुई। अधिकारियों ने ३२६ धारा उठाली और १४८-१४९ और ३२४ में केवल एकतीस पर अभियोग चलाया। अभियोग चल रहा है इसलिये इस विषय में अधिक कुछ भी नहीं लिखसकते पुलिस श्री ला० ज्योतिःप्रसाद श्री ला० चण्डीप्रसाद, जैसेरईस को फांसने की फिक्र में थी इसीसे उसकी अन्धाधुन्धी का पता चलता है। ठेलेवालों ने जिसकी ओर भी उंगुली दिखायी कि वह पकड़ा गया। दूकान का मालिक न मिला तो उसके महिमान को ही पकड़ ले चले—ऐसी घोर दशा थी। अब तो इन ठेलेवालों ने यह हाल कर रक्खा है कि जब कांग्रेस का कोई ख़ास जलूस निकलने को होता है या सभा का ऐलान किया जाता है तो वे भी अपने जलूस और सभाको उसी स्थान के लिये ऐलान कर डालते हैं। और इसी को बहाना बना कर स्थानिक अधिकारी १४४ धारा लगादेते हैं। अभी जवाहर दिवस में १४४ लगायी गयी, देहरे वालों ने उत्साह से उस १४४ धारा की धज्जियां बखेर दीं और उसके फल स्वरूप पचासों सज्जनों ने लाठी प्रहार सहे, श्री मित्रसेन वैद्य डिक्टेटर, श्री

महाराजप्रसाद आदि कई सज्जन जेल गये, दो देवियां भी जेल पहुँची—हमारे पीछे महकमा जंगलात के ठेकों का बहिष्कार बोलदिया गया था, लगभग दो—सौ स्वयंसेवकों ने जो प्रायः ग्रामों से ही आये हुये थे, धरना दे दिया। फल यह हुआ कि ठेके सस्ते गये और महकमा जंगलात को लगभग ३—४ लाख रुपये का घाटा पड़ गया। इसमें स्वयंसेवकों की शानदार विजय हुई।

हमारे पीछे स्थिति को संभाल रखने में जिन महानुभावों ने परिश्रम किया उनकी प्रशंसा कहां तक करें। श्री पं० अमरनाथ वैद्य इसीलिये अधिकारियों की दृष्टि में खटकते रहे और परिणाम स्वरूप अब वे लखनौ जेल में कारावास के कठोर कष्ट उठारहे हैं। श्रीमती शर्मदादेवी ने भी बहुत दक्षता से काम किया। स्कूल कौलेजों के बहिष्कार में खूब भाग लिया। वह भी श्रीमती भगवतीदेवी (त्यागी जी की बहन) श्री मती रामलुभाई देवी, श्रीमती श्यामादेवी, श्रीमती सरस्वतीदेवी अथवा सत्यवती-देवी आदि के साथ फतहपुर जेल में हैं। चार बच्चे भी इन देवियों के साथ हैं। किसकिस का नाम लेवें श्री बा० खुरशेदलाल वकील श्री खुशीराम जी, छाजूराम जी, श्री महाराजप्रसाद आदि ने जी तोड़ कर परिश्रम किया। हमारे पीछे पं० गुरुप्रसाद जी श्री श्यामलाल जी आदि ने भी वीरता का परिचय दिया। ला० रामकृष्ण भी लगे ही रहे।

हमारे जिले के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मेसन वैसे भद्र पुरुष हैं, मधुर भाषी हैं किन्तु आप में एक दोष है वह यह कि इनके जी में जो उलटा या सुलटा बैठ जाता है उसी बात के पक्ष में अड़े

रहते हैं। पुलिस ने आपके हृदय में यह बात जमादी थी कि यदि स्वामी जी, शास्त्री जी, त्यागी जी, वर्मा जी, डंगवाल जी और बी० बिहारीलाल जी इन छः को एक साथ पकड़ कर जेल में बन्द किया जायगा तो आन्दोलन ठंडा पड़जायगा। मेसन साहब ने ऐसा ही किया जिसका फल विपरीत हुआ और जिसका कटु अनुभव अब तक उनको मिल रहा है। आप एक बार देहरे जेल में भी पधारे थे। कहने लगे 'मैंने ११७ धारा नहीं लगायी' लगा सकता था, आप तो जंगलात के क़ानून तोड़ने की बात कहरहे थे न—मैंने उत्तर दिया 'इसी लिये तो आपने हमको यहां बन्द कर रक्खा है'' इसपर साहब बहादुर कुछ नहीं बोले, इसमें सन्देह नहीं कि यदि हम जंगलात का सत्याग्रह कर देते तो हमको ऐसी शानदार विजय मिलती कि भारतवर्ष के लोग देखते रहते पर महात्मा जी जंगल सत्याग्रह की अपेक्षा लवण सत्याग्रह को अधिक पसन्द करते थे और प्रान्तीय कमेटी ने भी इसी प्रकार का परामर्श दिया था। हम विवश थे। वह तो ईश्वर की कृपा हुई कि खाराखेत ने देहरे की लाज रक्खी, धन्य खारेखेत! देहरे के इतिहास में तेरा नाम अमर होगया है।

पुलिस।

यह हम मानते हैं कि कभी कभी लोगों ने पुलिस को चिढ़ा दिया किन्तु पुलिस का व्यवहार बहुत ही पाशविक रहा। वैसे सरदार दरबारासिंह और अकरामखां सर्कल इनस्पेक्टर ऊपर से बहुत मिलनसार और मीठे रहे। जब सरकार का अन्न खाते हैं और उसकी नौकरी करते हैं तो उनकी बुद्धि उस जैसी होजाय तो आश्चर्य ही क्या है। शिकायत करना फुजूल है।

जेल

देहरा जेल के सुपरिण्टेण्डण्ट कर्नल कुक वैसे बहुत सज्जन आदमी हैं किन्तु कभी कभी उनको बहुत ज़िद चढ़ जाती थी। [illegible]धरसिंह बड़े वहमी आदमी हैं, कर्नल कुक के सामने [illegible]ते थे जैसे भेड़िया के सामने बकरी। नायब बा० शिव[illegible] सज्जन पुरुष थे। न किसी की रियायत करनी, न किस[illegible] सताना, अपना काम सचाई से करते रहना और चुप आना [illegible] चुप चले जाना यह उनका व्रत था। वे अब लखनौ सेण्ट्रल [illegible] में बदल गये हैं। कर्नल कुक विलायत गये हैं उनके स्थान में [illegible] बार्बर आये हैं डॉ० रौय और डा० [illegible]जी सौम्य प्रकृति पुरुष हैं। अंगरेजी बाबू आनन्दीप्रसाद जी [illegible] नवयुवक हैं। हम जब तक देहरे में रहे एक भी विज़ीटर जेल देखने नहीं आया। कु० समशेर बहादुर ने वायदा किया था किन्तु कभी पूरा नहीं किया। बा० चण्डीप्रसादसिंह वकील बीमार थे इसलिये न आसके। इनसे पूर्व ठा० मनजीतसिंह जेल विज़ीटर थे।

हम वापस आगये।

ता० ३० सितम्बर को डंगवाल जी देहरे पहुँचे। हम अर्थात् त्यागी जी, वर्मा जी और मैं ता० १ अक्तूबर को फैजाबाद से छूटे और मार्ग में आवश्यक कार्यों को समाप्त करके ता० ४ को प्रातः देहरा एक्सप्रेस से देहरे पहुँचे—जलूस नगर प्रवेश, सभा आदि सभी समारम्भ हुये। इसी दिन टापू चमार

जो कौन्सिल के लिये बैरिस्टर रामचन्द्र कुकरेती के मुकाबले में खड़े थे, चुनाव जीत गये। इनको बधाई दी गयी। ता० ५ को हम ज्वालापुर लौटे–पीछे त्यागी जी आदि थे ही हमारे पीछे त्यागी जी पर १४४ लगी, रणवीर आदि तेरह स्वयंसेवक भी जेल पहुँच गये श्रीमती शर्मदादेवी आदि पांच बहिनें और चार बच्चे पिकेटिंग में जेल भेजी गयीं—व्यापारी लोग विलायती कपड़ा खोलने पर तुले हुये थे सो रुक गये। इससे पूर्व जब पं० मोतीलाल जी मसूरी आये थे, तब भी व्यापारी अपनी गांठें खोल बैठे थे। पण्डित जी ने काम्ग्रेसवालों को डाटा। तब फिर कांग्रेसवालों ने गांठें बन्द करा कर सील लगादी। श्री गोविन्द मालवीय, श्री नारीमैन, श्री जे० एम्० सेन गुप्त, आदि श्री मोतीलाल जी से परामर्श करने मसूरी पधारे थे। देहरेवालों ने उनके परामर्श से भी लाभ उठाया। एक डेपूटेशन मसूरी भी पहुँचा था। इस तरह अक्तूबर का महिना जाही रहा था कि चौ० हुलास वर्मा और पं० अमरनाथ वैद्य जी ता० २८ को पिकेटिंग आर्डीनन्स में बड़े घर भेजदिये गये। उधर ता० ६ को बिजनौर में श्री त्यागी जी १०८ धारा तथा आर्डिनन्स नं० ६ के अनुसार बिजनौर जेल में पहुँचे। आपने द्वारा नगरगंज के मेले में एक ज़ोरदार वक्तृता दी थी और उसमें कर न देने की बात कही थी इस लिये ऐसा हुआ। इस से पूर्व स्वामी विचारानन्द जी भी १०८ में देहरा जेल में पहुँचाये गये। सारांश जो आया उसने फिर जाने का नम्बर लगाया। हम ता० १६ को बिजनौर गये, श्री त्यागी जी से मिले और वहां जवाहर दिवस के उत्सव में देशभक्ति पर कुछ बोले भी। इधर देहरादून में उसी रोज़ १४४ का प्रादुर्भाव हुआ और लोगों ने उस १४४ धारा के टुकड़े टुकड़े कर डाले और

पुलिस ने भी डण्डों से जनता की पीठ को छलनी बनाडाला—यह सब हुआ पर न जलूस रुका और न सभा रुकी। श्री छाजूमल की दूसरी पुत्री श्रीमती यशोदादेवी तथा यज्ञवतीदेवी भी बड़े घर की अतिथि हुई। श्री मित्रसेन डिक्टेटर, श्री महाराजप्रसाद आदि बारह तेहर वलाण्टियर भी चिरवाञ्छित जेलमें पहुँचे—इधर यह हुआ और उधर से स्वामी केवलानन्द जी पं० ब्रह्मदत्त जी शर्मा (राणीपोखरी) श्री केलकर, श्री मुकर्जी, श्री रामस्वरूप जी, श्री विद्याव्रत जी, श्री गौतमदेव विद्यालङ्कार एक एक करके देहरे में आपहुँचे और आप का स्वागत हुआ। इधर से श्री अमरनाथ वैद्य जी लखनौ, श्री वर्मा जी शाहाजहाँपुर, श्री प्रेमकृष्ण जी काकोरीकेस वाले लखनौ जा पहुँचे। रणवीरादि उन्नाव गये, कोई बदायुं पहुँचा—इस तरह नवम्बर मास भी आया और गया। जब किसी तरह आन्दोलन न दबा तब नौकरशाही ने अब सेनासंचालन रूपी बिभीषिका प्रारम्भ करदी है। यह फौज सर्वत्र ग्रामों में पहुँचती है, कांग्रेस के झण्डे उखाड़ कर फेंक देती है या जला डालती है और कांग्रेस के मेम्बरों व स्वयं सेवकों को पीटती भी है।—

भोगपुर में

गुरखा फौज के गोरे अफसर ने ४ कांग्रेस के मेम्बरों को बुलवाया, उनको धमकाया एक वालण्टियर को पीटा, और मन्त्री पं० ज्योतिःस्वरूप शर्मा को अपने डेरे में लेजाकर धमकाया और कहा कांग्रेस को दबाने का काम अब फौज के सुपुर्द हुआ है। उस अफसर ने कांग्रेस

के झण्डे उखड़वा दिये थे। भोगपुर वालों ने फिर खड़े करदिये। वहां से यह फौज हृषीकेष पहुँची तो ऐसी फौज का स्वागत करने के लिये लालायित बहुतसे व्यक्ति मिल ही गये। हरद्वार में भी महन्तों ने आवभगत की है। बहादराबाद में संभवतः इसी फौज के अफसर ने पं० रामलाल पाधा और चौ० घनश्यामसिंह को बुरी तरह पीटा, उनकी आंखों में चूना डाला गया, बदन पर भी चूना मला गया, इनको नहर में डाला गया—बस ऐसा ही उपद्रव हुआ।

हम ता। ५-१०-३० अक्तूबर को जो गये थे सो ता० ८ दिसम्बर को ज्वालापुर से देहरे आये। श्री बैनर्जी श्री बाबूलाल जी, रामस्वरूप जी, श्री विद्यामत जी, श्री जगदीश जी, श्री भगवतस्वरूपजी आदि आदि मिले। श्री सोमेन्द्रमोहन नये डिक्टेटर थे। ता १०-१२-३० को तीन बजे श्री स्वामी विचारानन्दजी का पुलिस एक्ट ३० के अनुसार केस चला—लगभग तीस भाई जेल में केस सुनने गये थे। ११-१२-३० को फैसला होकर स्वामी जी को छः मास का सख्त कारावास हुआ। विदित हुआ जेल में सी० क्लास वालों के पास काफी कपड़े नहीं हैं—श्रीमती यशोदादेवी और यशवतीदेवी दोनों बहनें अच्छी तरह हैं। बी० क्लास वाले छः भाई महाराजप्रसाद आदि शीघ्र फैजाबाद बदल दिये जावेंगे। बा० त्रिवेणीसहायजी की जगह नये नायब बा० कालीसहाय जी बलिया से आगये हैं। हमारे पुराने डाक्टर बा० चटर्जी फौरेस्ट महकमे में बदल गये हैं। काशीपुरके कुंवर आनन्दसिंह जी 'ए' क्लासमें आनन्द से हैं—कर्नल कुक विलायत गये—उनके स्थान में कर्नल बार्बर आगये हैं।

बस यह भाग यहीं समाप्त किया जाता है क्योंकि १९३० समाप्त होने को है—नये वर्षकी बातें नये भागमें आयेंगी। इस दिसम्बरमासमें यह विशेष बात कि खादी सप्ताह १४ से २१ तक मनाया गया। पं० विश्वम्भरदत्त चन्दौला सम्पादक गढवाली पर पं० चक्रधरदत्त ने रुड़की में मानहानि का केस चलाया है। हिन्दू-संसार केस में चक्रधर जी की ओर से गवाही देने का प्रायश्चित होरहा है।

१४८-१४९--३२४ में जिन ३१ भाइयों पर अभियोग चल रहा है उनकी नामावली अन्तमें दीगयी है। मालूम पड़ता है यह अभियोग अभी दो मास तक चलेगा। बा० चण्डीप्रसादसिंह जी बा० दर्शनलाल जी, बा० खुरशेदलाल जी मुकद्दमें की पैरवी कर रहे हैं—

———*———

अजबपुर कान्फ्रेंस।

ता० ४ व ५ जनवरी ३१ को पं० नरदेव जी शास्त्री के सभापतित्व में हुई। पहिले इसके सभापति पं० कृष्णदत्त जी पालीवाल चुने गये थे पर वे न आसके। उपस्थिति लगभग २५०० के रहती थी। कान्फ्रेंस में निम्न लिखित रचनात्मक प्रस्ताव पास हुये।

१—कान्फ्रेंस स्वराज्य संग्राम में बलिदान होनेवाली पवित्र वीर आत्मा श्री गणूबाबू, श्री मानिकलाल सेन, श्री लक्खूराम, श्री केलाशङ्कर की दिवंगत आत्मा के लिये शान्ति प्रार्थना करती है।

२—यह कान्फ्रेंस निश्चय करती है कि ज़िले में फिर से कांग्रेस का संगठन हो, ज़िले भर में कम से कम ६००० कांग्रेस मेम्बर बनाये जावें। दस दस बीस बीस ग्रामों की एक कांग्रेस बने जिससे मिल कर काम करने की शक्ति पैदा हो। ऐसी हर एक कांग्रेस कमेटी अपना अपना उत्सव मनाना प्रारम्भ करें।

३—यह कान्फ्रेंस निश्चय करती है और आज्ञा देती है कि दस २ बीस २ ग्रामों की एक पञ्चायत क़ायम की जावे, जिन में आस पास के झगड़े फैसल किये जावें।

४—यह कान्फ्रेंस निश्चय करती है और आदेश देती है कि आबादी के लिहाज़ से १०० मनुष्य पीछे १० स्वयंसेवक अवश्य बनावें। इस प्रकार समस्त ज़िले के स्वयंसेवकों का एक संघटन हो और उसका उपयोग संघठनात्मक और रचनात्मक कार्य में किया जाय।

५—यह कान्फ्रेंस देहरादून की जनता को आदेश देती है कि वह अपने अपने घर में खद्दर और स्वदेशी वस्त्रों का ही व्यवहार करे। जब आप लोग नगरों में वस्त्र खरीदने आवें अच्छी तरह जांच पड़ताल करके स्वदेशी वस्त्र खरीदें—ग्रामों में सिगरेटों का पूरा बहिष्कार करें।

६—यह कान्फ्रेंस आदेश करती है कि ग्रामों के लोगों को मद्य के व्यसन से बचने का भरसक प्रयत्न करना चाहिये। धार्मिक, राजनीतिक, शारीरिक समाजिक सभी दृष्टि से यह व्यसन बहुत घातक हैं—जो भाई, इस आदत में फंसे हैं ग्राम वासियों का कर्तव्य है कि उनको समझा बुझा कर आपस का सम्बन्ध दिखाकर इस बुरी आदत से बचावें।

७—यह कान्फ्रेंस सामान्यतः जिले भर की देवियों से विशेषतः देहरादून भर की देवियों से अनुरोध करती है कि वे अपने घरों में विदेशी वस्त्र को न आने देवें वे विदेशी वस्त्र के बहिष्कार को सफल करने में बहुत हाथ बटा सकती हैं। यदि नगर की देवियां इस कार्य्य के लिये अपना पृथक संघठन बना लेवें तो अच्छा है।

८—यह कान्फ्रेंस देहरादून जिले भर के छात्र समुदाय को आदेश करती है कि वे खादी वस्त्र का ही उपयोग करें और जब किसी अन्य वस्तुओं की आवश्यकता होतो बाज़ार से स्वदेशी वस्तु खरीदने का ध्यान रक्खें—स्टूडेण्ट्स यूनियन इसी बात का विशेष ध्यान रक्खे की छात्रों में स्वदेशी का विशेष प्रचार हो।

९—यह कान्फ्रेंस देहरे ज़िले भर के किसानों और मज़दूरों को आदेश देती है कि वे शीघ्र कांग्रेस के सदस्य बन इसके कार्य्य क्रम को सफल बनावें।

१०—कान्फ्रेंस ज़िले भर के कपड़ों के व्यपारियों से अनुरोध करती है कि वह भविष्य में कहीं से भी विदेशी कपड़ा न मंगायें और व्यापारी मण्डल इस बात का ध्यान रक्खे कि देश की उन्नति में ही व्यापारियों की उन्नति है।

११—यह कान्फ्रेंस उन सब भाई बहिनों को बधाई देती है जिन्होंने कि इस वर्ष सत्याग्रह संग्राम में योग दिया और कारावास के कष्ट सहे और भोग रहे हैं। इन्हीं के कारण देहरे का नाम हो रहा है।

१२—यह कान्फ्रेंस अजबपुर निवासियों और कान्फ्रेंस के सभापति को धन्यवाद देती है कि कान्फ्रेंस की सफलता उन्हीं के प्रयत्न से हुई है।

१३ वां प्रस्ताव कोआपरेटिव बैंक के बहिष्कार का पास हुआ।

१४ वें प्रस्ताव में श्रीमती कमला नेहरु को बधाई दी गई।

१५ वें प्रस्ताव में भोगपुर के हल्के में किये गये फौजी अत्याचारों की तीव्र निन्दा की गई।

अन्य कान्फ्रेसें जो हुई।

गुजराड़ा	कान्फ्रेंस	११ जनवरी
मालदेवता	,,	१८ जनवरी
ऋषीकेश	,,	२५--२६ जनवरी
हरियावाला	,,	१–२ फरवरी
तिलवाड़ी	,,	१२--१३ फरवरी
गडूलमालफोट	,,	१५--१६ फरवरी
भोगपुर तहसील	,,	१५--१६--१७ मार्च

ता० २६ जनवरी।

कांग्रेस व स्टूडण्टस् यूनियन की ओर से ध्वजारोपण विधि हुई—

ता० ७ फरवरी ३१।

स्वर्गीय त्यागमूर्ति राजर्षि पं० मोतीलाल जी की मृत्यु पर समस्त बाजार में हड़ताल रही और शाम को एक शोक सभा की गई जिसमें स्वर्गीय पण्डित जी के प्रति श्रद्धाञ्जलि चढ़ाई गई।

फिर गिरफ्तारी ।

श्री सोमेन्द्र मुकर्जी ता० १३ फरवरी को बुधवार। पकड़े गये और ता० १९ फरवरी को श्री रामस्वरूप जी नवकोटि भी पकड़ लिये गये ।

॥ वन्देमातरम् ॥

१९३० सत्याग्रह संग्राम ।

डिक्टेटर

१—श्री नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ ।
२—श्री रामस्वरूप नवकोटि ।
३—श्री गौतमदेव विद्यालंकार ।
४—श्री पं० गुरुप्रसाद शर्मा
५—श्री ला० रामकृष्ण जी
६—श्री कृष्णदत्त वैद्य (डोईवाला)
७—श्री श्यामलाल गुप्त
८—श्रीमती शर्मदादेवी त्यागिनी
९—श्री मित्रसेन जैन, वैद्य
१०—श्री सोमेन्द्रमोहन मुकर्जी

तलाशियां कहां कहां हुईं ।

क्रांतिगीता-आदि के बारे में {
१—चौ० हुलासवर्मा–भारतीयप्रेस
२—स्वामी विचारानन्द जी, अभय प्रेस व आश्रम
}
३—नौजवान भारतसभा
४—डी० ए० वी० स्कूल के छात्रों की।

५—विद्यार्थि संघ।

६—पं० रामनाथ दीक्षित।

७—बाबू चमनलाल वकील।

८—पं० गुरुप्रसाद शर्मा

९—ला० रामकृष्ण लाडी वाला।

१०—श्री श्यामलाल गुप्त।

११—श्री आराधन बैनर्जी।

जमानत।

१—भारतीय प्रेस से पहले १०००) की जमानत मांगी फिर ५००) की मांगी।

२—भास्कर प्रेस से जमानत मांगी थी फिर माफ कर दी गयी।

लवण सत्याग्रह जत्थों का क्रम।

१— चौ० हुलास वर्मा का जत्था।

२—रामस्वरूप नवकोटी का जत्था।

३—चौ० बिहारीलाल का जत्था।

४—स्वामी केवलानन्द जी का जत्था।

५—सोमेन्द्रमोहन मुकर्जी का जत्था। इसमें प्रायः रईसों के ही लड़के थे। इनका निमक लगभग ५५०) को बिका था।

६—श्री सिक्खों का जत्था।

७— दखनबेग का जत्था।

८—श्री मुसल्मों का जत्था।

९—डोईवालेवालों का जत्था।

१०—नौजवान सभाका जत्था।

११—मु० झण्डेवाला जत्था।

१२—एक जत्था खड्गबहादुर का जो धरासने जाते समय मार्ग में गिरफ्तार हुआ। इनके साथ तेरह स्वयंसेवक सत्याग्रही थे। इसके अतिरिक्त ५० सत्याग्रही गुरखों का जत्था देहली गया था जिसमें से २३ एक सभा में गिरफ्तार कर लिये गये थे और अमरसिंह (आयु १६ वर्ष) को लाठी से सख्त चोट आयी थी—इस जत्थे ने अपनी सेवाएं देहली कांग्रेस कमेटी को अर्पण की थीं धनपत तथा हीरासिंह को भी बहुत चोट आयी थी। उन तेईस सत्याग्रहियों के ये नाम हैं—

सत्याग्रह गुरखा (फर्स्ट बैटेलियन)

१—डाल बहादुर मगर—(२-२२ गुरखा पलटन देहरादून)

२—धनवीर गोरंग (भूतपूर्व सिपाही १-६ गोरखपलटन अब्टाबाद)

३—रामलाल छेत्री ,, ,, ,,

४—खड्गबीर थापा नेपाल।

५—धनबहादुर थापा ,, ।

६—पूरण बहादुर छत्री (२—९गुरखा पलटन देहरादून)

७—संते गौरंग नेपाल

८—धनीराम थापा (२—५ गुरखा पलटन अबटाबाद)

९—मानबहादुर ठाकुरी (९ गुरखापलटन देहरादून)

१०—दिड़बहादुर थापा नेपाल।

११—अमरसिंह नेपाल।

१२—बहादुरसिंह छत्री (२—३ गुरखा पलटन अलमोड़ा)

१३—ललित बहादुर छत्री देहरादून।

१४—श्रीकृष्ण देहरादून।

१५—ईश्वरानन्द देहरादून।

१६—खड्गसिंह (भू० पू० मिलिटरी पुलिस देहरादून)

१७—अतरसिंह देहरादून।

१८—फतेहचन्द ,,

१९—पुष्पानन्द ,, ।

२०—सदानन्द ,, ।

२१—लालसिंह नेवार ,, ।

२२—मानसिंह ,, ।

२३—हीरासिंह ,, ।

इन में से अमरसिंह और धनपति धरासने के मामले में साबरमती में खड्गबहादुरसिंह के साथ तीन तीन मास जेल भुगत चुके हैं।

भारतमें ब्रिटिश राज।

महत्वकी राजनीतिक घटनाएं।

("एशियाटिक रिव्यू" में श्री एफ० एच० ब्राउन, सी आई ई०, ने भारतीय घटनाओं की एक सूची प्रकाशित की है। हमने पहले उसीका उल्था करनेका विचार किया था पर मूल लेख इतना एकपक्षीय है कि केवल भाषान्तर कर देने से भ्रम उत्पन्न होने की सम्भावना थी। अतएव उसीके आधारपर, बहुत

अधिकाँश उसी के लेकर, यह लेख तैयार किया गया है। इससे आजकल के वक्ताओं और लेखकों को, घटना और उसका समय जाननेमें, बड़ी सहायता मिलेगी।

१२ अगस्त सन् १७६५ ईसवीमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी को मुगल सम्राट शाह आलम से बंगाल, बिहार और उड़ीसा प्रांत की दीवानी का हक मिला। यह अधिकार प्राप्त होनेके बाद पार्लमेंट ने एक कानून बनाकर कम्पनीके हिस्सेदारोंके लाभ की सीमा बांध दी और ब्रिटिश खजानेमें हरसाल ४ लाख पाउण्ड देने को बाध्य किया। कंपनी को उपर्युक्त अधिकार मिल जानेसे कर वसूल करने का काम तो उसको मिला पर शासन मुसलमानों के ही हाथमें रह गया। इसका परिणाम बुरा हुआ और २८ अगस्त १७७१ को कम्पनी के डाइरेक्टरों ने अपने आपको (मुगल सम्राट का दीवान बनाया तथा "करों के संबन्ध की सब व्यवस्था" अपने नौकरों द्वारा करने का निश्चय किया।

इस साल कोर्ट आफ डाइरेक्टर्स ने एक बिल पेश किया जिसका उद्देश्य अपने नौकरों का अच्छा नियंत्रण तथा न्याय कार्य सुधारना था। इसी के फल से सन् १७७४ ई० में पार्लामेण्ट ने 'रेग्युलेटिंग ऐक्ट" पास किया। इस कानून के अनुसार फोर्ट विलियम (कलकत्ता, बंगाल) में गवर्नर जेनरल नियुक्त किया गया। मद्रास और बम्बई प्रेसिडेन्सीके गवर्नरों पर इसे थोड़ासा प्रभुत्व दिया गया, और इसके सहायतार्थ चार कौन्सिलर भी नियुक्त किये गये। पहले गवर्नर जेनरल और उनके चारों कौन्सिलरों की नियुक्ति तो उसी कानून द्वारा की गयी पर परवर्ती गवर्नर और कौन्सिलर नियुक्त करनेका अधिकार कंपनी

को दे दिया गया पर इसके लिये बृटिश राजा की स्वीकृति आवश्यक की गयी। इसी कानून से आज्ञा दी गई कि कलकत्ते में एक चीफ जस्टिस और चार जजों की एक हाईकोर्ट स्थापित की जाय इस प्रकार धीरे धीरे व्यापारी कम्पनी के हाथ में देश का शासन गया और उसपर इसी प्रकार धीरे धीरे ब्रिटिश पार्लमेण्ट का प्रभुत्व स्थापित हुआ।

सन् १८३३ ई०।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यवसाय पर पार्लमेंटरी कमेटी की रिपोर्ट। इस रिपोर्ट में इस बातपर जोर दिया गया कि "जहां 'नेटिवों और यूरोपियनों के स्वार्थों का संघर्ष हो वहां नेटिव लोगोंके स्वार्थका अधिक ध्यान रखा जाय।' रिपोर्टमें, यह भी लिखा था कि हिन्दुस्तानी सिर्फ नीचे के पदोंपर नियुक्त किये जाते हैं और सिफारिश की गयी थी कि उन्हें शासनमें अधिक से अधिक भाग दिया जाय। इसी कमेटी की सिफारिश पर पार्लमेण्टमें सन् १८३३ का इन्डिया ऐक्ट बना। इस ऐक्टके अनुसार कम्पनीको नया चार्टर इस शर्त पर दिया गया कि वह व्यापार करना छोड़ दे और भारत का शासन ब्रिटिश राजा और उनके उत्तराधिकारियों की तरफसे करे। इसी कानूनके अनुसार बंगाल के गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तान के गवर्नर जेनरल बनाये गये। गवर्नर जनरल के कौंसिल में एक और सदस्य बढ़ाये गये जिनका विभाग कानून था "लोगों के अधिकार, भाव और विशेष आचारों का ध्यान रखते हुए" भारतीय कानूनके 'कोड' (संहिता या संग्रह बनाने का काम उन्हें सौंपा गया। इस कानून में यह भी लिखा गया कि "ब्रिटिश राजा की कोई प्रजाजन अपनी जाति,

चमड़े का रंग अथवा धर्म के ही कारण ब्रिटिश राज में कोई भी पद पाने के लिये अयोग्य न समझा जाय।' सिविलियनों की शिक्षा और परीक्षा की भी व्यवस्था की गयी।

१८३५

कानून सदस्य लार्ड मेकाले ने एक मन्तव्य लिखा जिसमें इस बातपर जोर दिया गया था कि हिंदुस्तानियों को शिक्षा संस्कृत या अरबी के द्वारा न दी जाकर अंग्रेजी के द्वारा दी जाया करे। तदनुसार निश्चय किया गया कि राजकीय विद्यालय में अंग्रेजी द्वारा शिक्षा दी जाय और शिक्षा के प्रधान विषय पाश्चात्य विज्ञान और साहित्य हों।

१८४८ १८५६

गवर्नर जेनरल लार्ड डलहौसी ने पञ्जाब और ब्रह्मदेश पर आक्रमण कर ब्रिटिश इण्डिया की सीमा बहुत बढ़ायी। नागपुर, अवध तथा अन्य कई राज्य नष्ट करके वहां ब्रिटिश शासन स्थापित किया गया। अन्य छोटे छोटे राज्यों के सम्बन्ध में आपने यह नियम बनाया कि राजा के लड़का हो तो वह राज्य का अधिकारी होगा पर लड़का न हो तो राज्य ब्रिटिश भारत में मिल जायगा। इन कारणोंसे बड़ी अशांति फैल गयी।

१८५७—५८

सिपाही विद्रोह। इसके कई कारण बताये जाते हैं पर सर विलियम हंटर के मतसे सबसे बड़ा कारण डलहौसी की राज्य नष्ट करनेवाली नीति थी। इस युद्धमें सिपाहियों और पदच्युत राजाओं तथा उनके वंशजों ने ही प्रमुखतया भाग लिया था पर जो राजा राज्य कर रहे थे उन्होंने अंग्रेजों का ही साथ दिया।

१८५८

महारानी विक्टोरियाकी घोषणा ।

ब्रिटिश सरकारने अर्थात महारानी विक्टोरिया ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से भारत शासनका भार स्पष्ट ले लिया। इस अवसर पर महारानी विक्टोरिया के नाम यहां घोषणा की गई, जिसके कुछ महत्वके अंश नीचे दिये जाते हैं।

"भारतके राजाओं ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी अथवा उसके एजन्टों से जो सन्धियां या समझौते किये हैं उन्हें हम स्वीकार करते हैं तथा उनका पालन धर्मतः किया जायगा। आशा है कि राज लोग भी उसी तरह उनका पालन करेंगे।,,

"हम अपना राज्य और बढ़ाना नहीं चाहते। हम अपने अधिकार पर किसी का आक्रमण करना सहन न करेंगे और न दूसरों के अधिकारों पर ही आक्रमण होने देंगे। देशी राजाओंके अधिकारों और सम्मान की हम रक्षा करेंगे, तथा हमारी इच्छा है कि वे और हमारे अपने प्राजाजन उस सुखसमृद्धि के भागी हों, जो केवल शांतिं और सुशासन से ही मिलती है।"

यह हमारी इच्छा है कि धर्म अथवा धार्मिक आचरणों के ही कारण न किसी को पक्षपात किया जाय न किसी को कष्ट दिया जाय, प्रत्युत सबका संरक्षरण समान रूप से और बिना पक्षपात के कानून द्वारा किया जाय। हम अपने सब अधिकारियों को हुक्म देते हैं कि वे किसी के धर्मकार्य में हस्तक्षेप न करें अन्यथा वे हमारे क्रोध के भाजन बनेंगे।"

हमारी यह भी इच्छा है कि हमारी प्रजा के लोग उनका धर्म कर्म चाहे जो हो, यदि वह शिक्षा तथा सचाई आदि गुणों से युक्त हों तो शासन के सब पदों पर नियुक्त किए जांय।

सन १८५८ शासन विधान से कम्पनी का राज्य खतम कर डाला गया, तथा इंगलैंड में बोर्ड आफ कंट्रोल और बोर्ड आफ डाइरेक्टरर्स जो काम करते थे, उन्हें करने के लिये भारत सचिव नियुक्त किए गए और इनके सहायतार्थ इंडिया कौंसिल बना दी गई।

१८६१

इण्डिया कौंसिल्स ऐक्ट पार्लमेंट ने बनाया। इससे गवर्नर जेनरल की शासन परिषद् में कुछ परिवर्तन किया। पहले सब तरह के कानून यह परिषद् ही बनाया करती थी। अब कानून बनाने के लिये इसमें 'अतिरिक्त सदस्य' लेने की व्यवस्था की गई जिनकी संख्या ६ से कम और १२ से अधिक नहीं हो सकती थी। इन सदस्यों को गवर्नर जेनरल ही दो २ साल के लिये नियुक्त किया करते थे। सन १८३३ में बंबई और मद्रास की सरकार के कानून बनाने के अधिकार छीन लिए गए थे। इस साल वे फिर उन्हें उन्हीं शर्तों पर दिए गए। गवर्नर जेनरल को आज्ञा दी गयी कि बंगाल के लिए व्यवस्थापक सभा बनावें और पश्चिमोत्तर (आजकल के संयुक्त) प्रांत तथा पंजाब में भी वैसी ही सभायें बनाने का अधिकार गवर्नर जेनरल को दिया गया।

१८७०

लार्ड मेयो ने प्रांतों की आर्थिक व्यवस्था स्वतंत्र कर दी। (साइमन रिपोर्ट, भाग १, पृष्ठ २९९)

१८८१

मैसूर राज्य, पचास साल के ब्रिटिश शासन के बाद, हिंदू राजा को लौटा दिया गया।

१८८०—१८८४

लार्ड रिपिन के शासन का काल। स्थानीय शासन को उत्तेजना देने के लिए कानून बनाया गया और कहा गया कि यह पहली किस्त है। यूरोपियनों और हिंदुस्तानियों के विचार के लिये समान नियम बनाने के लिए इलबर्ट बिल पेश किया गया इस पर यूरोपियन इतने बिगड़े कि उन्होंने वायसराय को व्यक्तिगत धमकियां भी दीं पहले पहल एक बंगाली ने कलकत्ता हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस का काम अस्थाईरूप से किया तो देश भर में सनसनी फैल गई। इन्हीं कई कारणों से लार्ड रिपिन भारत सन्तानों में बड़े ही प्रिय हुए।

१८८५

इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना

इसके प्रधान समर्थक स्वर्गवासी ए० ओ० ह्यूम थे, जो पहिले सिविल सर्विस में थे। इन्होंने कई साल तक कांग्रेस के अवैतनिक सेक्रेटरी का भी काम किया था। (जन्म से सन् १९०५ तक कांग्रेस केवल शासन सुधारों के लिए और हिंदुस्तानियों को ज्यादा सरकारी नौकरियां दिलाने के लिये ही आंदोलन करती रही।)

१८९२

इण्डियन कौंसिल्स एक्ट बना। भारतीय और प्रांतीय व्यवस्थापक सभाओं के सदस्यों की संख्या कुछ बढ़ा दी गयी।

उन्हें कुछ अधिक बोलने का अधिकार दिया गया अब तक ये सदस्य केवल सरकार द्वारा ही नियुक्त किये जाते थे अब कुछ संस्थाओं को सदस्यों के लिये व्यक्तियों की सिफारिश करने के अधिकार दिये गये पर नियुक्ति बड़े लाट ही करते रहे।

१८९९—१९०५

लार्ड कर्जन का शासन काल। शासन कार्य में कई अच्छे सुधार किये गये। पर बंग भंग से राजनीतिक उत्तेजना बढ़ गई। पूर्व बंगाल और आसाम के अलग प्रांत बनाए जाने से मुसलमान सन्तुष्ट पर बंगाल के हिंदू बहुत असन्तुष्ट हुए तथा अन्य प्रांतों ने उनका साथ दिया। इसी समय क्रांतिकारी वृक्ष के बीज बंगाल में बोये गये।

१९०६

सर आगा खां के नेतृत्व में मुसलमानों का एक डेपुटेशन लार्ड मिंटो की, जो उस समय वायसराय थे, सेवा में गया। उसने कहा कि मुसलमानों का स्थान केवल उनकी संख्या से ही न ठहराया जाय बल्कि उनके राजनीतिक महत्व का भी खयाल किया जाय। यह (घातक) सिद्धान्त लार्ड मिंटो ने स्वीकार किया और परवर्ती सुधारों में मुसलमानों के लिये अलग "स्थान सुरक्षित" रखने तथा उनके स्वतन्त्र निर्वाचन की व्यवस्था की गई। (हिन्दू-मुसलमान द्वेष बीजारोपण। इसी वर्ष की कांग्रेस में, जो कलकत्ते में हुई थी, अध्यक्ष दादाभाई नौरोजी ने अपने अभिभाषण में कहा कि 'स्वराज्य' भारत का ध्येय है।)

१९०७

सूरत में उग्रदल और नरम दल के झगड़ों के कारण, कांग्रेस का अधिवेशन न हो पाया और उग्रदल कांग्रेस से अलग हो गया।

१९०८

[पंडित मदनमोहन मालवीय के उद्योग से प्रयाग में एक कनवेनशन हुआ, जिसमें केवल नरमदल के ही नेता उपस्थित थे। इसमें राजभक्ति कांग्रेस की 'क्रीड' बनाई गयी तथा और भी कुछ नियम बनाये गये। कांग्रेस की स्वीकृति के बिना ही यह "क्रीड" और नियम कांग्रेस पर लाद दिए गये।] भारत में ब्रिटिश राज्य के पचास साल पूर्ण होने पर सम्राट एडवर्ड के नाम से एक घोषणा निकाली गई जिसमें कुछ और सुधारों की भी सूचना थी। मुसलमानों के लिए स्थान संरक्षित रखने और अलग निर्वाचन की व्यवस्था को भारत सचिव लार्ड मोरले ने भी स्वीकार कर लिया।

१९०९

मोरलेमिंटो रिफार्म। व्यवस्थापक सभाओं के आकार बढ़ा दिये गये प्रांतों में गैरसरकारी सदस्यों की संख्या सरकारी सदस्यो से ज्यादः की गई। कुछ अधिक बोलने और प्रश्न करने के भी अधिकार दिये गए। सदस्यों के निर्वाचन की प्रथा पहले पहल चलाई गयी।

१९१०

सम्राट् जार्ज का राज्यारोहण और भारत में घोषणा। विक्टोरिया और सप्तम एडवर्ड की घोषणाओं का इसमें समर्थन किया गया था।

१९११

सम्राट जार्ज का भारत में आगमन और १२ दिसम्बर को दिल्ली में दरबार। इस अवसर पर आपने ही घोषणा की कि भारत सरकार की राजधानी कलकत्ते से दिल्ली चली जायगी, लार्ड कर्जन का वंग भंग रद्द करके सारा बंगाल मिला दिया जायगा और वहां लेफ्टनेण्ट गवर्नर की जगह पूरे गवर्नर होंगे, आसाम अलग प्रांत होकर उसका शासन चीफ कमिश्नर करेंगे। बिहार, छोटा नागपुर और उड़ीसा मिलकर अलग प्रांत होगा तथा उसका शासन लेफ्टनेंट गवर्नर करेंगे।

१९१२

१ अप्रैल को बंगाल की, ऊपर लिखे अनुसार, नयी व्यवस्था की गई। हिंदू खुश हुए पर मुसलमान असन्तुष्ट हुए क्यों कि पूर्व बंगाल और आसाम के अलग प्रांत होने से वहां इनका बहुमत होता था।

१९१४, १९१८

महासमर का समय भारत के राजाओं और लोगों ने जी खोलकर ब्रिटेन की सहायता की। भारतीय सेना ने युद्ध में अच्छा नाम कमाया। यहां से १३ लाख ४० हजार ब्रिटिश और भारतीय सैनिक रणक्षेत्रों में भेजे गये। इनमें ५ लाख ८५ हजार सहायक थे, शेष सिपाही और अफसर। पंजाब से अधिक सिपाही गये। इसके सिवा यहां से अन्न तथा अन्य प्रकार का सामान भेजा गया। यहां की सेना के रणक्षेत्र में पहुँच जाने पर उसका खर्च ब्रिटिश सरकार देती थी पर इस खर्च में भारत ने एक मुश्त १,५०,००,००,००० [एक अरब ५० करोड़] दान किया।

१९१७

भारत के सबन्ध में ब्रिटिश सरकार की नीति तत्कालीन भारत सचिव श्री मांटेगू ने २० अगस्त को प्रकाशित की, उसका आशय यह है—"भारत वासियों को शासन के हर विभाग में अधिकाधिक भाग देना और क्रमशः स्वायत्त शासन संस्थायें बढ़ाना जिसमें ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर भारत को "जिम्मेदारी का शासन" [रेस्पान्सिबल गवर्नमेंट] मिले।"

१९१८

इम्पीरियल वार कौंसिल ने इस आशय का निर्णय किया कि ब्रिटिश साम्राज्य के "सब देशों को, मय भारत के, अधिकार होगा कि अपने देश के जन समूह का सुनियंत्रण करने के लिए वह अन्य देशों से लोगों का आना बन्द करें।"

अप्रैल में शासन सुधार के संबन्ध में मांटेगू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट प्रकाशित हुई।

१९१९

शासन सुधार के लिए पार्लमेंट में गवर्नमेंट आफ इण्डिया बिल पेश किया गया। ५ जून को वह पार्लमेंट की सेलेक्ट कमेटी के पास, जिसके अध्यक्ष लार्ड सेलबर्न थे, विचारार्थ भेजा गया। नवम्बर में उस कमेटी की रिपोर्ट मिली। बिल पार्लमेंट में पास हुआ। २३ दिसम्बर को उस पर सम्राट के हस्ताक्षर होगए। इस कानून की प्रस्तावना में ये वाक्य हैं "चूंकि सन् १९१७ में घोषित नीति क्रमशः कार्य में लाई जा सकती है और उस ओर अच्छा कदम बढ़ाने का समय आ गया है, और चूंकि प्रत्येक अग्रगमन का समय और प्रकार

पार्लमेण्ट ही ठहरा सकती है, जिसपर भारतीयों की सुख समृद्धि की पूरी जिम्मेदारी है; इत्यादि।"

इस कानून के बन जाने पर सम्राट जार्ज ने एक घोषणा की थी, उसका एक अंश इस प्रकार है—

"इस कानून ने निर्वाचित प्रतिनिधियों को भारत-शासन की एक नियमित जिम्मेदारी दे दी है और पूर्ण जिम्मेदारी की राह दिखाता है।"

जिस समय इंग्लैंड में यह कानून बन रहा था उसी समय यहाँ, सब लोक प्रतिनिधियों के विरोध करते रहने पर भी, भारत सरकार ने अपने बहुमत के बल से बड़ी व्यवस्थापक सभा से "रौलेट ऐक्ट" बना दिया, जो भारतसन्तानों की स्वतन्त्रता का जड़ खोदने वाला था।

१३ अप्रैल को जेनरल डायरने जलियान वाला बाग में सैकड़ों स्त्री पुरुषों को भेड़ बकरियों की तरह मार डाला। महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया।

१९२०

जलियानवाला के कतलेआम और परवर्ती दमन नीति से भारतीय लोकमत जागृत हुआ। समस्त देश में क्रोध की ज्वाला धधक उठी। कलकत्ते में स्वर्गीय लाला लाजपतराय जी की अध्यक्षता में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में इन सुधारों के वहिष्कार का निश्चय हुआ।

नागपुर में कांग्रेस ने विशेष अधिवेशन के निर्णय को अपनाया, कांग्रेस का लक्ष्य 'स्वराज्य' ठहराया और उसे प्राप्त करने का उपाय अहिंसात्मक और उचित यत्न ठहराया गया। कांग्रेस का नया और दृढ़ सङ्गठन किया गया।

१९२१

ड्यूक आफ कनाट ने भारत आकर सम्राट का सन्देश सुनाया और नये सुधारों का श्रीगणेश किया। इसी समय सम्राट् की आज्ञा से एक नरेन्द्रमंडल बनाया गया। इसका कार्य केवल सलाह देना है पर इसके कारण राजाओं को परस्पर मिलने और परामर्श करने का अवसर मिलने लगा। सम्राट के सन्देश में यह वाक्य भी था—"आज वर्षों से, शायद पुश्तों से देश भक्त और राजभक्त भारतीय स्वराज्य का स्वप्न देख रहे हैं आज साम्राज्य के भीतर स्वराज्य का आरम्भ होता है।" कांग्रेस के बहिष्कार करने के कारण नयी कौंसिलों के पहिले निर्वाचन में बहुत कम वोटरों ने वोट दिये। नयी कौंसिलों में कांग्रेस का कोई भी नहीं गया।

१९२४

परलोकगत सर अलेग्जेण्डर मुडीमैन की अध्यक्षता में 'रिफार्म कमेटी' नियुक्त की गयी। इनकी रिपोर्ट का कोई महत्व नहीं है।

१९२७

भारत संतानों की शासन योग्यता की परीक्षा लेने के लिये, ८ नवम्बर को केवल श्वेतांगों का एक कमीशन नियुक्त किया गया, जिसके अध्यक्ष सर जान साइमन थे। भारतीय लोकमत ने इसका बहिष्कार का निश्चय किया। १६ दिसम्बर को प्रकाशित किया गया कि राजाओं की बातों पर विचार करने के लिये सर हारकोर्ट बटलर की अध्यक्षता में "इण्डियन स्टेट्स कमेटी" नियुक्त की जायगी।

१९२८

मई महीने में बम्बई में सर्वदल सम्मेलन ने, भारत विधान का खर्रा बनाने के लिये, पण्डित मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक कमेटी नियुक्त कर दी। इस कमेटी की रिपोर्ट अगस्त में प्रकाशित हुई और सितम्बर में, लखनऊ के सर्वदल सम्मेलन में, वह कुछ परिवर्तनों सहित स्वीकृत हुई।

दिसम्बर में कलकत्ते में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ और उसमें महात्मा गांधी के प्रस्ताव करने पर निश्चित हुआ कि ईसवी सन् १९२९ के अन्त तक यदि ब्रिटिश सरकार नेहरू रिपोर्ट को स्वीकृत न करे तो कांग्रेस सविनय आज्ञा भंग का आन्दोलन आरम्भ कर देगी।

इसी समय दिल्ली में मुसलमानों की एक सभा सर आगा खां के सभापतित्व में हुई और उसने मुसलमानों के लिये अधिक अधिकार, कौन्सिलों में अधिक और संरक्षित स्थान तथा स्वतन्त्र निर्वाचन का दावा किया। अली बन्धुओं ने प्रकाश्य रूप से कांग्रेस का विरोध करना प्रारम्भ किया।

१९२९

इंडियन स्टेट्स कमेटी की रिपोर्ट मार्च में प्रकाशित हुई। उसने राजाओं पर प्रभु शक्ति का पूर्ण और यथेच्छ अधिकार होने की बात पर जोर दिया, उनके और ब्रिटिश सरकार के झगड़ों का निपटारा करने के लिये स्वतन्त्र न्यायालय बनाने से इनकार किया और राजाओं का सम्बन्ध भारत सरकार से न रखकर वायसराय के द्वारा प्रत्यक्ष ब्रिटिश सरकार से रखने की सिफारिश की। राजा इस रिपोर्ट से सन्तुष्ट नहीं हुये।

३१ अक्तूबर को वायसराय लार्ड अरविन ने प्रकाशित किया कि १९१७ की घोषणा में जिस जिम्मेदार शासन का उल्लेख है उसका मतलब, ब्रिटिश सरकार औपनिवेशिक पद समझती है। साइमन रिपोर्ट के प्रकाशित होजाने पर लंडन में, ब्रिटिश भारत के, देशी राजाओं के और ब्रिटेन के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन (गोलमेज कानफरेन्स) करने का विचार भी आपने प्रकट किया।

गोलमेज कानफरेन्स में किस बात पर विचार होगा और लार्ड अरविन तथा ब्रिटिश सरकार औपनिवेशिक स्वराज्य का समर्थन करने को तयार है अथवा नहीं' इन प्रश्नों का सन्तोष जनक उत्तर न मिलने के कारण दिसम्बर के अन्त में, लाहौर में, कांग्रेस ने नेहरू योजना को रद्द कर दिया और पूर्ण स्वराज्य को ही अपना ध्येय बनाया। व्यवस्थापक सभाओं और गोलमेज कानफरेन्स के बहिष्कार की सलाह दी गयी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को सविनय अवज्ञा प्रारम्भ करने का अधिकार दिया गया।

१९३०

अप्रेल में महात्मा गांधी ने नमक कानून तोड़ने के लिये कूच कर दिया। उसके बाद को घटनाएं सब की आंखों के सामने हैं।

साइमन रिपोर्ट प्रकाशित हुई। गोलमेज के लिये 'वायसराय के चुने हुये भारत के प्रतिनिधि'' लंडन गये। १२ नवम्बर से उसका आरम्भ हुआ।

१९३१

२० जनवरी राउण्डटेबल समाप्त। ता० ९-१० फरवरी श्री सप्रू आदि की महात्मा जी से प्रयाग में बातचीत हुई।

॥ वन्देमातरम् ॥

ज़िला देहरादून से कांग्रेस आन्दोलन मे जेल यात्रा करने वालों की नामावली।

संख्या	नाम	दफ़ा जुर्म	दण्ड	तारीख गिरफ्तारी	विशेष विवरण
१	श्री पं० नरदेव शास्त्री प्रथम डिक्टेटर	साल्ट एक्ट	६ मास सादा	२८ अप्रैल सन १९३०	वनस्पतिऔषधालय में गिरफ्तार किये गये।
२	श्री पं० महावीर त्यागी प्र० जि० कां० कमेटी	,,	,,	,,	खाराखेत में तीसरे जत्थे के साथ।
३	चौ० बिहारीलाल प्र० मं० जि० कां० क०	,,	,,	,,	खाराखेत में तीसरे जत्थे के जत्थेदार होने से
४	श्री पं० नारायणदत्त जी डुंगवाल (सेनापति)	,,	,,	,,	अपने घर। आप तहसील कां० क० के प्रधान थे।
५	श्री स्वामी विचारानन्द जी सरस्वती प्रधान शहर कां० क०	,,	,,	,,	आप अभय आश्रम में गिरफ्तार किये गये।

६ चौ० दुलास वर्मा	,,	,,	,,	खाराखेत में तीसरे जत्थे के साथ। आप पहिले नमक सत्याग्रह के जत्थे के जत्थेदार थे।
७ पं० रामस्वरूप जी नवकोटि	,,	६ मास सख्त	१७ मई सन ३०	कचहरी ग्राउण्ड में। चार कौंसिल में दूसरे डिक्टेटर।
८ श्री प्रो० बालकृष्ण केसकर	,,	,,	,,	प्रान्तिय कार्यकर्त्ता, विद्यापीठ बनारस के प्रोफेसर।
९ सोमेन्द्र मुकर्जी	,,	,,	,,	तहसील सेक्रेटरी।
१० पं० विद्याव्रत जी	,,	,,	,,	मंत्री शहर कांग्रेस कमेटी।
११ कृष्ण चन्द्र जी	,,	,,	,,	मंत्री नौजवान भारत सभा।
१२ श्री स्वामी केवलानन्द जी	,,	,,	,,	हर्षीकेश के प्रधान कार्यकर्त्ता।
१३ पं० महादेव जी शर्मा	,,	,,	,,	जत्थेदार राणीपोखरीवाले।
१४ श्री राजपति पाण्डेय	,,	६ मास सख्त	३ जून सन १९३०	सेक्रेटरी नौजवान भारत सभा।

१५ पं० गुरुप्रसाद जी	पिकेटिंग आर्डिनन्स	१ माह सादी	४ जून ३०	तहसील सेक्रेटरी।
१६ खुशीराम जी कम्पौण्डर	,,	,,	,,	
१७ छज्जूराम जी सन्दल	,,	,,	,,	
१८ मातबरसिंह जी	,,	,,	,,	
१९ कुलानन्द जी	,,	,,	,,	
२० ला० रामकृष्ण जी सेनापति	,,	,,	,,	
२१ भुवनेश्वर जी	,,	,,	,,	
२२ चण्डीप्रसाद जी	,,	,,	,,	
२३ दर्शनलाल जी	,,	,,	,,	
२४ चन्द्रनसिंह जी	,,	,,	,,	
२५ पूरनमल	,,	,,	,,	

१०) रु० जुरमाना न देने पर सामान कुर्क कर वसूल किया गया इस तरह १२ दिन बाद जु० व० होनेपर छोड़ दिया गया।

२६ गौतमदेव जी सिद्धान्तालंकार	साल्ट एक्ट	६ मास सख्त	९ जून १९३०	थर्ड डिक्टेटर वार कौंसिल
२७ जगदीश प्रशाद जी खजानची	,,	,,	,,	नौजवान भारतसभा
२८ अब्दुलरहमान जी	,,	,,	,,	
२९ निसार अहमद जी	,,	,,	,,	
३० टीकासिंह जी	ज़ेरसमायत दफा १३१	,,	१२ जून १९३०	फौज़में बगावत फैलाने के अभियोग में।
३१ रामप्रसाद जी	,,	,,	,,	
३२ उदयसिंह गोरखा	साल्ट एक्ट	६ मास सख्त	१५ जून १९३०	
३३ होशियारसिंह	,,	,,	,,	मंत्री कांग्रेस कमेटी रायपुर।
३४ खड्गबहादुरसिंह जी जत्थेदार गोरखा।	दफा ना मालूम	३ मास सख्त	९ जून १९३०	आप ७ जुन सन् ३० को घरसाना नमक बनाने के लिये १७ गोरखों का जत्था लेकर रवाना हुये थे रास्तेमें गिरफ्तार किये गये।

३५ रीठासिंह जी	दफा नामालूम	२मास सख्त	९ जून ३०	
३६ घनश्यामस्वरूप जी	"	"	"	
३७ धनपत जी	"	"	"	
३८ हुकुमसिंह जी	"	"	"	
३९ अमरसिंह जी	"	"	"	
४० रणवीरसिंह जी	"	"	"	
४१ दानसिंह जी	"	"	"	
४२ श्रीकृष्ण जी	"	"	"	
४३ नत्थूराम जी	"	"	"	
४४ ध्रुवसिंह जी	"	"	"	
४५ शेर बहादुर जी	"	"	"	
४६ गौतमचन्द्र जी	"	"	"	
४७ घनश्याम जी	"	"	"	
४८ पं० सुन्दरलाल जी	दफा १०८	१ वर्ष सादा कैद	१९ जून	बिधौली कां० क० के मंत्री। आप से ५००) ५००) के २ मुचलके और जमानत मांगी।

४९ डा० बाबूलाल जी	साल्ट एक्ट	६ मास सख्त	२ जौलाई सन ३०	अपनी दुकान से। चौथे जत्थे के नायक
५० ज्योतीप्रसाद जी	द० १५४	६ मास सख्त	,,	महोमदजान विसाती की दूकान पर सिगरेट पिकेटिंग करते हुये गिरफ्तार हुये।
५० गिरधारी लाल	,,	,,	,,	,,
५२ नवलकिशोर जी	,,	,,	,,	,,
५३ किशनसिंह जी	,,	,,	,,	,,
५४ गोपीनाथ जी	दफा १४५	६ मास सख्त	२ जौलाई सन ३०	,,
५५ स्वामी गोविन्दनन्द जी	,,	,,	,,	,,
५६ हरद्वारीलाल जी	,,	,,	,,	,,
५७ बुन्दू जी (मुसलमान)	,,	,,	,,	,,
५८ इन्द्रसैन जी	,,	,,	,,	,,
५९ सुगनचन्द जी मास्टर	,,	,,	,,	,,
६० सिपाहीलाल जी	,,	,,	,,	,,

६१ कुलानन्द जी	दफा ३४	२ मास सादी	३ जौलाई १९३०	मुहम्मदशाह की दुकान पर धरना देते हुये ५०, ५० रु० जुर्माना न देने पर २ मास की सादी सज़ा।
६२ ज़हरसिंह जी	,,	,,	,,	
६३ नैनसिंह जी	,,	,,	,,	
६४ बद्रीप्रसाद जी	,,	,,	,,	
६५ नारायणसिंह जी	दफा १८८	३ मास सख्त	४ जौलाई	खुल्ली लगा कर १४४ की खिलाफ़ वर्जी की।
६६ जुगलकिशोर जी	,, १०८	१ साल सादी	१४ ,,	राजपुर से गिरफ्तार। ३ मास के बाद मुआफी माँग ली
६७ ईश्वरचन्द जी	,, ४४८, ४२६	३ मास सख्त	१८ ,,	डोईवाला की शराब की दुकान पर धरना देते हुये पकड़े गये। आप डोईवाला कां० क० के प्रधान हैं।
६८ श्यामलाल जी	,,	,,	,,	
६९ ध्यानचन्द जी	,,	,,	,,	

७०	नत्थूराम जी	,,	,,	,,	
७१	हीरालाल जी	,,	,,	,,	
७२	पं० गुरुप्रसाद जी	दफा १५७	६ मास सख्त	२१ जौलाई सन ३०	आप स्थानापन्न ज़ि० कां० क० के मंत्री थे और दो बार सज़ा मिली।
७३	लाला केदारनाथ जी	,,	,,	,,	कोषाध्यक्ष
७४	कृष्णदत्त जी	,,	,,	,,	चतुर्थ डिक्टेटर
७५	लाला मित्रसैन जी आढ़ती	,,	८ मास सख्त	२४ जौलाई	स्थानापन्न ज़ि० प्रधान ६ मास कैद और २००) जुर्माना या २ मास कैद और।
७६	भूमानन्द जी	पुलिस एक्ट ३	४ माह सख्त	३१ ,,	
७७	लाला रामकृष्ण जी	दफा १०८	१ साल सादी	१३ अगस्त सन १९३०	आप ५ वें डिक्टेटर हैं।
७८	श्री हारान्चन्द्र बैनर्जी	पिकेटिंग आर्डिनेन्स	४ मास कैद	२२ ,,	मिशन स्कूल पर पिकेटिंग करते हुये।
७९	भगवतप्रसाद जी	,,	,,	,,	३, ३ मास की कैद और ५०) ५०) जुर्माना न देने पर एक मास की और कैद

८० पं० रामनाथ जी दीक्षित	पिकेटिंग आर्डिनैन्स	४ मास कैद	२२ अगस्त सन् ३०	
८१ राममोहनराय जी	,,	,,	,,	
८२ महेशानन्द जी	,,	,,	,,	
८३ श्यामलाल जी	पिकेटिंग आर्डिनैन्स	६ मास कैद सख्त ५०) रु० जुर्माना	३० सितम्बर सन् ३०	आप छटे डिक्टेटर थे।
८४ श्री छज्जूमल जी	,,	,,	,,	आप की दो लड़कियां भी जेल में हैं।
८५ श्रीमती सरस्वती देवी जी	,,	३ मास कैद और ७५) रु० जुर्माना	,, ,,	आप साहित्याचार्य्य हैं।
८६ मास्टर गुणानन्द जी	,,	६ मास कैद और ५०) रु० जुर्माना	,, ,,	आप बी० एस० सी० हैं। और गोरखा स्कूल के हेड मास्टर थे।
शिवनाथ जी शर्मा	,,	,,	,,	

८८ धर्मदर्शनसिंह जी	,,	३ मास कैद ५०) जुर्माना	,,	
८९ खुशीराम जी	,,	६ मास कैद २०) जुर्माना	८ अक्तूबर	सेनापति
९० रणवीर जी वर्मा	,,	३ मास कैद २०) जुर्माना	,,	स्टुडेन्टयूनियन के मेम्बर
९१ श्रीराम जी	,,	६ मास और २०) जुर्माना	,,	भण्डारी
९२ कन्हैयासिंह जी	,,	,,	,,	जुर्माना न देने पर १॥ मास
९३ प्रतापसिंह जी	,,	,,	,,	की सज़ा और
९४ शम्भूलाल जी	,,	,,	,,	,,
९५ अर्जुनसिंह जी	,,	,,	,,	,,
९६ यदुनाथ जी	,,	१॥ मास या ५०) जुर्माना	,,	,,
मोहनसिंह जी	,,	६ मास कैद २०) जुर्माना	,,	,,

९८ कन्हैयालाल जी	पिकेटिंग आर्डिनेन्स	६ मास कैद	८ अक्टूबर सन ३०	जुर्माना न देने पर १॥ मास की सज़ा और।
९९ [illegible]सिंह जी	,,	,,	,,	,,
१०० [illegible]सिंह जी	,,	,,	,,	,,
१०१ [illegible]सिंह जी	,,	३ मास और २०) जुर्माना	,,	,,
१०२ पं० गणेशदत्त जी	,,	६ मास कैद ५०) जुर्माना	३०-९-३०	जत्थेदार कां० क० मौनपुर जुर्माना न देने पर १ मास और कैद
१०३ श्रीमती शर्मदा त्यागिनी	,,	३ मास कैद ५०) जुर्माना	१३ अक्टूबर	सातवीं डिक्टेटर महावीर त्यागी की धर्मपत्नी। जुर्माना न देने पर १॥-१॥ मास की कैद और
१०४ श्रीमती भगवतीदेवी जी	,,	,,	,,	
१०५ श्रीमती रामकुमारी देवी	,,	,,	,,	राजेन्द्रसिंह जी की धर्मपत्नी
१०६ श्रीमती श्यामादेवी जी	,,	,,	,,	
१०७ श्रीमती उमादेवी जी	,,	,,	,,	शर्मदा त्यागी की ५ माह की बच्ची

१०८	प्रेमदेवी जी	...	...	..	भगवती देवी की लड़की
१०९ } ११० }	श्रीमती रामलुभायी देवी के दो बच्चे				
१११	बसन्त कुमार	पिकेटिंग	६ मास सख्त आ०	११-१०-३०	मसूरी कांग्रेस कमेटी क० का वालिन्टियर था।
११२	हरिचन्द कपूर	दफा १०९	१ मास कैद	२१-१०-३०	एक मास के बाद छोड़ दिया
११३	मा० कलमसिंह	पिकेटिंग	६ मास कैद	,,	डोईवाले की शराब की दुकान पर से
११४	बेनीप्रसाद	,,	,,	,,	,,
११५	पूर्णानन्द	,,	,,	,,	,,
११६	ज्वालाप्रसाद	,,	६ मास	२३-१०-३०	प्रधान डोईवाला का० क०
११७	आनन्ददेव	,,	,,	,,	
११८	मोहनलाल	,,	,,	,,	

११९	ला० ऊधौराम	दफा १४८ अण्डरट्रैयल १४९, १२४	ता० १५, १६ अगस्त सन् ३०
१२०	ला० जगन्नाथ प्रसाद	,, ,,	,,
१२१	ला० ज्योतिप्रसाद	,, ,,	,,
१२२	ला० हरिचन्द	,, ,,	,,
१२३	ला० मन्शाराम	,, ,,	,,
१२४	ला० रंगीलाल	,, ,,	,,
१२५	ला० कृष्णाचन्द्र	,, ,,	,,
१२६	ला० देवकीनन्दन	,, ,,	,,
१२७	ला० दुन्दूमल	,, ,,	,,
१२८	ला० गार्लीमल	,, ,,	,,
१२९	ला० आनन्दीप्रसाद	,, ,,	,,
१३०	ला० मैत्रीप्रसाद	,, ,,	,,
१३१	ला० कुन्दनलाल	,, ,,	,,
१३२	ला० उग्रसेन	,, ,,	,,
१३३	ला० चण्डीप्रसाद	,, ,,	,,

आप लोग देहरादून के अच्छे आढ़ती हैं और कांग्रेस से प्रायः सहानुभूति रखते हैं और समय २ पर सहायता भी करते रहते हैं स्वार्थी लोगों ने कुछ बदमाश लोगों को इकट्ठा करके अमन सभा की रचना की और एकदिन उनका जुलूस निकाला उस में दंगा कराकर इन सब लोगों को बलवे के इलजाम में गिरफ्तार कर दिया है अब तक मुकद्दमा चल रहा है।

१३४ पं० चन्डीप्रसाद	,,	,,	,,		
१३५ म० ज्ञानप्रकाश	,,	,,	,,		
१३६ माड़िया ठेले वाला	,,	,,	,,		
१३७ शङ्कर	,,	,,	,,		
१३८ निर्मल	,,	,,	,,		
१३९ जानकी	,,	,,	,,		
१४० शङ्कर दूकानदार	,,	,,	,,		
१४१ ला० दयाराम	,,	,,	,,		
१४२ ला० जसराम	,,	,,	,,		
१४३ ला० नत्थूसिंह	,,	,,	,,		
१४४ ला० प्यारेलाल जी	,,	,,	१९ अगस्त	आप लोग भी आढ़ती हैं और पुलिस ने बलवा केस अभियोग चला रक्खा है।	
१४५ ,, प्रभुलाल	,,	,,	,,		
१४६ ,, स्यामलाल	,,	,,	,,		
१४७ शम्भूमल मुनीम	,,	,,	,,		
१४८ रामशरण	,,	,,	,,		

१४९	पं० अमरनाथ वैद्य शर्मा	विक्टोरिया आर्डिनेन्स	६ मास कैद सख्त और (५०) रु०	५ नवम्बर सन् ३०	भूत पूर्व प्रधान कां० क० । आप कांग्रेस के उत्साही कार्य कर्त्ता हैं ।
१५०	चौ० हुल्लासराम	,,	६ मास और २५)	,,	आप दो बार गिरफ्तार हुये
१५१	मित्रसैन जैन वैद्य	१८८ दफा	६ मास कैद ५०) रु०	२६ नवम्बर सन् ३०	आप आठवें डिक्टेटर थे और जवाहर दिवस पर १४४ दफा लगने पर भी जुलूस निकालने और निश्चित वाक्योंके पढ़ने पर गिरफ्तार किये गये ।
१५२	पं० रंगीलाल	,,	,,	,,	
१५३	महाराजप्रसाद	,,	३ मास कैद २५)	,,	
१५४	हरिकृष्ण	,,	,,	,,	
१५५	हरिदयाल गुप्त	,,	,,	,,	
१५६	रूपचन्द	,,	,,	,,	
१५७	रमाशङ्कर	,,	,,	,,	

१५८	जयप्रकाश	,,	,,	,,	
१५९	श्रीमती यशोदादेवी	,,	,,	,,	आप कन्यागुरुकुल की अध्यापिकायें हैं।
१६०	,, यज्ञवतीदेवी	,,	,,	,,	
१६१	स्वा० विद्यानन्द जी सरस्वती	पुलिस पकड़ दफा २२	६ मास कैद १२ दि० ५०) रु०		आप अभी जेल से छूट कर आये थे।
१६२	हरिकृष्ण	[illegible]	—	१७ मई ३०	आप लोग कुछ सबूत न होने के कारण छोड़ दिये गये थे हरिकृष्ण जी फिर भी छः मास को आये।
१६३	हरीराम	,,	—	,,	
१६४	अवध	दफा ३२	—	८ जून	आप लोग भी छोड़ दिये गये।
१६५	बनारसीदास		—		
१६६	ज्ञानचन्द्र	दफा १४४	—	१२ जौलाई ३०	आप बाल भारत सभा के मन्त्री और प्रधान थे पुलिस द्वारा बुरी तरह पीटे गये और गिरफ्तार हुये किन्तु १०, ११ वर्ष के बालक होने के कारण छोड़ दिये गये।
१६७	खुशहालसिंह	,,	—	,,	

१६८ बद्रीप्रसाद	पिकेटिंग आर्डिनेन्स	—	२ जौलाई ३०	जुर्म साबित न होने पर छोड़ दिये गए।
१६९ दुर्गालाल	,,	,,	,,	
१७० रतनसिंह	,,	,,	,,	
१७१ अमरसिंह	,,	,,	,,	
१७२ अतरसिंह	,,	,,	,,	
१७३ पं० निरंजनलाल		६ मास		बम्बई से पकड़े गये।

जनवरी से मार्च १९३१ की मुख्य घटनायें ।

ता० २१ जनवरी राऊण्डटेबल समाप्त ।

ता० २१ श्रीनिवास शास्त्री, श्री जयकर, श्री सप्रू आदि का प्रस्थान भारत के लिये ।

ता० २५ श्री मोतीलाल जी का स्वास्थ्य चिन्ताजनक।

ता० २५ श्री पं० जवाहरलाल छूटे ।

ता० २६ महात्मा गान्धी यरवदा जेल से छूटे देश भर में स्वतन्त्रता दिवस ।

ता० २७ अन्य वर्किंग कमेटी के सदस्य छूटे ।

ता० २८ महात्मा जी प्रयाग आये ।

२८ से ३ फरवरी तक सब नेता प्रयाग में ।

५ फरवरी—श्री मोतीलाल जी को लखनौ लेगये ।

६ फरवरी—श्री मोतीलाल जी का देहावसान प्रातः ६ बज कर ३० मिनिटपर—११ बजे सब प्रयाग को रवाना ।

६—प्रयाग में स्मशान पर मृतकसंस्कार महात्मा जी तथा मालवीय जी के भाषण, देशभर में हड़ताल तथा महा शोक ।

७—देहरे में हड़ताल शोक सभा ।

वर्किंग कमेटी प्रयाग में ही होगी—श्री सप्रू आदि प्रयाग को रवाना ।

ता० ७ नवाब भोपाल महात्मा जी से मिले ।

ता० ८ करांची में कांग्रेस की तैयारियां शुरू हुईं—मार्च के अन्तिम सप्ताह में होगी—अभी तक देश में दमन चक्र जारी है । श्रीनिवास शास्त्री आदि कहते हैं कि समस्त राजनैतिक कैदियों को छोड़ने से लाभ होगा । महात्मा जी ने दमनचक्र की तीव्र निन्दा की है और वायसराय को लिखा है कि देवियों पर जो अत्याचार किये हैं उसकी जांच के लिये कमीशन बिठाओ लण्डन के न्यूज एक्सप्रेस के बल किया है । असेम्बली में राजनैतिक कैदियों की रिहाई के प्रश्न पर खूब बहस हुई—

सरकार की ओर से फजलुलहक़ ने कहा जब तक कांग्रेस अपना आन्दोलन ढीला नहीं करती तब तक सरकार रिहाई के प्रश्न पर विचार नहीं कर सकती। मिस्टर रेनर ने कहा कि हिंसात्मक कैदियों की रिहाई की बाबत सोचा भी नहीं जासकता। महात्मा जी ने कहा है कि जयकर सप्रू आदि से बात करनेपर यदि मुझे सन्तोष हुआ तो मैं आन्दोलन को ढीला करने की बात सोच सकता हूं—

ता० १३ को वर्किङ्ग कमेटी प्रयाग में हुई सरदार पटेल करांची कांग्रेस के सभापति चुने गये।

१०—फरवरी महात्मा जी के पास वायसराय का निराशा-जनक उत्तर आया कि पुलिस के अत्याचार सम्बन्धी जांच करने का यह मौका नहीं—मैंचस्टरगार्डियन कहता है कि इस समय अधिक ज़ोर देना उपयुक्त नहीं—महात्मा जी उत्तर तैयार कर रहे हैं।

१० फरवरी—यू० पी० के जेलों के अत्याचारों की जांच के लिये कमेटी बैठी।

१०—फरवरी से ४ मार्च तक वायसराय और महात्मा गान्धी की बात चीत वर्किंग कमेटी की बैठक देहली में।

४ मार्च—अस्थायी सन्धि की शर्तें मंजूर हुई।

४ मार्च से—२०—मार्च सहस्रों कैदी छूटे।

१९ मार्च—देहरे के बलवे के केस में समझौता होगया।

ता० २३ मार्च ३१ को साढ़े सात बजे शाम को सरदार भगतसिंह और उनके साथी श्री सुखदेव और श्री राजगुरु को लाहौर में फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया। ता० २४ को देश भर में हड़ताल मनाई गई।

२८-२९-३० मार्च कराची कांग्रेस।

❀ परिशिष्ट ❀

गढ़वाली सिपाहियों का कोर्ट मार्शल

मुकद्दमे व उसके प्रतिवाद का हाल

गढ़वाली सैनिकों की सजा का खुलासा।

२-१८—रायल गढ़वाल पल्टन के जिन सैनिकों का कोर्ट मार्शल हुआ था उन्हें इस प्रकार सजा मिली:—

आजन्म कालापानी

हवलदार चन्द्रसिंह भण्डारी;

कालापानी

हवलदार नारायणसिंह गुसाईं १५ साल, नायक केशरसिंह रावत १० साल, नायक जीतसिंह रावत १० साल;

सख्तकैद की सजा

नायक हरकसिंह धपोला ८ साल, नायक भोपालसिंह ६ साल, बिगलर लान्स नायक भीमसिंह बिष्ट ८ साल लान्स नायक आनन्दसिंह रावत ५ साल, ला० नायक खुशालसिंह गुसाईं ५ साल, ला० नायक उमरावसिंह रावत ६ साल, ला० नायक हुकमसिंह कठेत ८ साल, ला० नायक सुन्दरसिंह बुटोला ५ साल, ला० नायक रतनसिंह नेगी ४ साल, ला० नायक जीतसिंह बिष्ट ६ साल, (१ साल जनरल औफिसर कमाण्डर इनचीफ ने कम कर दिया है) ला० नायक आलमसिंह फर-

स्वाण ४ साल, ला० नायक भवानसिंह रावत ३ साल, ला० नयाक महेन्द्रसिंह नेगी ३ साल।

२-१८ रौयल गढ़वाल रायफल्स के प्लेटून नम्बर एक और नम्बर ४ के बिना कमीशन वाले १७ गढ़वाली सिपाहियों का काम कोर्टमार्शल, अबोटाबाद केन्टोनमेन्ट से ५ मील दूर पर काकुल में आर्टिलरी स्कूल के बड़े कमरे में २ जून को प्रारम्भ हुआ। बयान आरम्भ होने के पहिले अदालत के सात मेम्बरों ने जज-एडवोकेट, और दो दुभासियों (एक ब्रिटिश औफिसर व एक गढ़वाली औफिसर) ने सौगन्ध खाने की रस्म को पूरा किया। अदालत की काररवाई पबलिक सुन सकती थी, परन्तु दूर होने की वजह व काकुल में जाने के लिये इजाजत मांगने की जरूरत के वजह पबलिक नहीं आई। जब कि लाहौर के डाक्टर नारंग, यम० यल० सी० बैरिष्टर व अबोटाबाद के बैरिष्टर मिस्टर जयदेव और दो स्थानीय वकील यहां आये थे, केवल उसी दिन लोगों ने जिरह सुनी थी।

अदालत में एक ही सम्वाददाता मौजूद था जो लाहौर के 'सिविल एण्ड मिलिटरी गजट', 'स्टेट्समैन' व 'टाइम्स आफ इण्डिया' पत्रों के लिये जिरह की पूरी रिपोर्ट भेजता था, वह पेशावर से इसी काम के लिये आया था। यशोशियेटेड प्रेस का सम्वाददाता भी ६ जून को अबोटाबाद पहुँचा। मुकद्दमा सात जून को समाप्त होगया था।

जैसा पबलिक को मालूम है, साठ आदमियों की दो प्लेटून ही (नम्बर १ और नम्बर ४) केवल इस मामले में सम्मिलित थीं, इनको छोड़कर करीब ८०० आदमियों की पूरी बैटेलियन

का इसमें कुछ भी भाग न था। जांच के लिये जो आदमी अलग रखे गये थे और जिनका चालचलन ठीक नहीं मालूम होता था वे संख्या में कुल ६० थे, वे एक दम सारी रेजिमेंन्ट से अलग हटाये गये, इनमें एक हवल्दार चन्द्रसिंह था जो एक अलग कमरे में बन्द कर दिया गया और जिसपर गोरों ने पहरा दिया। वह बाहर हाथों में हथकड़ियां पहने हुये लाया जाता था। अन्य १६ अभियुक्तों में एक हवल्दार नारायणसिंह था और नौ नायक थे। ये नौ नायक अलग अलग स्थानों में रखे गये थे। जिन पर बन्दुकधारी गोरे पहरा देते थे। इनके अलावा, अन्य ६ लान्स नायक एक कांटेदार तार से घिरे हुये स्थान पर सिपाहियों के साथ ही रखे गये, यहां पर भी हथियारों से सुसज्जित गोरे सिपाही रखवाली करते थे। सभी अभियुक्त पेटी व अस्त्र को छोड़कर अन्य पूरी यूनिफार्म पहिन सकते थे। केवल हवल्दार चन्द्रसिंह जी के अलावा किसी पर भी हथकड़ी नहीं थी। उन सब को ही भोजन दिया जाता था।

जांच पड़ताल की अदालत के जरिये यह तै किया गया कि पहिले उन दो हवल्दारों का, व १५ नायकों व लान्सनायकों का ही फैसला किया जाय। रायफलमैन अभियुक्तों का फैसला नहीं किया गया। गोकि अभी तक वे अलग कैम्प में हैं और उन ६ आदमियों के साथ रखेगये हैं जिनका फैसला होगया है लेकिन बहुत मुमकिन है कि इस फैसले के होने की वजह इनकी जांच बिलकुल भी न हो।

जैसे साधारण सेशन के मुकदमों में मजिस्ट्रेट शुरू में कुछ गवाही ले लेता है, वैसे ही प्रौसीक्यूटर भी संक्षिप्त में गवाही ले लेता है, लेकिन इस संक्षिप्त गवाही में अभियुक्त किसी भी सला-

हकार को नहीं रख सकते, गोकि उनसे पूछा जा सकता है कि वे गवाहों से सवाल पेश कर सकते हैं।

जनरल कोर्ट मार्शल की तारीख २ जून को मुकर्रर हुई थी। २५ मई को २।१८ रोयल गढ़वाल रायफल्स के कमाण्डिंग ऑफिसर साहब ने मि० मुकन्दीलाल बी० ए० (ऑक्सन) बॉरिस्टर एम० एल० सी० को तार दिया कि गदर में भाग लेने वाले १७ अभियुक्त अपनी ओर से आपको सलाहकार रखना चाहते हैं। यदि आप ऐसा करना मुमकिन समझते हैं तो लिखिए कि आप की फीस क्या होगी। तार में यह भी जिक्र था कि पल्टन आपकी फीस की कुछ भी जुम्मेवरी न लेगी। अभियुक्त हो उनका यदि उनसे हो सका तो उनकी फीस देंगे मिस्टर मुकन्दीलाल ने अपनी फीस के बाबत लिख भेजा जो अभियुक्तों ने देना स्वीकार किया। इस पर वे २८ ता० मई लैंसडौन से रवाना हुए और २९ ता० रात को अबोटाबाद पहुँच गए। वहां उनको अभियुक्तों को बचाने के लिए व प्रतिवाद करने के लिए, ३० मई से ७ जून तक ३।१८ रोयल गढ़वाल रायफल्स के कैप्टेन चैलन से मदद मिली, ये केवल इसी वास्ते कोहाट से बुलाये गये थे। पहली जून तक ये दोनों कैदियों को निरीक्षण करने में व उनको बचाने में ही मशगूल रहे। संक्षिप्त गवाही के संक्षिप्त वर्णन की कापी, व फैसले से सम्बन्ध रखने वाले अन्य कागजात, अभियुक्तों के सलाहकार को दिये गये। शुरुआत की छोटी 'इनक्वायरी' में लिए हुए गवाही के कागजात भी सलाहकार को दिये गये। इसके अलावा, उन्हें मिलिटरी अधिकारियों ने व प्रौसीक्यूटर ने सभी सुभीते प्रदान किये। कर्नल किंग साहब ने प्रोसीक्यूटर का पद ग्रहण किया

था। वे भी स्वयं कुछ मामलों में गवाही में शरीक हुए जिसके जरिये सलाहकार को मुमकिन हुआ कि वह अभियुक्तों के बचाव व जिरह पैदा करने का कोई भी मौका हाथ से न जाने दें।

अदालत की गवाहियों से यह मालूम हुआ कि २४ ता० अप्रैल को दो बजे दिन तक अभियुक्तों ने अपनी सभी ड्यूटी पूरी की, व पल्टन के सभी कानून के अनुसार हुक्म बजाये।

सलाहकार की अभियुक्तों के बचाने की कोशिश और उनके मुतल्लक दलील:—

मिस्टर मुकन्दीलाल सलाहकार ने अभियुक्तों को बचाने के लिये कोई गवाही पेश नहीं की किन्तु अभियुक्तों के लिखे हुए बयान पेश किये जो कोर्ट मार्शल से जांच के अनुसार अभियुक्तों की गवाही के बतौर समझी जाती है। इसलिये मिस्टर मुकन्दीलाल ने अपने मुवक्किलों के बचाव के लिये स्वयं ही दलील पेश की। कोर्ट मार्शल अदालत का यह कायदा है कि अभियुक्तों के बचाव व उन पर लगे हुये दोषों की जिरह का पहिले एक संक्षिप्त वर्णन दिया जाता है, क्योंकि ये फाइल में रखी जाती हैं। सलाहकार ने प्रथम अपनी २० पेज की दलीलें पढ़ी फिर उसे जबानी समझाया। सलाहकार मिस्टर मुकन्दीलाल ने यह दलील भी की कि अभियुक्तों ने बलवा नहीं किया, और वे इस मामले के मुतल्लक उन पर लगाए हुए इस दोष का विरोध करते हैं। सलाहकार ने समझाया कि अभियुक्तो के खिलाफ की गवाही ने खुद यह जाहिर कर दिया है कि अभियुक्तों के इस वाकयात से पहिले का व बाद का चाल चलन बलवाइयों का सा नहीं था। २४ ता० की शाम के साढ़े तीन तक उन्होंने अपनी पूरी ड्यूटी का पालन किया। उसी दिन सुबह के समय शहर जाने के लिए दो

मर्तबा लारियों में सवार होगए थे। सलाहकार ने जिरह करके यह जाहिर किया कि डेढ़ बजे दिन में सुबेदार जैसिंह का कुछ कसूर अदालत में साबित हुआ था और जिसके कारण उनकी तनख्वाह की बढ़ती ६ महीने के लिए रोक दी गई। यह औफिसर ऐसा था जो अभियुक्तों को पल्टन में अपने बड़े पद के महत्व की शेखी बताया करता था, व उनके जरिये कमान्डिङ्ग - आफिसर पर यह दबाव डलवाना चाहता था कि उनके मामले का फिर से विचार किया जाय। यह भी मुमकिन था कि उसने एक किस्म के आर्थिक विरोध करने का बीड़ा उठाया हो और अभियुक्तों से यह कहा हो कि मैं केवल अपने मामले ही को नहीं दुरुस्त करूंगा, वरन यह भी जोर दूंगा कि उन सब की तन - ख्वाह भी बढ़ाई जावे। उसने एक कागज पर उनके दस्तखत करवाये और उस कागज के ऊपर हवलदार चन्द्रसिंह से यह लिखवाया कि उन सब दस्तखत करने वालों का इस्तिफा २४ घण्टे के अन्दर ही मंजूर कर दिया जाय।

उसने (चन्द्रसिंह) इस कागज़ को एक दूसरे अभियुक्त के जरिये (जिनका नाम हवालदार नारायणसिंह था) कैप्टन चैपल के सामने पेश करवाया। सलाहकार ने उज्र किया कि कोई भी बलवाई ऐसी अर्जी नहीं देते। बलवा करने वाले तो जोशीले पुरुष होते हैं जो गवर्मेन्ट की परवाह नहीं करते—वे बलवा करते वक्त अपने उच्च पदाधिकारियों को इस प्रकार की अर्जी पेश करते हुये ऐसी प्रार्थना नहीं करते। सुबेदार जैसिंह उनके कम्पनीकमान्डर था, उन्होंने उसके ही हुक्म की तामिलीकी— उसका हुक्म था कि वे शहर में आवें और यदि उनसे पूछा

जाय कि वे क्यों ऐसा कर रहे हैं तो उनको चाहिए कि एकदम अपना इस्तीफा पेश करें। बस, वे अपने सुबेदार का ही कहना कर रहे थे। उन्होंने बलवा नहीं किया, तिस पर भी उनपर बागी होने का दोष लगाया गया है। उन पर अधिक से अधिक यही दोष लगाया जासकता है कि उन्होंने कहना नहीं माना; ऐसी हालत को 'गवर्मेन्ट के शब्दों" में (unsatisfactory) ठीक नहीं, कहते हैं। मिस्टर मुकन्दीलाल ने यह ज़ोर दिया कि (Mutiny) बलवा का अर्थ लाहौर हाईकोर्ट ने (पिन्डदास के केस में) यह लगाया है कि "बलवा एक दम बिलकुल खिलाफ होने को कहते हैं। मानो कि एक सिपाही जबरस्ती गवर्मेन्ट के खिलाफ लड़ रहा हो या कुछ सिपाही लोग अपने मिलिटरी के उच्च पदाधिकारियों के खिलाफ कदम उठा रहे हों।" इन गढ़वाली सिपाहियों के मामले से यह जाहिर है कि वे कभी मिलिटरी-औफिसरों के खिलाफ नहीं उठे, और न तो उन्होंने कुछ जबरदस्ती ही की। यदि, फिर भी ये कहना न मानने के वास्ते दोषी ठहराये जायें तो, ऐसी हालत में यदि उन्हें सज़ा मिले भी तो, बहुत कम मिलनी चाहिए। इस जिरह के लिए सलाहकार लाहौर हाईकोर्ट के कानून ए० डब्ल्यु० एम० १८९३ १८५ के मुताबिक चलता है जिसमें लिखा है "कि सब से अधिक सज़ा केवल सब से अधिक दोष के वास्ते ही मिलनी चाहिये, अन्यथा नहीं; और हर एक ग्रेड में ऊपर से नीचे तक यही कायदा काम में लाया जाय।,,

सलाहकार ने यह जोर दिया कि मुकदमे में जो साफ तरह पर सबूत हुआ है वह यही है, और जिस को अभियुक्त भी

इनकार नहीं करते, कि वे ४ बजे श्याम लारियों में चढ़ने के लिये नहीं गये। और अपराधों के विषय में जो कुछ गवाहों ने कहा कि 'लाइन' में और गढ़वाली अफसरों के क्लब में कुछ अभियुक्तों ने कुछ वाक्य या शब्द कहे उन शब्दों पर कोई एतबार नहीं किया जाता क्यों कि कोई दो गवाह इसमें एक मत के नहीं हैं कि वे असली शब्द क्या थे और किसने कहे। कप्तान ठक्कर और कप्तान टेलर के, जो घटना स्थल पर मौजूद नहीं थे, और श्याम को ५ बजे शहर से लौटे थे, सिवाय कोई भी गवाह तब स्वस्थचित्त नहीं था। उन बृटिश अफसरों को जो उस मौके पर मौजूद थे उस पल्टन की नाफर्मांबरदारी का हाल सुन कर, जो बड़ी फर्माबरदार और सुधरी हुई थी, जरूर बड़ा धक्का लगा होगा। उन्होंने यह समझा होगा कि उनके आदमियों के ऐसे बर्ताव से उन पर भी बात आती है। एक तीसरी और बात है जिस का असर उस वक्त उन की देखी और सुनी हुई बातों पर पड़ा होगा। यह मनुष्य—स्वभाव है कि वह अपने विरोधी के विरुद्ध की बातों को कुछ बढ़ा दिया देता है। इसलिये, अभियुक्तों के वकील मि० मुकन्दीलाल ने कहा कि गवाहों ने बहुत कुछ बातें ख्याल से ही निकाली हों और परेशानी, घबराहट और फिक्र के होने के सबब जो शब्द उन्होंने सुने और जो बर्ताव और ढंग उन्होंने अभियुक्तों का देखा उन को ठीक तरह पर न बता सके हों। इसी तरह पर अपने शोचनीय मूर्खतापूर्ण कार्य के भयंकर परिणाम को समझ कर और सूबेदार नरसिंह के धोखे में आने से अभियुक्त भी जरूर बहुत घबराये, दिल पर चोट खाये और चिन्तित हुये होंगे और उन्होंने यदि कोई ऐसे लक्षण दिखाये जो

इनमें पहिले कभी नहीं देखे गये थे या उनकी घबड़ाहट का कारण था। यह भी कहा जा सकता है कि उनकी मूर्खता के कारण उन के दिल पर जो धक्का लगा था उस से पागल हो गये थे। इसलिये, मि० मुकन्दीलाल ने कहा अदालत को इन शब्दों और इशारों के प्रभाव में नहीं आजाना चाहिए जो अभियुक्तों के कहे और किये हुये कहे गये हैं। अङ्गरेज अफसरों के सिवाय और गवाह स्वतन्त्र नहीं हैं। वे या तो अपने व्यवहार की स्वयं माफी मांग रहे हैं या सूबेदार जयसिंह को, जिसकी जुम्मेवरी साबित हो चुकी है, बचाने के लिये कोशिश कर रहे है।

अभियुक्तों ने अपने हथियारों को गुदाम में जमा करने के लिये जाते हुये जो अनइच्छा और मालिन्यता दिखाई वह उन सैनिकों के लिये बिलकुल स्वाभाविक थी जो एक जाल में फंस गये थे और जिन्हें अपने हथियारों को जिन पर उनका मान और अभिमान था रखने के लिये कहा गया था। एक सिपाही के लिये उसके हथियार छिन जाने से और अधिक दुख कुछ नहीं हो सकता—उन से अपने जनाजे के साथ चलने और अपनी अर्थी उठाने के लिये कहा गया था। इसलिये यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्होंने उस आज्ञा के पालन में उदासीनता दिखाई हो। लेकिन कप्तान टेलर ने यह कबूल किया है कि उन्होंने आज्ञा पालन से इनकार नहीं किया।

मि० मुकन्दीलाल, अभियुक्तों के सलाहकार, जक हा कि अदालत अभियुक्तों के उस नाममात्र के आज्ञाभङ्ग के दोष पर

उनके पिछले और हाल के २४ ता० की घटना के व्यवहार पर दृष्टि रख कर और यह ध्यान में रखकर कि जिस रायल गढ़वाल पल्टन की पिछले महायुद्ध की वीरता की गाथायें, आदर्श सहनशीलता और पराक्रम स्मर्णीय है. उसके इतिहास में यह आज्ञा न मानने की घटना पहिली घटना है।